रंग बिरंगे डायमंड कामिक्स में

हंसा हंसा कर लोटपोट कर देने वाला कार्टूनिस्ट प्राण का जीवन्त चरित्र चाचा चौधरी का दिमाग कम्प्यूटर से भी तेज चलता है और बलशाली साबू जूपिटर का प्राणी है। चाचा चौधरी का दिमाग और साबू की शक्ति हमेशा दूसरों की भलाई के लिये ही प्रयोग की जाती है। उनके कारनामें मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी हैं।

चाचा चौधरी और साबू का नया कारनामा

प्राण
चाचा चौधरी और साबू काले टापू में

3-50

3-50
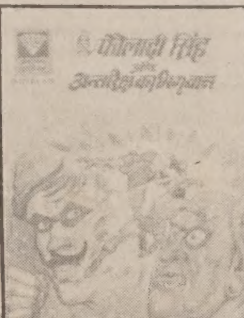
मोटू पतलू पागलखाने में

3-50

बच्चों की निराली अनूठी मनभावन पत्रिका अंकुर का नया अंक

अंकुर और सोने का कमल

3-00
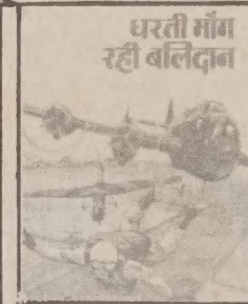
डायमंड कामिक्स की गौरवशाली परम्परा में एक नई सीरीज युद्ध चित्र कथा की नई कड़ी

धरती माँग रही बलिदान

3-50

अंकुर बाल बुक क्लब

डायमंड कामिक्स की बच्चों के लिये नई निराली अनुपम योजना

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनिये और हर माह घर बैठे, डायमण्ड कामिक्स, अंकुर व डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स डाक व्यय फ्री की सुविधा के साथ घर बैठे प्राप्त करें।

डायमण्ड कामिक्स व अंकुर आज हर बच्चे की पहली पसन्द है। रंग बिरंगे चित्रों से भरपूर डायमण्ड कामिक्स व अंकुर हर बच्चा घर बैठे प्राप्त करना चाहता है इस इच्छा के सैकड़ों पत्र हमें प्रति दिन प्राप्त होते हैं। नन्हे मुन्नों की मांग को ध्यान में रखकर हमने यह उपयोगी योजना शुरु करने का कार्यक्रम बनाया है। आपसे अनुरोध है इस योजना के स्वयं सदस्य बनें और अपने मित्रों को भी बनने की प्रेरणा दें :—

सदस्य बनने के लिये आपको क्या करना होगा :—

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर हमें भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क दो रुपये मनीआरडर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें।

सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमण्ड कामिक्स व डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स की सूची में से कोई भी पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।

सदस्यता कूपन

मुझे 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क दो रुपये मनीआर्डर डाक टिकट से साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी० पी० छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम____________________

पिता का नाम____________________

पता____________________

डाकखाना____________________

जिला____________________

अंग्रेजी बोलचाल सिखाने वाली औरों से बिलकुल भिन्न प्रभावी पद्धति पर आधारित जो आपको **कुछ प्रभावी शब्द** और वाक्य नहीं रटाता बल्कि अंग्रेजी भाषा की गहरायी तक पहुँचकर आपको भाषा पर पूरा अधिकार करने की विशिष्ट क्षमता प्रदान करता है।

डायमंड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

मूल्य : 21 रु. 5 रु. डाकव्यय अलग

5/- मनीआर्डर से एडवांस भेजने पर डाक व्यय फ्री। यह उपहार केवल 31 मई तक उपलब्ध है।

अपने निकट के बुक स्टाल से खरीदें या हमें लिखें

डायमंड कामिक्स प्रा. लि.

2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

सेनापति खड़गसिंह बड़े अफसोस की बात है कि बागी भड़कसिंह अब तक नहीं पकड़ा गया
महाराज क्या बतायें वह कई बार हमारे सिपाहियों के हाथ आते-आते रह गया। आखिरी मौके पर हाथ से मछली की तरह फिसल जाता है।
उसे इतने हथियार कौन सप्लाई कर रहा है? किसी विदेशी शक्ति का हाथ तो नहीं है?
महाराज हमारे सेना के जासूसों ने बड़ी अजीब खबर दी है—उसके पीछे कालीदेवी का हाथ है। वह काली का भक्त है। वही उसे ऐन मौके पर बचाती है।
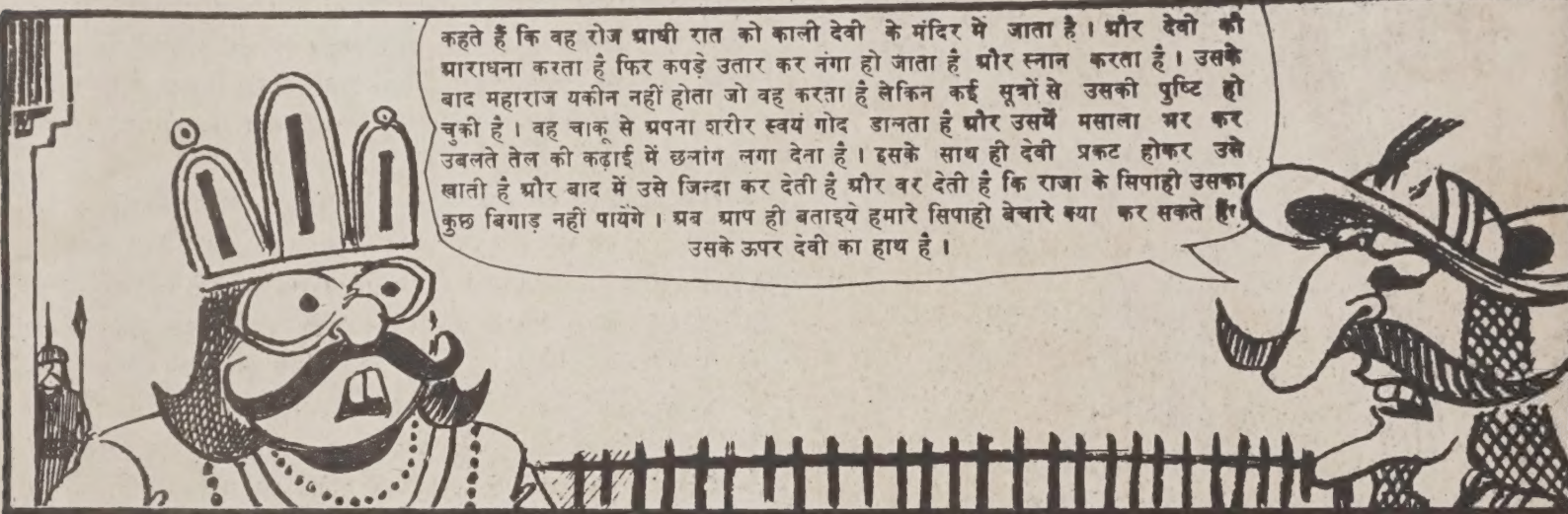
कहते हैं कि वह रोज आधी रात को काली देवी के मंदिर में जाता है। और देवी की आराधना करता है फिर कपड़े उतार कर नंगा हो जाता है और स्नान करता है। उसके बाद महाराज यकीन नहीं होता जो वह करता है लेकिन कई सूत्रों से उसकी पुष्टि हो चुकी है। वह चाकू से अपना शरीर स्वयं गोद डालता है और उसमें मसाला भर कर उबलते तेल की कढ़ाई में छलांग लगा देता है। इसके साथ ही देवी प्रकट होकर उसे खाती है और बाद में उसे जिन्दा कर देती है और वर देती है कि राजा के सिपाही उसका कुछ बिगाड़ नहीं पायेंगे। अब आप ही बताइये हमारे सिपाही बेचारे क्या कर सकते हैं। उसके ऊपर देवी का हाथ है।

लेकिन देवी के वर को काटने का भी कोई न कोई उपाय तो होगा ही। दुनिया में असंभव नाम की कोई चीज नहीं है। इस समस्या का उपाय शायद हमारे राज्य का शाही डालडा चाणक्य ही खोज सकता है। यही उसकी परीक्षा की घड़ी है।
डालडा चाणक्य राजा तुझे बुला रहा है। जल्दी खड़ा होजा।
अब राजा के पेट में पता नहीं कौन सा दर्द उठा है। क्लर्क 'बी' ग्रेड की तनख्वाह देता है और चाहता है कि राज नीतिक दावपेच में अरस्तू को भी मात दे दूं।

अब सारी समस्या मैंने तुमको बता दी। इसका कोई हल तुम्हारी समझ में आता है?
महाराज सीधी सी बात है। काली देवी को यही पता नहीं है कि मसालेदार खाना नहीं खाना चहिए। पेट खराब हो जाता है। डाक्टर लोग कहते मर गए कि तली हुई चीजें और मसालेदार खाना जहर है, इससे बचो। कुछ ही दिनों में काली देवी का ब्लड कोलेस्टराल बढ़ जाएगा और दिल के दौरे से मर जाएगी। समस्या खुद ही हल हो गई
कई बार मुझे लगता है यह मुफ्त की तनख्वाह खा रहा है।

आपका भविष्य

पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं. हंसराज शर्मा

मेष : सप्ताह शुभाशुभ मिश्रित फलों से युक्त है, शत्रु हार मानेंगे लेकिन दुष्टजनों से बचें, स्त्री परामर्श से उलझनें दूर होंगी और श्रेष्ठ फलों का संचार होने लगेगा, शरीर नरम चलेगा।

वृष : राजपक्ष से सम्बन्धित कार्यों में सुधार व प्रगति, आर्थिक लाभ सामान्य, किसी प्रतियो-, गिता में भाग ले रहे हैं तो सफलता पायेंगे, सप्ताह पहले से कुछ अच्छा है।
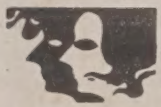
मिथुन : वातावरण में अनुकूलता का प्रसार होने लगेगा, रचनात्मक कार्यों में रुचि व सफलता के साथ-साथ लाभ प्राप्ति भी होगी, स्त्री पक्ष के सहयोग से भाग्योदय होगा।

कर्क : धन लाभ होता रहेगा किन्तु खर्चा भी काफी होगा, सुख साधनों में वृद्धि, सप्ताह पहले से अच्छा कह सकते हैं मगर संघर्ष उसी तरह जारी रहेंगे स्वास्थ्य में कमजोरी।

सिंह : शुभ कार्यों में रुचि और धन का व्यय भी करेंगे, संघर्ष और परेशानियों में कुछ कमी आयेगी परिश्रम व प्रयत्न से कार्यों में सफलता मिलेगी, शरीर नरम चलेगा।

कन्या : पारिवारिक स्तर पर कुछ नई या पुरानी उलझनों की वजह से मन में उच्चाटता रहेगी, अन्य हालात प्रायः ठीक ही चलेंगे, राज-काज एवं सामाजिक कामों में सफलता।

तुला : सप्ताह कुछ संघर्षमय सा महसूस होगा, जिसका भी भला करोगे वह भी बुरा ही मानेगा, अकारण क्रोध या शत्रुता से परेशानी, आर्थिक लिहाज से सप्ताह लाभ प्रद रहेगा।
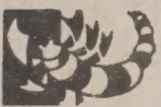
वृश्चिक : उच्चाधिकारियों से सम्पर्क में वृद्धि, परन्तु कानूनी विवाद या कार्यों में सतर्कता की आवश्यकता है, उद्योग धन्धों में मेहनत और लगन से रहें, लाभ मिलेगा।

धनु : वैर-विरोध या शारीरिक पीड़ा से स्वभाव में तेजी आएगी और मन में उदासी का प्रभाव रहेगा, दुष्ट प्रवृति के लोगों से बचें, स्वजनों से सहयोग व साहस वृद्धि मिलेगी।
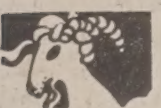
मकर : भाग्योन्नति में बाधायें होंगी लेकिन स्त्री पक्ष के सहयोग व श्रेष्ठजनों के परामर्श से वातावरण में अनुकूलता का प्रसार संभावित है।

कुम्भ : सावधानी और स्वजनों के परामर्श से कार्यों में सफलता पायेंगे, कभी-कभी आलस्य या सेहत की खराबी के कारण कामों में देरी या रुकावट, अकारण गुस्सा।
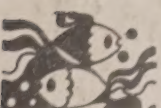
मीन : राजपक्ष या कानून आदि से सम्बन्धित कामों में सचेत होकर आगे बढ़ें, कोई आकस्मिक घटना परेशान कर जाएगी, फिर भी अभीष्ट सिद्धि के साधन मिलेंगे।

आपके पत्र

दीवाना का होली अंक प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ पर गुलाल का पैकेट देखा तो तबियत प्रसन्न हो गई। इतना अच्छा अंक निकालने के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएं। इस पत्रिका के साथ मेरी शुभकामनाएं सदा रहेंगी भले ही इसे हर दिन व्यक्त ना कर पाऊं।

'होली अंक में 'मोटू-पतलू' व 'सिलबिल-पिलपिल' पसन्द आये। 'अनाड़ी भूत' का दूसरा भाग हास्यप्रद लगा। शेष सभी स्तम्भ भी रोचक थे।

राहुल गोदिका—तिलक नगर, जयपुर

दीवाना अंक 6 'होली विशेषांक' पिछले सभी अंकों से बेहतरीन था। चिल्ली का मुखपृष्ठ काबिल-ए-तारीफ था। इस अंक के साथ जो आपने गुलाल का पैकेट मुफ्त दिया है उसके लिए शुक्रिया। आज तक पत्रिका के साथ इस तरह कोई वस्तु किसी भी पत्रिका ने नहीं दी। सुन्दर उपहार के लिए धन्यवाद।

चिल्ली का प्रेम-पत्र राजनारायण के नाम बहुत बढ़िया लगा। गोविन्द नारायण मिश्र की व्यंग चेतावनी कहानी 'सावधान खतरा है।' बहुत ही बेहतरीन लगी। जब से सुना है पत्रिका रंगीन होने जा रही है तभी से दिल भी रंगीन हो गया है? शेष स्थाई स्तम्भ सभी अच्छे लगे। अगले रंगीन अंक के इन्तजार में......।

गुरमीत चुग 'मीता'—नई दिल्ली

दीवाना अंक 6 समय पर प्राप्त हो गया, साथ में गुलाल का पैकेट भी मिला। होली के रंगों में रंगा यह अंक चटपट पढ़ गया। मोटू-पतलू और सिलबिल-पिलपिल ने खूब हंसाया। बेचारे मोटू-पतलू बात-बात पर उनकी पिटाई होती रहती है। मदहोश, लल्लू पढ़कर मजा आ गया। राजा जी बेचारे बेकार में बदनाम हो गए। 'काका के कारतूस' और 'गरीब चन्द की डाक' निराले थे लेकिन अपने प्रश्न का उत्तर न पाकर और 'दीवाना फ्रेंडस क्लब' की अनुपस्थिति से निराशा हुई। इस स्तम्भ को नियमित दिया करें।

दिनेश कुमार चिटकारा, 'शौकीन'—फरीदाबाद

दीवाना का नया अंक 6 प्राप्त हुआ। 'अनाड़ी भूत' कहानी बहुत रोचक लगी। 'काका के कारतूस', 'मोटू-पतलू', 'गरीब चन्द की डाक' तथा अन्य सभी स्तम्भ रोचक लगे। मगर 'क्यों और कैसे' पढ़कर कुछ ज्ञान की बात मालुम हुई और हमारी तरफ से आपको और दीवाना पढ़ने वाले हर एक पाठक को होली की बहुत-बहुत मुबारक हो।

आशु चुघ अश्वनी—फिरोजपुर, अजिन्द्र सिंह चुघ—शाहदरा

चांद से रात शोभा पाती है, रात से चांद शोभा पाता है और चांद एवं रात दोनों से आकाश शोभित होता है। उसी प्रकार दीवाना से पाठक शोभा पाता है और पाठक से दीवाना शोभा पाता है। पाठक और दीवाना से सारा समाज शोभित होता है। इसका हर अंक एक पर एक होता है। किसी को खराब और अच्छा कहना एक प्रकार की मूर्खता है।

श्री बसंत कुमार आर्य—बिहार

'दीवाना' का मैं ऐसा दीवाना हूं कि बस बता नहीं सकता। जब तक अगला अंक नहीं मिलता बुखार नहीं उतरता होली अंक तो बता नहीं सकता कि यह अंक कितना अच्छा रहा। 'प्रेम-पत्र' बड़ा ही पसंद आया। काका की पिस्तौल का कारतूस मुझे ऐसा लगता है कि घायल हुए बिना नहीं रहता।

'दिमाग चाटने वाले'—इब्राहीम जलीस की कहानी पूरे परिवार ने पसंद की। क्यों और कैसे और 'घोर तपस्या' भी पसंद आई। उम्मीद है 'दीवाना' मुझे दीवाना करता रहेगा।

आरिफ जमाल अन्सारी—नई दिल्ली-30

लल्लू

अपने ठीक सामने वाले फ्लैट में नये लोग आए हैं, उनके घर में एक लड़की भी है। लगता है वह पाप म्यूजिक की दीवानी है। दिन रात चौबीस घंटे पॉप म्यूजिक बजता रहता है। डिस्को म्यूजिक की शौकीन है।
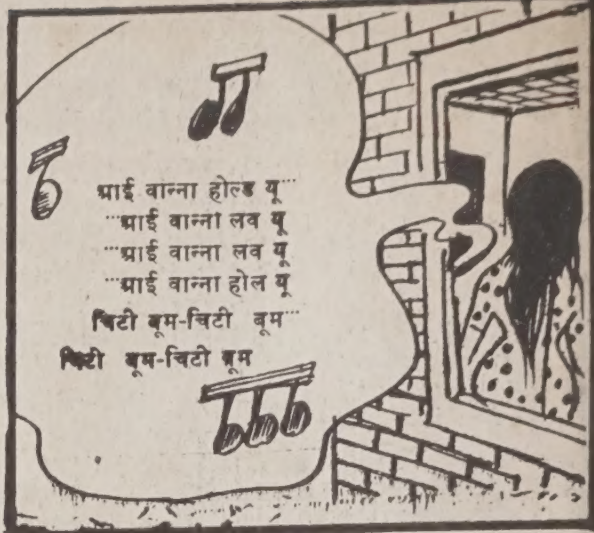
आई वान्ना होल्ड यू...
...आई वान्ना लव यू
...आई वान्ना लव यू
...आई वान्ना होल यू
चिटी बूम-चिटी बूम...
चिटी बूम-चिटी बूम

प्यारे लल्लू अब यह तो पता लग ही गया कि इसकी कमजोरी पॉप म्यूजिक है इसके दिमाग के मीटर बैंड का पता लग गया।
अब क्या तरकीब लड़ाई जाये कि इसके दिमाग के इस मीटर बैंड पर लल्लू के दिल के रेडियो स्टेशन के प्रोग्राम बजने लग जायें?

मैं भी पॉप म्यूजिक के रिकार्ड ले आऊं और जोर-जोर से बजाना शुरू कर दूं? उससे इसको यह पता लगेगा कि सामने भी पॉप म्यूजिक का आशिक रहता है। वह जरूर मेरी खिड़की की तरफ देखेगी। हो सकता है मेरी और उसकी आंखें चार हो जायें।

पॉप म्यूजिक वाले तो चारों तरफ कई हैं। आजकल हर कोई डिस्को म्यूजिक बजाता रहना है। अगर ऐसी बात होती तो वह अब तक किसी न किसी की ओर आकर्षित हो गयी होती।
मेरे दिमाग में उससे भी बढ़िया आइडिया आया। मैं जाकर इलैक्ट्रिक गिटार ले आया और बोंगो ड्रम भी ले आया। जब वह देखेगी कि यह तो खुद पॉप म्यूजिक की रचना करता है खुद बजाता है तो यकीनन मुझ पर मर मिटेगा—पहले कुछ दिन दरवाजे खिड़कियां बन्द कर इन्हें बजाने की प्रैक्टिस करनी चाहिए, फिर एक दिन अचानक लल्लू के ड्रमों की आवाज उसके दिल के दरवाजे खोल देगी।
नौ सौ रुपए खर्च हुए

अफ्रीकन बीट पर बोंगो बजाना तो आ ही गया है मुझे, आज देखें उसे सुना कर।
BOOM
BOO
BO
अबे लल्लू क्यों पड़ोसियों से झगड़ा करवाता है? सामने के फ्लैट वाले बहुत ऐतराज कर रहे हैं।
लेकिन वहां तो दिन रात पॉप म्यूजिक बजता रहता था।
अरे वह तो परसों ही चले गए, एक महीने के डेपूटेशन पर आये थे। अब जो आये हैं वह शास्त्रीय संगीत के अलावा और कुछ पसन्द नहीं करते।
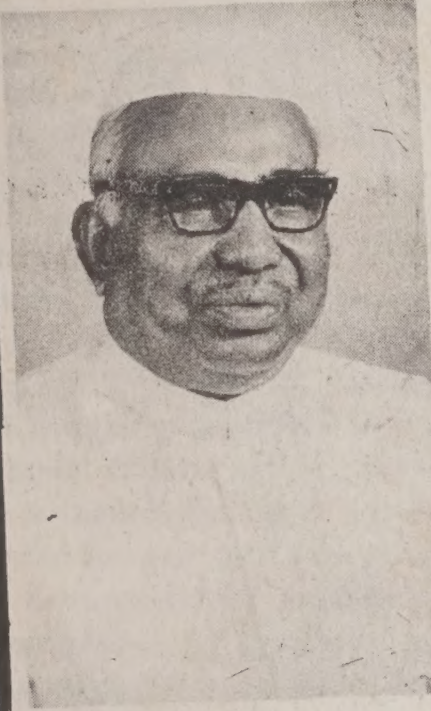
आप वास्तव में जगजीवनराम हैं। आपने इस जग में अपना जीवन खूब गुजारा है। जवानी से बुढ़ापे तक मंत्री पद के मखमली गद्दे पर विराजमान रहे हैं। लेकिन अगर मैं यह कहूं कि आपने जिस थाली में खाया उसी में छेद किया, तो बुरा न मानिए।

१९७७ में यह देखकर कि मंत्रीपद की कुर्सी आपके नीचे से खिसकने वाली है, आपने एक छलांग जो लगाई तो जनता पार्टी के आंगन में जा गिरे। वक्ती फायदे के लिए आपसे अन्दाजे की गलती हो गयी। इस गलती ने आपको कहीं का न छोड़ा। कई कलाबाजियां खायीं आपने। कभी इस पार्टी में गये कभी उस पार्टी में। मंत्रीपद की गद्दी हाथ से निकल जाने के बाद आप ''सींख का कबाब'' बन गये। आपकी हालत पर यह शेर याद आता है शायद आपने सुन रखा होगा, नहीं सुना तो अब सुन लीजिए।

'कबाबे सीख हैं, हम करवटें हरसू बदलते हैं
जो जल उठता है ये पहलू, तो वो पहलू बदलते हैं।''

आपकी हालात रहम के काबिल है। आप एक से दूसरी, दूसरी से तीसरी, और तीसरी से चौथी पार्टी में गये। लेकिन दुर्भाग्य से आपको कहीं कुर्सी न मिल सकी। थक हार कर आपने अपनी नयी राजनैतिक हट्टी खोली। मगर राजनैतिक कारोबार में आपकी ब्लैकमेल की वजह से लोगों को आप पर विश्वास नहीं रहा।

अब आपने चौधरी चरण सिह से याराना गांठा है, यह चौधरी वही भद्र पुरुष हैं, जो जनता सरकार टूटने के बाद आपसे धोखा करके प्रधानमंत्री बन गये थे। इससे पहले जनता राज में अपने आपको नम्बर दो और आपको नम्बर तीन बना दिया। अजमाये हुए को अजमाना मूर्खता होती है, लेकिन आप उन्हें फिर आजमा कर अपने राजनैतिक दरिद्रता का सबूत दे रहे हैं। आप यह भूल रहे हैं कि आप भी शून्य हैं और चौधरी साहब भी शून्य हैं, और जानते हैं कि दो शून्य मिलकर शून्य ही रहते हैं। बुरा न मानिए आपकी हालत पर यह शेर रह-रह कर याद आता है।

इसी खातिर तो कत्ले आशका से मना करते थे। अकेले फिर रहे हो, यूसफे बेकारवां होकर।''

आपका
चिल्ली

दीवाना

अंक : 8 वर्ष : 19
16-30 अप्रैल 1983

सम्पादक
विश्वबन्धु गुप्ता
सह सम्पादिका
मंजुल गुप्ता

कला निदेशक
सतीश गुप्ता
कलाकार
नेगी, कुलदीप मथारू, उत्तरा भालेराव
जनरल मैनेजर
रमेश गुप्ता
डिप्टी जनरल मैनेजर
वाई. ए. शेट्टी
मार्केटिंग मैनेजर
एम. आर. एस. मनी
प्रोडक्शन मैनेजर
विनोद अग्रवाल

विज्ञापन मैनेजर
जयप्रकाश गुप्ता
प्रकाशक
पन्नालाल जैन
मुद्रक
तेज प्रैस, नई दिल्ली
पता
दीवाना, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
फोन
२७३७३७, २७३६१७, २७३६०७

मुख पृष्ठ पर

कलाकार की कल्पना
तब हो जाये साकार
सपनों की वो सुन्दरी
तूलिका निकाले बाहर
तूलिका निकाले बाहर।
फिर जहां भी जाओ
डालो कमर में हाथ
घूमो, फिरो, मत शर्माओ।

वार्षिक चन्दा : ५० रुपये
अर्द्ध वार्षिक : २६ रुपये
एक प्रति : २५० रुपये

हास्य-व्यंग्य

नया सुझाव स्थाई सरकार के लिए!

पूरन सरमा

कोई बुराई नहीं है यदि कोई विधायक मुख्यमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा रखता है अथवा कोई सांसद मंत्री-मण्डल में शामिल होने के सपने देखता है. प्रारंभ से ही हमें समझाया और बताया जाता है कि वक्त बहुत कम है कर लो जो भी करना है? बेचारे सांसद अथवा विधायक की तो उम्र ही कितनी सी होती है. मध्यावधि चुनाव नहीं हुये तो वह पांच साल तक ही वह चोला रख पाता है. उस पांच साल में ही उसके सामने जिन्दगी के सम्पूर्ण लक्ष्य होते हैं अपना कैरियर होता है जिसे बनाना है, अन्यथा बाद में खाओ धक्के।जनता चुनाव में दुबोरा उनको चुन लेगी, अब यह मामला काफी संदिग्ध हो गया है।इसी दृष्टि से राजनेता ने अपना सोच भी समयानुसार बदल लिया है. तत्काल नये कायाकल्प के साथ नयी टोपी लगाकर,दल-बदलकर नये वेश में जनता जनार्दन की सेना में आता है और जय जयकार का वरणकर, फिर हो जाता है सत्ता की लड़ाई में मशगूल.

आजकल सत्तारुढ़ दल में रहकर अपने दल की सरकार का विरोध करना भी कैरियर बनाने के सूत्रों में आ गया है. यानि असंतुष्ट रहना फैशन हो गया है. मुख्यमंत्री से पूछो कि आपके दल में असंतुष्ट क्यों हैं और कितने हैं तो उसका उत्तर बड़ा बेतकल्लुफ होता है कि पद नहीं मिला इसलिए नाराज हैं और संख्या है इनकी कुल १०-२०, उसके ऊपर स्थिति यह है कि आलाकमान उसे दूसरे ही दिन पद छोड़ने की बात कहता है और नयी मूर्ती स्थापित कर दी जाती है. असंतुष्टों में परस्पर खींच तान और जोड़-तोड़ की राजनीति चलती है और इस प्रकार एक नयी सरकार की स्थापना हो जाती है.यह एक चक्र हो गया है.मेरा इसमें सुझाव यह है कि सत्ता के प्रति सांसदों एवं विधायकों की बढ़ती जिज्ञासा और ललक को देख कर सरकार का गठन कुछ नये तरीके से ही करना चाहिए. यह व्यवस्था पूर्ण लोकतांत्रिक भी होगी तथा समाजवादी लक्ष्यों की पूर्ति करने वाली भी. इसके लिए यदि केन्द्र तथा राज्यों में मेरे द्वारा नीचे सुझाई जाने वाली सरकार का गठन हो तो आये दिन होने वाले झगड़े फसादों से बचा जा सकता है और देश को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को एक नयी दिशा दी जा सकती है.

मानलिया एक विधान सभा में कुल २०० सदस्य हैं.सत्तारुढ़ दल के सदस्य १५० हैं तथा विरोधियों की संख्या ५० है. हमारे सामने पूरे पांच वर्ष हैं. एक मुख्यमंत्री आमतौर पर अपने मंत्री मण्डल के सदस्यों की संख्या लगभग ३० रखता है, तो प्रथम सरकार जो बने वह केवल एक साल के लिए बने, फिर दूसरे साल उसी दल के अन्य ३० सदस्यों को अवसर दिया जाये, इस तरह पूरे पांच वर्ष में सत्तारुढ़ दल के पूरे १५० सदस्यों को सत्ता का सुख भोगने का पूरा मौका मिलेगा तथा असंतोष की बीमारी से बच लिया गया वह अलग.इसके साथ यह भी किया जा सकता है कि

मंत्री मण्डल के सदस्यों को नम्बर एलॉट किये जाएं. मुख्यमंत्री नं. एक मुख्यमंत्री नं. दो, मुख्यमंत्री नं. ग्याहरह या मुख्यमंत्री नं. तीस. इससे सबके 'ईगो' शांत होंगे. विभागों के अनुसार पोर्ट फोलियो न देकर मुख्यमंत्री नम्बर से नये मंत्रियों को क्रमांक दिये जाने चाहिएं. इससे लोगों के मन में मुख्यमंत्री उखाड़ने के रोज-रोज जो प्लान आते हैं कि आज भोंसले हटाओ, आज माथुर हटाओ, आज जगन्नाथ मिश्र हटाओ या आज सोलंकी हटाओ से भी पूर्णतः निजात मिल जायेगी क्योंकि एक साल बाद सबको हटना है. नये लोगों को सत्ता का चाव जगा रहेगा वे इसलिए कोई हरकत नहीं करेंगे कि आगे उनकी भी सरकार बनेगी, यदि उन्हेंने गड़बड़ की तो पदच्युत ग्रुप हमारे सत्तारुढ़ होने पर धींगामशती करेगा. इसलिए यह व्यावहारिक नुस्खा वर्तमान में सत्ता के प्रति लोगों के बढ़ते झुकाव को देखते हुए अपनाया जाये तो सरकारें काम कर सकती हैं और लोग कमाकर खा सकते हैं.

इसमें एक व्यावहारिक दिक्कत यह आ सकती है कि लोग यह कहने लगेंगे कि पहले सरकार हमारी बने इसी को लेकर बखेड़ा हो सकता है इसके लिए उपाय यह है कि १५० सदस्यों की चुनाव के तत्काल बाद सीनियरेटी लिस्ट घोषित कर दी जावे यह वरीयता सूची सदस्यों की जन्म तिथि से बनाई जावे जिससे अन्य कोई पेचीदगी नहीं हो यदि इसमें मैरिट को शामिल कर लिया गया तो गड़बड़ फिर हो सकती है. कोई कहेगा कि साहब मैंने फलां मुख्यमंत्री को गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी इसलिए मैं मैरिट में ज्यादा हूं इसलिए मेरा नाम ऊपर होना चाहिए इसलिए वरीयता सूची में मैरिट का लफ्ज़ रखा जाना ही नहीं चाहिए. उम्र के हिसाब से बनी सूची सबको मान्य हो और क्रमानुसार सत्ता की पंजीरी फांकने का समानता से सबको मौका प्रदान किया जाए

एक और लाभदायी सुझाव यह भी है कि सरकारों को निश्चित सूत्र देकर नहीं बांधना चाहिए. सारे मंत्रियों यानि तीसों मुख्यमंत्रियों को यह छूट होनी चाहिए कि वे अपने-अपने सूत्रों के हिसाब से काम करें अपना सूत्र खुद बनाओ और कमाओ इससे मुख्यमंत्रियों को कई अड़चनों से बचने में सुविधा होगी और सरकारें निर्विघ्न चलती रहेंगी यहां एक बात आप उपस्थित कर सकते हैं कि फिर जनसेवा का क्या होगा? तो भाई क्या ये १५० सदस्य जनप्रतिनिधि नहीं है, ये भी जनता में से ही हैं और फिर जनता की सेवा फिलहाल क्या हो रही है. मंहगाई बढ़ रही है, मनमानी हो रही है,टैक्स लग रहे हैं—तो फिर यह बात तब कोई मायने नहीं रखती. फिर जनसेवा अब कोई इतना महत्वपूर्ण सवाल नहीं है जिस पर इतनी गंभीरता से विचार विमर्श हो. गंभीरता तो सरकार के गठन में और उसके लाभों में निहित होनी है, उसमें १५० सदस्य कहीं भी नहीं चूकने वाले हैं. उससे जनता को यह तो लाभ है ही कि उसे एक स्थाई सरकार तो मिली.सरकार चाहिए ताकि हम अनाथ नहीं कहलाएं, काला, कलूटा ,काना, अंधा, लूला, लंगड़ा कैसा भी वर मिले भारतीय कन्या के लिए परमेश्वर होता है इसलिए सरकार कैसी भी हो, हमारी है, इसलिए नयी सरकार उक्त बताये अनुसार गठित हो तो समस्याओं का समाधान काफी हद तक हो सकता है.

●

लिहाज

—आजाद रामपुरी

'सा'ब चाय पियेंगे ?'

'अरे नहीं'

आफिस की कैंटीन में फटे हाल चपरासी चाय पीते समय अपने अफसर को सामने देखता तो बरबस ही वह उन्हें चाय पिलाने का 'आफर' दे देता और अफसर मनाही के मूड में अपना सिर हिला देता।

यह क्रम कई दिनों तक चलता रहा। बेचारा चपरासी इस आशा से कि कहीं उसका अफसर उसे चाय पिलाने के लिए कह दे किन्तु अफसर न जाने किस पत्थर जैसे दिल को लिए बैठा था कि उसने पिघल कर कभी भी अपने चपरासी से स्वयं को और उसको चाय लाने का शिष्टाचार प्रदर्शित नहीं किया। जब चपरासी को पक्का विश्वास हो गया कि अफसर न तो उसे चाय पिलायेगा और न ही उससे चाय पिएगा तो वह निरंतर ही जब अफसर को देखता चाय पीने की पूछ बैठता। एक दिन उसने पुनः पूछा—

'सा'ब चाय पियोगे ?'

'हाँ ले आओ ?'

अफसर ने मन्द स्वरों में अपनी स्वीकृति दी। बेचारे नंगी जेब वाले चपरासी का मुंह खिसियानी बिल्ली सा निकल आया। एक दूसरे चपरासी से पैसे उधार लेकर वह अफसर को चाय ले आया।

दूसरे दिन अफसर ने पाया कि चपरासी ने उससे चाय पीने की बात पूछना बन्द कर दिया है।

यह सच है

सबसे लम्बी जेल की सजा—

सबसे लम्बी एक बार हुई जेल की सजायें थीं 7,109 वर्ष की, जो एक गुप्त धोखेबाज को दी गई थी, यह सजा ईरान के एक कोर्ट द्वारा 15 जून 1964 में तेहरान में सुनाई गई थी। सजा की अवधि धोखे में फंसी हुई रकम के बराबर दी जाती है।

स्पेन में 11 मार्च 1972 को पलमा डी मलोरिया में 22 वर्षीय गेबरेल मार्क ग्रान्डोस को 3,84,912 वर्ष की सजा देने की दरख्वास्त की गई थी क्योंकि उसने लोगों के 42,764 पत्र पहुंचाए नहीं थे।

एक मेक्सीकन अमरीकन को 25 आजीवन कारावास की सजा दी गई थी क्योंकि जुआन कोरोना ने 25 माइग्रेंट वर्कस को काम पर रखा और बाद में उन सबकी हत्या कर दी थी। जुआन ने इनकी हत्या कर सबको 1970-71 में फादर रिवर के करीब दफना दिया था। यह स्थान यूला सिटी केलिफोर्निया स्टेट में है।

जोनसन वान डाईक ग्रिस्वी, जिसने 66 वर्ष और 127 दिन की सजा दूसरी डिग्री की हत्या के अपराध में काटी थी। हत्या 5 अगस्त 1908 को की गई थी। अपनी सजा पूरी कर जोनसन 9 दिसम्बर 1914 को भारत स्टेट प्रिसन से 90 वर्ष की आयु पर रिहा हुआ था उसका कहना था कि आधुनिक कैदी बहुत बुरी भाषा का प्रयोग करते हैं।

मोटी पोथी पढ़िए और लाइफ बनाइये

मोटी-मोटी पोथी पढ़ने से केवल ज्ञान की ही वृद्धि नहीं होती ग्रौर कई लाभ होते हैं। इतने लाभ कि लाइफ बन सकती है।

मोटी पोथी पढ़ने वाले को पैकेट उठाने का ग्रभ्यास हो जाता है। शादी के बाद बीवी की शॉपिंग के पैकेट उठाने में कोई दिक्कत नहीं होती।

पोथी काफी मोटी हो तो कहीं भी उससे कुर्सी या पटरे का काम लिया जा सकता है। ग्रौर दूसरे खड़े लोगों के दिल में ईर्ष्या की ग्राग भड़काई जा सकती है।

पोथी पढ़ते-पढ़ते थक गये तो पोथी को सिरहाने की जगह रख कर मीठी नींद की झपकी ली जा सकती है ग्रौर सपने में पोथी में पढ़ी बातों की जुगाली की जा सकती है।

ग्राप पढ़ते-पढ़ते सो गए ग्रौर हाथ से किताब छूट भी गई तो भी उसके मुड़ने-तुड़ने का डर नहीं रहेगा। उल्टे चद्दर या कम्बल पर पेपरवेट का काम करेगा।

मोटी पोथी में से बच्चा एक ग्राध पन्ना फाड़ भी ले तो भी जिससे ग्रापने पोथी उधार ले रखी है उसे जल्दी पता नहीं लगेगा।

मोटी किताब सुरक्षा का साधन भी बन सकती है ।

दीवार ऊंची है और दूसरी ओर कोई हसीना रहती है और आप आंखें सेंकना चाहते हैं तो मोटी पोथियां आपके लिए सफलता की सीढ़ी बन सकती हैं ।

मोटी पोथी के अन्दर आप गीले या मुड़े-तुड़े नोट प्रेस होकर दोबारा करारे होने के लिए रख सकते हैं ।

मोटी किताब जोर से बन्द करने पर पटाका चलने की सी आवाज करती है । पड़ौसी सोचेंगे कि आप पिस्तौल चलाने का अभ्यास करते हैं और कोई आपसे झगड़ा मोल लेने की जुर्रत नहीं करेगा ।

मोटी पोथी सिर पर रख कर चलने से मॉडलिंग का अंदाज आ जाता है । चाल में शालीनता आयेगी और आपके लिए मॉडलिंग के अवसर खुल सकते हैं ।

—धूप या वर्षा से बचाव के लिये मोटी पोथी का बखूबी उपयोग हो सकता है ।

कर-मंत्री

मूल : कन्हैयालाल कपूर

उस दिन जब मुझे कर-मंत्री का खत मिला तो मैं बहुत हैरान हुआ। कर-मंत्री से मेरा कोई परिचय तक न था और मुझे सपने में भी ख्याल न था कि वह मुझे न केवल खत लिखेगा, बल्कि अपने यहां चाय पर आमंत्रित भी करेगा। कर-मंत्री ने लिखा था—

मान्यवर,

मुझे आपकी आज बहुत जरूरत है। अगर हो सके तो चार बजे मेरे यहां तशरीफ लाइए और मेरे साथ चाय पीजिए। आपसे बहुत जरूरी बातें करनी हैं।

शुभचिन्तक
'कर-मंत्री'

यह ख्याल करते हुए 'कर-मंत्री जैसे बुद्धिमान आदमी से अवश्य कोई भूल हुई है अर्थात् उसने यह निमंत्रण-पत्र किसी और को भिजवाने के बजाय मुझे भिजवा दिया है। पहले तो मैं उसके यहाँ जाने से झिझका लेकिन जब तीन बजे कर-मंत्री के सेक्रेटरी ने फोन पर मुझसे निश्चित समय पर पहुंच जाने की प्रार्थना की तो मैं यह समझा कि कर-मंत्री अवश्य किसी आकस्मिक संकट में फंस गए हैं और उन्हें मेरे मशवरे की आवश्यकता है। अतः मैं ठीक चार बजे उनकी कोठी पर पहुंच गया।

'जयहिन्द ! मिजाज कैसे हैं ? आज मौसम खुशगवार है। पधारने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ! 'आदि-आदि रस्मी बातों के बाद कर-मंत्री मुझे अपने ड्राइंग-रूम में ले गए और एक शानदार कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। बैरा चाय लाया। कर-मंत्री ने मेरे लिए चाय का प्याला बनाते हुए कहा—'आप हैरान अवश्य होंगे कि मैंने आपको बुलवा भेजा, पर बात दरअसल यह है कि मुझे वाकई आपकी जरूरत है।'

'फरमाइए ! 'मैंने विनम्रता से कहा—'मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?'

'मुझे बताया गया है कि आप बड़े बुद्धिमान हैं।'

'साहब ! मैं क्या हूं। यह तो आपकी जर्रानवाजी है।'

'कसरे-नफसी की जरूरत नहीं। आप वाकई बड़े बुद्धिमान हैं और मुझे इस समय वाकई बुद्धिमान आदमी की जरूरत है।'

'फरमाइए'!'

'आप जानते हैं, मैं घाटे का बजट तैयार करने में माहिर हूं।'

'बहुत अच्छी तरह जानता हूं। तीन साल अपने बजट में पचास करोड़ का घाटा दिखाया था। पिछले साल 70 करोड़ और इस साल तो आपने अपने सभी पिछले रिकार्ड मात कर दिए यानि 99 करोड़।'

'बस इसी बारे में आपसे मशवरा करना है।'

'गुस्ताखी माफ ! लेकिन मुझे बजट तैयार करने का कोई तजुर्बा नहीं। सच तो यह है कि मैं अपना निजी बजट तैयार करने में प्रायः असफल रहता हूं। इसी को लीजिए कि आज महीने की बीस तारीख है और मेरे बटुए में केवल एक खोटी चव्वनी है और अभी बिजली का बिल, दर्जी का बिल, धोबी का बिल और इसी किस्म के असंख्य अन्य बिल मुझे चकाने हैं। इस हालत में...'

'छोड़िए यह किस्सा !' कर-मंत्री ने मेरी बात काटते हुए कहा—'आपके बटुए में कम से कम खोटी चवन्नी तो है। यहां मेरे खजाने में फूटी कौड़ी तक नहीं।'

'अजीब बात है, पर आप इतने नये कर हर साल लगाते हैं। वह रुपया कहां जाता है ?'

'आप भी अजीब भोलें-भाले हैं।' कर-मंत्री ने जरा बेतकल्लुफ होते हुए कहा—'यह भी नहीं जानते कि इधर मैं नए कर लगाता हूं। इस हालत में खजाने में कुछ खर्च बचे रहने की क्या संभावनाएं हैं ?'

'पर आप खर्च क्यों बढ़ाते हैं ?' मैंने जरा उत्सुक होकर पूछा।

'खर्च न बढ़ाऊं तो घाटा कैसे दिखा सकता हूं ?

'घाटा न दिखाऊं ?' कर-मंत्री ने चमक कर कहा—'तो फिर कर-मंत्री कैसे रह सकता हूं ?' फिर तो मुझे वही काम करना पड़ेगा जो पूर्वजों का व्यवसाय है।'

'यानी ?'

'खैर छोड़िए यह किस्सा ! हाँ तो यह बात है कि मुझे खर्च बढ़ाने ही पड़ते हैं। दरअसल मैं इस मामले में कुछ मजबूर-सा हूं। अब इस साल ही देखिए...'

'हां, हां, इस साल...'

'इस साल मैंने नौ नए मंत्री नियुक्त किये। दस नए राजदूत विदेशों में भेजे। पांच सौ नये सेक्रेटरी नियुक्त किये। साढ़े सात सौ डिप्टी-सेक्रेटरी, पन्द्रह सौ असिस्टेंट डिप्टी-सेक्रेटरी और अगर सब असिस्टेंट डिप्टी-

सेक्रेटरियों की संख्या पूछो तो शायद बता भी न सकूं।

'नौ-मंत्री ! दस राजदूत ! यह तो अविश्वसनीय-सी बात लगती है।'

'अविश्वसनीय ! अच्छा गिन लीजिए—अकाल-मंत्री, वचन-मंत्री, भाषण-मंत्री, जलसा-मंत्री, जुलूस-मंत्री, मजाक-मंत्री, दुर्घटना-मंत्री, आंकड़ा-मंत्री।'

'और राजदूत कौन से नए देशों में भेजे ?

'इन देशों के नाम तो मुझे भी अच्छी तरह नहीं आते। बस यह समझ लीजिए कि अब संसार के कोने-कोने में हमारे राजदूत हैं, उदाहरणार्थ एक टापू 'जगमग जगमग' है। अंधमहासागर में है या शायद प्रशांत महासागर में। उसका क्षेत्रफल केवल एक वर्ग मील है। जनसंख्या पचास-साठ के करीब होगी। वहां मैंने अभी-अभी एक राजदूत को नियुक्त किया है।'

'पर यह नए मंत्री और राजदूत कुछ काम भी करते हैं या केवल खर्च बढ़ाने के काम आ रहे हैं ?'

'खर्च बढ़ाना इनका सबसे बड़ा कारनामा है, पर इसके अलावा भी यह अन्य बहुत से काम करते हैं। उदाहरणार्थ, अकाल-मंत्री को लीजिए।

'हां ! हां ! इन महाशय का क्या कारनामा है ?'

'इनका कारनामा यह है कि यह देश के हर छोटे-बड़े प्रांत पर अकाल ला रहे हैं। आरम्भ उन्होंने एक उत्तर-पूर्वी प्रांत से किया है, पर अंत कहां करेंगे ? इसका पता उनके सिवा किसी को नहीं। यह महाशय जब चाहें, किसी प्रकार के अकाल को धरती पर ला सकते हैं। खुराक का अकाल, कपड़े का अकाल, मिट्टी के तेल का अकाल या केवल मिट्टी का अकाल।'

'खूब ! 'मैंने मुस्कुरा कर कहा—' और 'मजाक-मंत्री ?'

'हा हा हा ! मजाक-मंत्री ! बड़े मजे के आदमी हैं। इनका काम जनता से मजाक करना है। ज्यों ही कोई मसला जनता की परेशानी का कारण बनता है और उनका ध्यान उसकी ओर दिलाया जाता है तो यह उसे हंसी-मजाक में उड़ा देते हैं।'

'उदाहरणार्थ ?'

'यदि जनता शिकायत करे कि चाय हद से ज्यादा महंगी हो गई है तो वह कहते हैं कि यदि चाय महंगी हो गई तो चाय के बजाय सूखी घास का जोशांदा पिया कीजिए।'

'वाकई मजाक-मंत्री बड़े मज़ाक वाले हैं।'

'जी हां। यह बात न होती तो मैं उन्हें पांच हजार मासिक पर नियुक्त न करता। खैर, छोड़िए, यह किस्सा ! हम असल विषय से भटक रहे हैं। दरअसल मैंने आपको इसलिए नहीं बुलवाया कि नए मंत्रियों या राजदूतों के कारनामों से अवगत करूं। मेरा मतलब कुछ और था।'

'अरशाद।'

'आप चूंकि बुद्धिमान आदमी हैं। इसलिए जरा अपने दिमाग से काम लीजिए और मुझे बताइए कि 99 करोड़ रुपये के घाटे को पूरा करने के लिए कौन-कौन से नए कर लगाए जायें ?'

'नए कर ! गुस्ताखी माफ ! मैंने जरा भन्नाकर कहा—'पहले ही आपने कर लगा-लगा कर जनता की कमर कुबड़ी कर दी है। खुदा के लिए, नए कर लगाने के इरादे से बाज आइए।'

'जनता पर कर ? कैसी बातें करते हैं आप ? मैंने जनता पर तो कोई कर नहीं
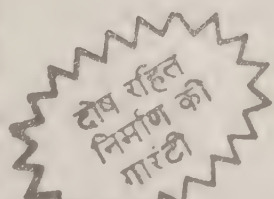
लगाया। यह सही है मैंने तम्बाकू पर कर लगाया। पान पर लगाया, पर जनता तम्बाकू है न पान!

'जालिम! 'मैंने कर-मंत्री से जरा भी प्रभावित न होते हुए कहा—' 'यह जनता पर ही तो है। जनता पान या तम्बाकू न सही पर पान खाते और तम्बाकू पीते तो हैं।'

'यह और बात है। अच्छा छोड़िए, यह किस्सा! अब जल्दी-जल्दी बताइए कि कौन से कर ?'

'आप कर लगाने पर तत्पर हैं ?

'बिलकुल!'

'अवश्य लगाना चाहते हैं ?'

'अवश्य!'

'अच्छा तो सगाई के बारे में क्या ख्याल है ?

'सगाई ? किसकी सगाई ? मेरी या आपकी ?'

'हा हा हा! वाह, कर-मंत्री साहब! आप हैं तो मंत्री, पर माफ कीजिएगा हैं निरे काठ।'

'बस! बस आगे मत कहिए। मैं आपका मतलब समझ गया लेकिन···लेकिन···सगाई का कर से क्या संबंध। यह समझ में नहीं आया।'

'मेरा मतलब है सगाई कर।'

'अच्छा! अच्छा! सगाई कर। खूब खूब। बहुत दूर की सूझी। भई वाह। क्या बात है। अब सगाई-कर। वाकई आप बुद्धिमान आदमी हैं।'

'अच्छा जर्रानवाजी है।'

'अच्छा—भला अंदाज बताइए। आपके देश में हर साल कितनी सगाइयां होती हैं ?'

'यह तो किसी पंडित से पूछिए।'

'नहीं। नहीं। मजाक छोड़िए। बताइए।

'कोई दस-बारह लाख।'

'ठीक! अगर हर सगाई पर दस रुपए कर लगाया जाए तो एक करोड़ से कुछ ज्यादा आय हो सकती है। अच्छा और कोई कर तजवीज कीजिए।'

'जन्म-कर।'

'बहुत खूब। बहुत खूब! मेरे विचार में अपने देश में हर साल पचास लाख नए बच्चे पैदा होते हैं। पांच रुपये प्रति बच्चा ठीक रहेगा।'

'ज्यादा है गरीब लोग नहीं दे सकेंगे।'

'तो पौने-पांच कर दीजिए। पचास लाख गुना पौने-पांच—काफी आय हो सकती है। अब आगे चलिए।'

'कफन-कर।'

'हां! हां! कफन-कर! क्यों नहीं! यदि जन्म-कर लग सकता है तो कफन-कर लगाने में क्या हर्ज है। इस कर से भी पचास-साठ लाख की धनराशि मिल सकती है। चलिए, यह भी नोट कर लिया मैंने····

'बकरी-कर!'

'मतलब!'

'मतलब यह है कि जो व्यक्ति बकरी पाले, उस पर कर लगाया जाए। आप जानते हैं कि आजकल गाय या भैंस पालने की बहुत कम लोगों की सामर्थ्य है।'

'ठीक है। ठीक है। पर मेरे ख्याल में इस कर का दायरा जरा व्यापक होना चाहिए। कितने ही लोग मुर्गियां, बटेरें, बत्तखें, तोते, कुत्ते, बिल्लियां और चूहे भी तो पालते हैं।'
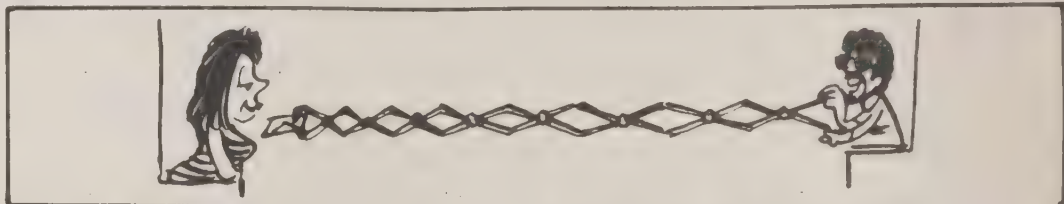
'तो चलिए बकरी-कर के अलावा बटेर-कर चूहा-कर, मुर्गी-कर भी लगा दीजिए।'

'अच्छा तो अब कोई ऐसी चीज बताइए जिसे हर व्यक्ति इस्तेमाल करता हो। मेरी राय में अगर उस पर कर लगा दिया जाय तो समुचित आय हो सकती है।'

'सोचना पड़ेगा।'

'हां! हां! दो तीन मिनट सोच लीजिए। मैं इतने में सिगरेट पीता हूं।

दो-तीन मिनट विराम के बाद मैंने कहा—'मेरे ख्याल में ऐसी केवल दो चीजें हैं।'

'फरमाइए।'

'शीशा और कंघी।'

'शीशा और कंघी! कर-मंत्री ने कुर्सी पर उछलते हुए कहा—'आप वाकई बुद्धिमान आदमी हैं। शीशा और कंघी। कंघी और शीशा क्या बात है 'वाअल्लाह।'

'अगर आप इन दोनों पर कर लगा दें—चाहे मामूली-सा, तो करोड़ों की आय हो सकती है।'

'करोड़ों ? वारे-न्यारे हो जायेंगे। अच्छा अब एक मिनट के लिए दिमाग को फिर परीक्षा में डालिए और सोचकर बताइए कि कोई ऐसी चीज रह तो नहीं गई जिस पर हमने कर नहीं लगाया। आप भी सोचिए। मैं भी सोचता हूं।

कुछ क्षण हम दोनों चुपचाप बैठे सोचते रहे। सहसा कर-मंत्री ने कहा—'एक चीज का तो मुझे पता चल गया है। बाकी आप बता दीजिए।'

'वह कौन सी चीज है ?'

'बरफ।'

'बरफ ?'

'हां हां। भई बरफ। जानते नहीं गर्मी के मौसम में हर आदमी बरफ इस्तेमाल करता है।

'खूब। बहुत खूब। मैंने कर मंत्री की बुद्धिमानी की दाद देते हुए कहा।

'अच्छा अब आप कहिए। आपने क्या सोचा है ?'

'मेरे विचार में तो अभी बहुत सी चीजें बाकी हैं। उदाहरण के लिए गरारा।'

'आपका मतलब है रेशमी गरारा ?'

'हां।'

'इस पर कर नहीं लगाया जा सकता।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि····'कर मंत्री ने भेद भरे स्वर में कहा—'श्रीमतीजी पहनती हैं।

'तो रहने दीजिए, मेंहदी के बारे में क्या विचार है ?'

'मेंहदी पर कर लगाया जा सकता है। मेंहदी से श्रीमतीजी को विशेषतया नफरत है।'

'खिजाब ?'

'खिजाब पर कर लगाना ठीक नहीं रहेगा। आदरणीय पिताजी खिजाब लगाते हैं खिजाब के अलावा कोई अन्य वस्तु बताइए।

'ऐनक, छतरी, बटुआ, चाकू, चमचा, देगची, लिहाफ, रजाई, तकिया, तौलिया, झूमर, नथ, बाजूबंद, घड़ी, फाऊंटेन पेन, हल्दी, मिर्च, दाल, चीनी, गर्म मसाला।'

'बस। बस। काफी है। मेरे विचार में 99 करोड़ का घाटा पूरा हो जाएगा।'

'यदि अब भी पूरा न हुआ तो फिर धूप और पानी पर भी कर लगा दीजिएगा।'

'नहीं। नहीं। मेरे विचार में इस साल यह नौबत नहीं आएगी। अगले साल देखा जाएगा।'

'अच्छा तो अब मुझे इजाजत है ?'

'बहुत-बहुत धन्यवाद। कर-मंत्री ने मुझसे गले मिलते हुए कहा—'आपकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। आप न केवल बुद्धिमान बुद्धिमानतम आदमी हैं।'

—तरनजीत

काका के कारतूस

अटपटे प्रश्न दीवानों के
चटपटे उत्तर काका हाथरसी के—
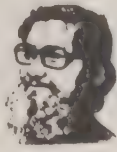
मुहम्मद उमर—बालूगंज, आगरा
प्र० : महापुरुष चले गए. उनके कदमों के निशान नहीं मिलते, मिल जाएं तो क्या होगा ?
उ० : उनसे पूछो प्रश्न यह, बने राज-सरताज,
बापू के पदचिन्ह पर कौन चल रहा आज ?

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर (नागालैंड)
प्र० : किसी-किसी को किसी के रोने में मजा क्यों आता है ?
उ० : पूंजीवादी देश की, देखी यह तस्वीर,
जब-जब रोए गरीबी, लेते मजा अमीर।

धर्मेन्द्र कुमार विक्की—जालन्धर
प्र० : शुरू-शुरू में प्रेमिका की बातें मीठी लगती हैं, फिर खट्टी क्यों हो जाती हैं ?
उ० : ताजा ताजा दही में, मिलता स्वाद मिठास,
बासी जब हो जाय तो, आने लगे खटास।

सुरेन्द्र चन्द्र अरोरा—मेरठ
प्र० : काकाजी, मैं दीवाना में प्रश्नोत्तर पढ़ता रहता हूं आप दोहों में ही उत्तर क्यों देते हैं ?
उ० : है सवाल उनका बड़ा, समय न करें खराब,
दो लाइन में कह दिया, हाजिर हुआ जवाब।

रेशमा काफी वाला—बिलर्डस कालोनी, इन्दौर
प्र० : ताश के ५३ वे पत्ते पर राजनारायण जी का चित्र छपने लगे तो ?
उ० : पार्टी में पत्ते बटें, चाल सुपरहिट जाय,
बदल जायं जब खिलाड़ी, बेगम से पिट जाय।
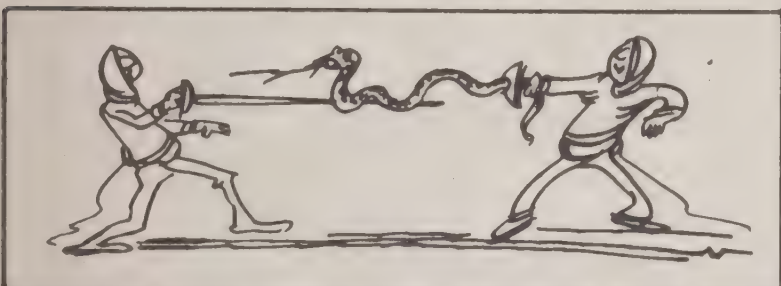
नवीन कुमार—स्टेट बैंक, अलीगढ़
प्र० : किसी के अन्दर दुष्टता की भावना कैसे जाग्रत होती है ?
उ० : नर-पशुओं ने सताई, करके अत्याचार,
'फूलन' क्यों शूलन बनी, बता रहे अख़बार।

रवि कमल वरधानी—नीमच
प्र० : हमने भी किसी से प्यार किया था, लेकिन वह बेवफा निकली, अब क्या करें ?
उ० : दगाबाज होती बहुत माशूकों की जात,
सोच समझकर कीजिए नए यार से बात।

इकबाल सेठी—पलोट
प्र० : दीवाना में आपका चित्र अधूरा ही छपता है पूरा फोटो क्यों नहीं छपवाते ?
उ० : पूरा फोटो छपे तो, ले-ले आधा पृष्ठ,
उत्तर आधे देखकर, पुत्तर पाएं कष्ट।

केवल प्रकाश 'दुआ'—काशीपुर (उ.प्र.)
प्र० : डियर काका, आप अपनी एक असली तस्वीर मुझे नहीं भेज सकते क्या ?
उ० : अपने ही दिल में झांक करके देखलो दिलवर,
हंसती हुई मिल जायगी, तस्वीर हमारी।

हुकम सिंह चौधरी—बांदीकुई (राज०)
प्र० : ऐसी जगह बताइए, जहां पर किसी से इश्क लड़ा सकें और कोई खतरा न हो ?
उ० : रोए-चीखे या हंसे, नहीं पड़े व्यवधान,
बिना रिस्क के इश्क की जगह ठीक शमशान।

विजय कुमार रैक्वार—विदिशा
प्र० : शादी के लिए एक जवान लड़की मुझे देख ठंडी-ठंडी आहें भरती है ?
उ० : सर्द आह जो आज हैं, कल बन जाएं दर्द,
तुमको औरत बना दे, वह बन जाए मर्द।

सैफुद्दीन—झालावाड़ (राजस्थान)
प्र० : किसी की बीवी, अधिक बच्चे पैदा करने के लिए जिद कर तो ?
उ० दो बच्चे के बाद ही कह दो उससे साफ़,
मुझको बच्चा समझकर, कर दो अम्मा माफ़।

मो० वईम खां, शीदीमियां—बिलासपुर
प्र० : आपके दिल में प्यार अधिक है या काकी के दिल में ?
उ० : हम दोनों के पास है फिफ्टी-फिफ्टी प्यार,
इसीलिए होती रहे, प्यार भरी तकरार।

सूर्यप्रकाश प्रजापति 'विवेक'—सुजानगढ़
प्र० : सुना है कविता तो काकी लिखती हैं, मंच पर वाह वाही आप लूटते हैं ?
उ० : काकी ताना मारती, बन जाता वह व्यंग,
काका ढालें काव्य में, जमे मंच पर रंग।

अनुराग मिश्रा—गोला गोकरन नाथ (खीरी)
प्र० : समय, मनुष्य का साथ कब छोड़ देता है ?
उ० : पैर लड़खड़ाने लगें, थक जाएं जब हाथ,
आप न छोड़ें समय को, समय छोड़ दे साथ।

मनवर सिंह रावत—नई दिल्ली
प्र० : लड़कियों के लिए राखी का त्यौहार महत्वपूर्ण है या शादी का ?
उ० : क्वारी हो या विवाहित, बड़ी होय या छोट,
राखी के त्यौहार पर, खींचा करतीं नोट।

गौरीशंकर मल्होत्रा—जबलपुर
प्र० : आजकल आप कौन से गुट में हैं काका ?
उ० : काकी रहती हाथरस, हम करते हैं टूर,
बेटा रहता बम्बई, गुटबन्दी से दूर।

प्रशान्त कुमार डे—राजनादगांव (म.प्र.)
प्र० : काका जी, आपके हास्य काव्य की विशेषता क्या है ?
उ० : शिव का ताण्डव नृत्य या पार्वती का लास्य,
ऐसा ही देता मज़ा, काकाकवि का हास्य।

काका के कारतूस
दीवाना पाक्षिक, ८ बी, बहादुरशाह जफ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.

हरीश के पाव तले से जमीन निकली जा रही थी . . .चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। सुनीता क्षण भर के लिए रुकी और फिर मुस्कराकर बोली।

'इसके बाद और भी कई लड़कियों से भेंट हुई। पहले तो मैंने सोचा डैडी को खबर कर दूं लेकिन फिर विचार आया यूं ही किसी का जीवन खराब नहीं करना चाहिए क्योंकि डैडी तो सीधे जेल भिजवा देंगे . . .सो मैंने सोचा क्यों न सीधे ही आपके 'इश्क' का उत्तर 'इश्क' में ही दे दूं . . . और वह भी इस प्रकार कि फिर कभी आपको किसी शरीफ मासूम लड़की पर इश्क झाड़ने का साहस भी न हो पाए।''

फिर सुनीता ने बड़े सन्तोष से झुककर अपने एक पैर से ऊंची हील की चप्पल निकाली और हरीश हड़बड़ाकर पीछे की ओर सरकता हुआ बोला—

द . . .द . . .देखिए . . .मेरी बात तो सुन लीजिए!

जरुर सुनाइए . . .अब तो सुनने वालियां बहुत हैं . . .जरा अपने चारों ओर देखिए—।

हरीश ने गड़बड़ा कर चारों ओर देखा और दूसरे ही क्षण सचमुच उसे अपने पैरों तले से जमीन सरकती हुई अनुभव हुई क्योंकि चारों ओर पेड़ों और बाड़ों की आड़ में छुपी हुई लगभग एक दर्जन लड़कियां अपने अपने हाथों में चप्पलें लिए हुए हरीश की ओर बढ़ रहीं थीं।

और फिर . . .अचानक हरीश ने शायद मिलखा सिंह से भी बढ़ कर तेज दौड़ का प्रदर्शन करते हुए एक ऊंची छलांग लगाई और तीन लड़कियों की एक पंक्ति के ऊपर से जैसे हवा में उड़कर दूसरी ओर पलटा खा गया . . .लड़कियों की चीखें निकल गई थी—फिर इससे पहले कि वह उसकी ओर झपटतीं उसने तेजी से भाग कर बाउंडरी की दीवार फलांगी . . .फिर मोटर साइकिल को बजाए स्टार्ट करने के गियर में डाला और स्टार्ट होते ही उछल कर सीट पर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद ही मोटर साइकिल हवा से बातें कर रही थी और उसे अपने सिर बदन के अन्य भागों पर कुछ इस प्रकार दुखन अनुभव हो रही थी जैसे सचमुच उसके ऊपर लड़कियों ने जूतों की बरखा कर दी हो—यह कल्पना करके भी उसकी आत्मा कांप जाती थी कि अगर वह सचमुच पिट जाता तो क्या होता? साथ ही अब वह यह भी सोच रहा था कि सुनीता का सामना अब वह किस तरह करेगा?

शायद जीवन में पहले कभी उसने इस प्रकार पराजय का मुंह नहीं देखा था . . .निस्सन्देह कई लड़कियों ने उसे दुत्कार दिया था मगर इतना साहस किसी को नहीं हुआ था कि वह हरीश पर जूता लेकर फैल पड़ती . . .। हरीश के होंठ सख्ती से भिंचे हुए थे और वह सोच रहा था कि ऐसा क्या किया जाए कि सुनीता को नीचा दिखाया जा सके? जाने क्यों यह हार उसके दिल में एक घाव बन गई थी और उसका जी चाह रहा था कि सुनीता उसके कदमों में गिरकर गिड़गिड़ाकर उससे क्षमा मांगे। हरीश ने मोटरसाइकिल की गति और भी तेज कर दी।

कमल ने पुस्तक बन्द की और लायब्रेरी की कुर्सी पर से बहुत धीरे से उठा कि कोई डिस्टर्ब न हो . . .फिर चंद क्षण बाद वह लायब्रेरी के दरवाजे से

बाहर निकल रहा था तो प्रोफेसर चावला ने उसे पुकारा—

''कमल . . .जरा सुनो!''

कमल ने चौंक कर देखा। प्रोफेसर चावला लॉन में एक लड़की के साथ खड़े थे। कमल शिष्टतापूर्वक उनकी ओर बढ़ा और पास पहुंचकर अभिवादन किया . . . कमल ने लड़की की ओर देखा तक नहीं था यद्यपि लड़की ध्यान से उसे ही देख रही थी। प्रोफेसर ने लड़की की ओर संकेत करके कमल से कहा—

''यह हैं मिस सुनीता मेहरा, बी.ए. फाइनल की स्टूडैंट'', फिर वह सुनीता से बोले, ''और यह कमल है एम. कॉम फाइनल का स्टूडैंट . . .हाईस्कूल से टॉप्र करना शुरू किया है तो अभी तक रिकार्ड बना रखा है . . .मेरा ही नहीं सारे कालिज का विश्वास है कि कमल जरूर फर्स्ट क्लास फर्स्ट में एम. कॉम करेगा—मेन सबजैक्ट 'एकाउण्ट' है।

सुनीता ने मुस्कराकर कमल की ओर देखते हुए कहा—

हैलो—!

हैलो . . .! कमल ने हल्की-सी मुस्कराहट के साथ सभ्य ढंग में उत्तर दिया।

कमल!'' प्रोफेसर ने कहा, ''तुम्हें एक कष्ट दे रहा हूं।

आज्ञा कीजिए . . .सर।

मिस सुनीता मेरे बहुत अच्छे और बचपन के दोस्त की बेटी है—उन्होंने यहां सुनीता की जिम्मेदारी मुझे सौंप दी है—सुनीता एम.ए. में इंगलिश लिट्रेचर लेना चाहती है—यह चाहती थी कि इस मामले में मैं इसकी थोड़ी सहायता कर दूं—मगर तुम्हें तो मालूम है मेरी अभी एकनामिक्स की पुस्तक पूरी नहीं हुई . . .उस पर वर्क करने में फालतू समय निकालना मुश्किल पड़ जाता है और मैं किसी दायित्वहीन व्यक्ति को यह कार्य सौंप नहीं सकता इसलिए मैंने इस काम के लिए तुम्हें और केवल तुम्हें ही उचित समझा है।

सर . . .यह मेरा सौभाग्य है कि आपने इतना बड़ा मान मुझे दिया।

''खैर भई . . .अब तुम लोग समय और स्थान आपस में निश्चित कर लो।'' प्रोफेसर ने घड़ी देखते हुए कहा, मैं चल रहा हूं . . .और हां सुनीता! मुझे विश्वास है कि कमल के बारे में मेरे चुनाव पर तुम्हें खुशी होगी।

यह कहकर प्रोफेसर चावला चले गए और सुनीता और कमल पास-पास खड़े रह गए। सुनीता ने कुछ देर मौन रहने के बाद कमल की ओर देखा और मुस्कराकर बोली— ''प्रोफेसर ने आपके बारे में ठीक ही कहा था।''

''आं . . .!'' कमल जो प्रोफेसर चावला को

जाते देख रहा था, चौंककर बोला, ''क्या कहा था?''

''यही कि आपको जब तक सम्बोधित न किया जाए अपनी ओर से कुछ नहीं बोलते।''

''नहीं . . .'' कमल ने मुस्कराकर कहा, ''ऐसी कोई बात नहीं . . .लोगों ने व्यर्थ ही मेरे बारे में एक धारणा-सी बना ली है . . . वर्ना वास्तव में मैं इतना 'ड्राई' भी नहीं हूं जितना लोग समझते हैं।''

''शुक्र है भगवान का।'' सुनीता मुस्कराकर बोली, ''यूं तो मैं भी कम बोलती हूं . . .मगर बिल्कुल ही चुप रहूं तो मेरा दिल धड़कने लगता है—आइए कैन्टीन में एक-एक प्याली चाय लें।''

''धन्यवाद!'' कमल ने मुस्कराकर कहा, ''आप शायद विश्वास न करें, कॉलिज में मुझे यह छठा बरस है मगर मैंने आज तक कैंटीन की शक्ल नहीं देखी।''

''क्यों?'' सुनीता ने चौंककर आश्चर्य से कहा।

''मैं अनावश्यक प्रदर्शनी का अभ्यस्त नहीं हूं इसलिए स्पष्ट बता देने में कोई हानि नहीं समझता . . .मेरी आर्थिक परिस्थिति मुझे इस प्रकार से ऐश की अनुमति नहीं देती . . .यह उन बड़े घराने के लड़कों का मनोरंजन है जो केवल डिग्री लेने के लिए ही कॉलिज में आते हैं और डिग्री तो किसी-न-किसी प्रकार मिल ही जाती है—मगर मैं कॉलिज में शिक्षा ग्रहण करने आया हूं, डिग्री तो उसके प्रमाण के रूप में दुनिया को दिखाने के लिए ले जाऊंगा—आज कैन्टीन में किसी दोस्त के साथ बैठूंगा . . .कल अकेले भी जी चाहेगा, परसों चार दोस्तों को लेकर बैठूंगा। समय के साथ-साथ पैसे की भी बर्बादी।'' फिर वह तनिक रुककर बोला, ''आपने मेरी बात का बुरा तो नहीं माना?''

''मैंने तो आज आपसे एक अच्छी शिक्षा ली है।'' सुनीता ने मुस्कराकर कहा, 'वैसे आपकी फैमिली?''

''पिताजी हैड-क्लर्क हैं पी.डब्ल्यू.डी. में . . .मुझे इसलिए पढ़ा रहे हैं कि मैं हैड-क्लर्क न रह जाऊं . . .मां हैं, बड़ी स्नेहशील और प्यार करने वाली। एक बहन है जिसके अधिकार की पढ़ाई भी मेरे भाग में आ गई है इसलिए मैंने सोचा है कि मेरी बहन मेरे पिताजी की नहीं मेरी जिम्मेदारी है।''

''बहुत अच्छा ढंग है आपके सोचने का।''

''अच्छा हां . . .मैं लायब्रेरी से ठीक छः बजे निकलता हूं . . .वहां से सीधा आपके यहां आ जाया करूंगा—साढ़े सात-आठ बजे तक पढ़ा दिया करूंगा।''

''पढ़ना मुझे है—मैं आपके घर आ जाया करूंगी।''

''नहीं . . .आप लड़की हैं . . .आपको घर पर ही रहना चाहिए माता-पिता की नजरों के सामने . . .कॉलिज के बाद के फालतू टाइम में।''

''शायद आप मुझे अपना घर नहीं दिखाना चाहते।''

''घर . . .'' कमल हंस पड़ा, ''वह आप कल ही देख लीजिएगा—मेरे घर वालों से मिलकर आप बहुत खुश होंगी . . .विशेषतः मेरी मां और बहन से मिलकर।''

''ठीक है—।'' सुनीता ने ठंडी सांस लेकर मुस्कराते हुए कहा, ''आप मेरे गुरू हैं इसलिए आपकी बात टाल भी नहीं सकती . . .आप सोचेंगे कि मैं अपने घर की एक प्याली चाय रोज बचाना चाहती हूं।''

सुनीता और कमल, दोनों एक साथ हंस पड़े . . .कमल ने घड़ी देखी और बोला, ''अच्छा मिस सुनीता, मैं चलूंगा। मेरा एक दोस्त मेरी राह देख रहा होगा।''

''ओहो—आपके दोस्त भी हैं?''

''मैंने कहा ना . . .मैं इतना 'शुष्क' नहीं हूं जितना समझा जाता हूं . . .बस अपने गिर्द एक सीमा-सी बना रखी है—लोगों ने उसी को न जाने क्या समझ लिया है।''

फिर दोनों हंसे और कमल हाथ हिलाकर गेट की ओर चल पड़ा—सुनीता उसे जाते हुए दिलचस्पी से देख रही थी . . .मगर कमल की चाल बड़ी शांत थी . . .ऐसा नहीं अनुभव होता था कि उसे इस बात का एहसास हो कि उसे पीछे से कोई लड़की देख रही है—सुनीता ने एक ठंडी लम्बी सांस ली और मुस्कराती हुई कैन्टीन की ओर बढ़ गई जहां उसकी कुछ सहेलियां उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

कमल पुस्तकें संभाले हुए आराम से चलता हुआ कॉलिज से निकला . . .कुछ फासले पर ही उसे हरीश की मोटर साइकिल नजर आई और फिर सामने पनवाड़ी की दुकान पर उसे हरीश भी दिखाई दे गया . . .वह अभी-अभी सिगरेट सुलगा कर मुड़ा था। कमल को देखकर वह क्षण-भर ठिठका फिर दियासलाई हिलाकर बुझाई और मोटर साइकिल के पास आ गया . . .उसका शेव बढ़ा हुआ था, आंखों में से घबराहट झलक रही थी . . .कपड़े भी कुछ मसले हुए थे। कमल पास पहुंचा तो हरीश ने 'हैलो' कहा . . .कमल ने भी मुस्कराकर गर्दन हिलाई . . .फिर हरीश बोला, ''चाय पीएगा?''

''तू जानता मैं कभी होटल में चाय नहीं पीता।''

हरीश कुछ देर उसे देखता रहा तो कमल ने स्वयं ही पूछा, ''क्या चलने का विचार नहीं है?''

''एक बात कहूं . . .बुरा तो नहीं मानेगा?''

''तेरी बात का बुरा कोई गधा ही मान सकता है।''

''तो सुन . . .तुझसे बड़ा बेशर्म आज तक मैंने नहीं देखा।''

''मैंने इस गाली का भी बुरा नहीं माना . . .तू शायद यह गाली इसलिए दे रहा है कि तेरे बिगड़े हुए हुलिए को मैं तीन दिन से देख रहा हूं . . .मगर मैंने इसका कारण नहीं पूछा।''

''अबे . . .नीच . . .मैं तेरा दोस्त हूं।''

''तू एक नम्बर का एक्टर है . . .मैं जानता हूं, यह ढोंग तूने किसी लड़की को प्रभावित करने के लिए बनाया है—और मेरा दावा है कि तू किसी लड़की के कारण ही मारा जाएगा।''

''यार! मर तो मैं अब रहा हूं।'' हरीश ने बेचैन और दुखी स्वर में कहा, ''मेरी भूख प्यास उड़ गई है . . .रातों की नींद उचाट हो गई है . . .कल फैक्टरी की एक मशीन मेरी भूल से टूट गई . . .मेरी जगह कोई और होता तो मालिक फैक्टरी को हिलाकर रख देता।''

''यूं.तो तू कई बार मर चुका है . . .मैंने तुझे लाखों बार समझाया कि इन अप्रिय रास्तों पर चलना छोड़ दे . . .अच्छी खासी आमदनी है . . .क्यों धन भी गंवाता है और स्वयं भी अपमानित होता है . . .इधर-उधर भटकते रहने की अपेक्षा घर बसा लेना कई दर्जा उत्तम है . . .चैन से गुजरेगी . . .और करोड़ों बार यह कह चुका हूं कि मुझसे किसी लड़की के बारे में कभी परामर्श मत किया कर।''

''यार कमल—'' हरीश ने कमल के हाथ पर हाथ रख दिया, 'मैं इस बार सचमुच सीरियस हूं।''

''यह झूठमूठ सीरियस कैसा होता है?''

''मेरा मजाक मत उड़ा . . .अगर मैं उसको झुकाने में असफल रहा तो न जाने क्या कर बैठूंगा।''

कमल ने ध्यान से हरीश को देखा और बोला, ''इसका मतलब है किसी लड़की ने ठुकरा दिया है—मगर किसी लड़की के लिए तेरी ऐसी दशा तो कभी नहीं हुई . . .तू तो दो-चार दिन में ठुकराने वालियों को भी मस्तिष्क से निकाल फेंकता था।''

''उसका ठुकराना मेरे लिए एक चेलेंज बन गया है—वह अपनी कई दोस्तों को साथ लेकर मेरी मुरम्मत करना चाहती थी?''

कमल ने हल्का-सा ठहाका लगाया और बोला, ''बड़ा दिलचस्प दृश्य होगा।''

''मैं तेरा गला घोंट दूंगा।'' हरीश दांत पीसकर बोला, ''तू मेरा इकलौता दोस्त है इसलिए इतनी बड़ी बात तुझे बता रहा हूं।''

''मगर इस घटना के बाद भी तेरी आंखें नहीं खुलीं।''

''शायद खुल जाएं . . .मगर इस अपमान का बदला लेने के बाद—उससे पहले शायद मैं उसे कभी और किसी भी मूल्य पर भुला न सकूंगा।''

''हूं—कैसी है वह?''

''बहुत सुन्दर—अप्सरा के समान।''

''परिवार कैसा है?''

''शरीफ़ . . .प्रतिष्ठित लोग हैं।''

''मेरी एक बात मानेगा?''

''बोल!''

''उस लड़की के साथ घर बसा ले।''

''घर—।'' हरीश के मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा।

''किसी लड़की से इससे बड़ा बदला और क्या लिया जा सकता है कि वह जीवन-भर के लिए तेरी दासी बन जाए।''

''मैं तैयार हूं . . .मगर मेरी यह समस्या तेरे बिना और कोई हल नहीं कर सकता।''

''चल . . .मोटर साइकिल स्टार्ट कर—देर हो रही है।''

''मेरी बात का उत्तर दे।'' हरीश ने झुंझलाकर उसकी बांह झंझोड़ डाली।

कमल मुस्कराया और बोला, ''मैं तेरी दशा का अध्ययन कर रहा हूं—इन परिस्थितियों में अगर वह तेरी पत्नी बन गई तो उसको नीचा दिखाने के चक्कर में उसका और अपना, दोनों ही का विवाहित जीवन का सुख हमेशा के लिए खो बैठेगा—नारी का हृदय शीशे से भी अधिक कोमल होता है—एक बार उसमें बाल पड़जाए तो फिर कभी नहीं जा सकता।''

''मैं शादी भी तो इसीलिए करूंगा।''

''बकवास मत कर . . .शादी किसी मजाक का नाम नहीं है—विवाहित जीवन अगर आदमी के लिए स्वर्ग बन सकता है तो कभी-कभी नर्क भी बन जाता है—तेरे मस्तिष्क से जब प्रतिशोध का नशा उतरेगा तो उस लड़की को तू अपनी पत्नी और प्रेयसी बनाने का प्रयत्न करेगा . . .लेकिन तुम दोनों के बीच जो दरार पड़ चुकी होगी उसे तू कभी न पाट सकेगा क्योंकि स्त्री सब कुछ सह सकती है मगर पति का प्रतिशोध नहीं।''

''तो फिर मैं क्या करूं?''

''मैं तुझे वचन देता हूं कि अगर वह किसी राजा की भी बेटी है तो मैं उसे तेरी जीवन-संगिनी बना दूंगा . . .क्योंकि जब तक तुझे वह नहीं मिल जाएगी . . .तेरे भीतर प्रतिशोध नाम का पशु जीवित रहेगा . . .लेकिन उसे पाने से पहले तुझे न केवल दुनिया वालों के सामने बल्कि स्वयं अपने आपसे भी एक्टिंग करनी पड़ेगी कि तुमने अपने आपको बदल लिया है . . .और जब तू बदलने का अभिनय आरम्भ करेगा तो तुझे अनुभव होगा कि वह अभिनय धीरे-धीरे तेरी प्रकृति बनता जा रहा है क्योंकि दुनिया का कोई भी आदमी मूल रूप से बुरा नहीं होता . . .तुझे यह 'भटकन' तेरे चाचा और चाची से मिली है—तू स्वयं दिल का कितना अच्छा है इसका तूने कभी अनुमान ही नहीं लगाया। तू अपने आपका बदलने का प्रयत्न कर . . .फिर देख अगर तुझे अपने बदलते हुए जीवन में स्वयं ही आनन्द न आने लगे तो कहना . . .और यही तेरे भीतर छुपे शरीफ इन्सान की वास्तविकता होगी।''

''मैं पूछता हूं—इस भाषण का परिणाम क्या है?''

शेष पृष्ठ ४८ पर

बन्द करो बकवास
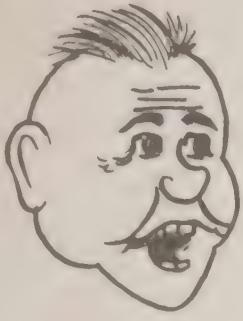
माचू पीचू
रूहानी बाबा

कहानी एवं चित्रांकन: रघुबीर सिंह

माचू,पीचू ,मिस कटर, नासपीटा, बोलोराम और झिलमिल वालों का चेला मिस्टर रगड़ू अपने कमरे में बैठे हुए गप-शप लड़ा रहे हैं।

अबे रगड़ू, तू रूहानी बाबा के आगे अपना माथा रगड़ता रहता है, अगर हमारी बेरोज़गारी दूर कर सकें तो हम भी अपना माथा रूहानी बाबा के आगे फोड़ें।

अबे रगड़ू रगड़-रगड़ कर एक बटा दो हो गया है। ये कौन-सा अब तक अमीर हो गया है।

अबे एक बटा एक की औलाद खबरदार जो मेरे रूहानी बाबा जी के बारे में कुछ भी कहा, मैंने आज तक उनसे कुछ माँगा ही नहीं और जो माँगा है वह मुझे मिला है।

तो मुझे रूहानी बाबा के पास ले चलो मैं उनसे एक - सौ सोने के बिस्कुट माँगूंगी।

मैं तो माँगूंगा कि मुझे भूत-प्रेतों से डर न लगे और वह मेरे दोस्त बन जाये।
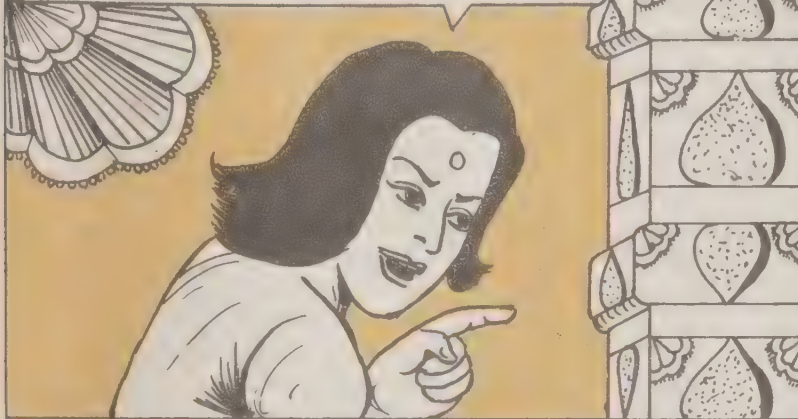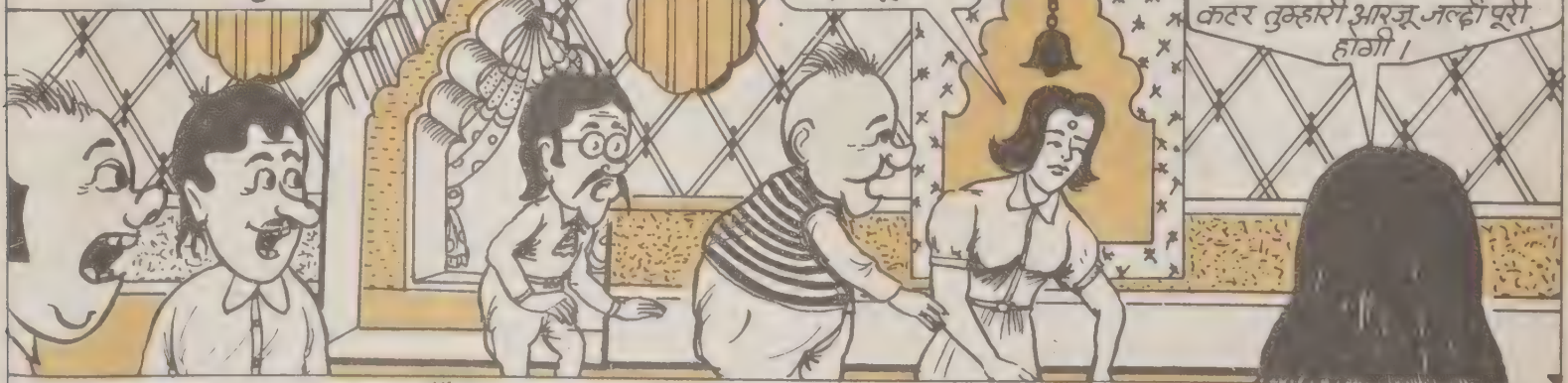
महाराज मैं क्या करूं, जिससे मैं बांझ औरत को बच्चा पैदा होने का वरदान दे सकूं।
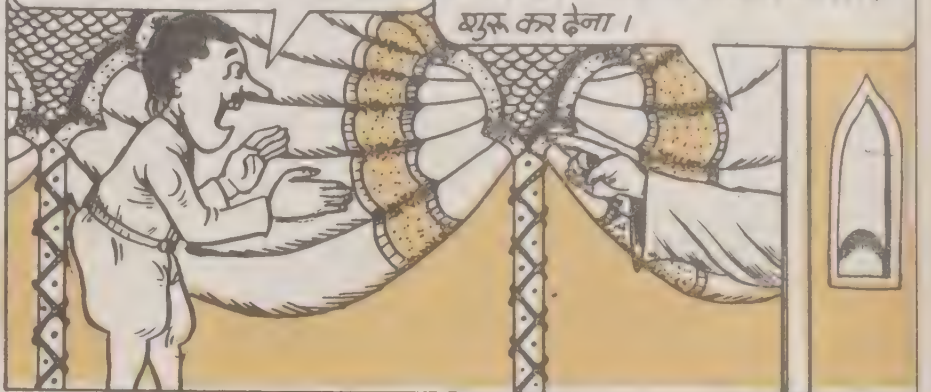
रूहानी बाबा जी के यहाँ से आने के बाद दूसरे दिन ही मिस कटर एक तालाब के किनारे आटे और शक्कर की एक सौ एक गोलियाँ बना कर सूर्य की ओर मुँह करके मछलियों को डालती है और साथ ही रूहानी बाबा जी का बताया हुआ मंत्र पढ़ती है-

अभी उसे गोलियाँ डालते हुए दस-बारह दिन ही होते हैं कि वो देखती है एक गाड़ी बड़ी तेज़ी से उसके पास एक अटैची गिराकर आगे चली गई है जिसके पीछे पुलिस की जीपें लगी हुई हैं।
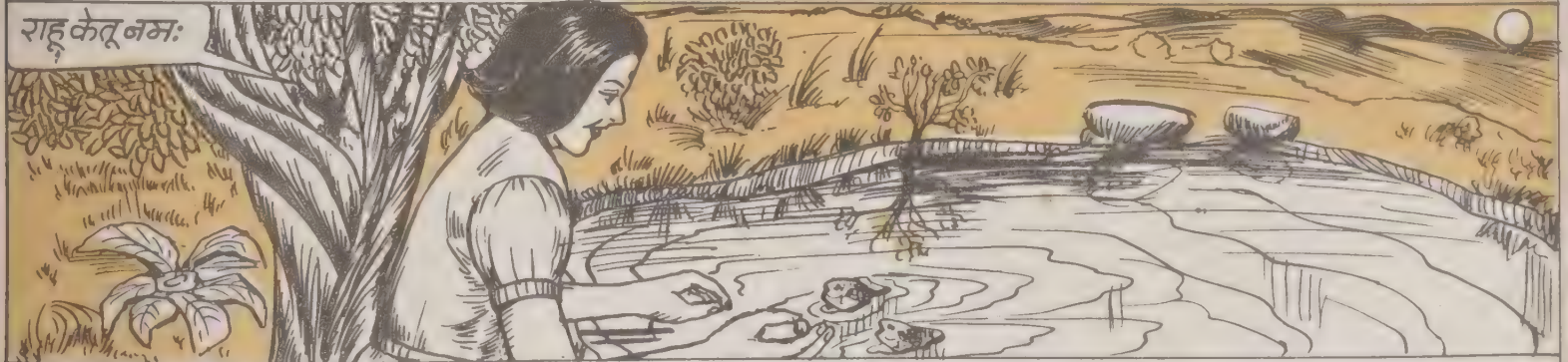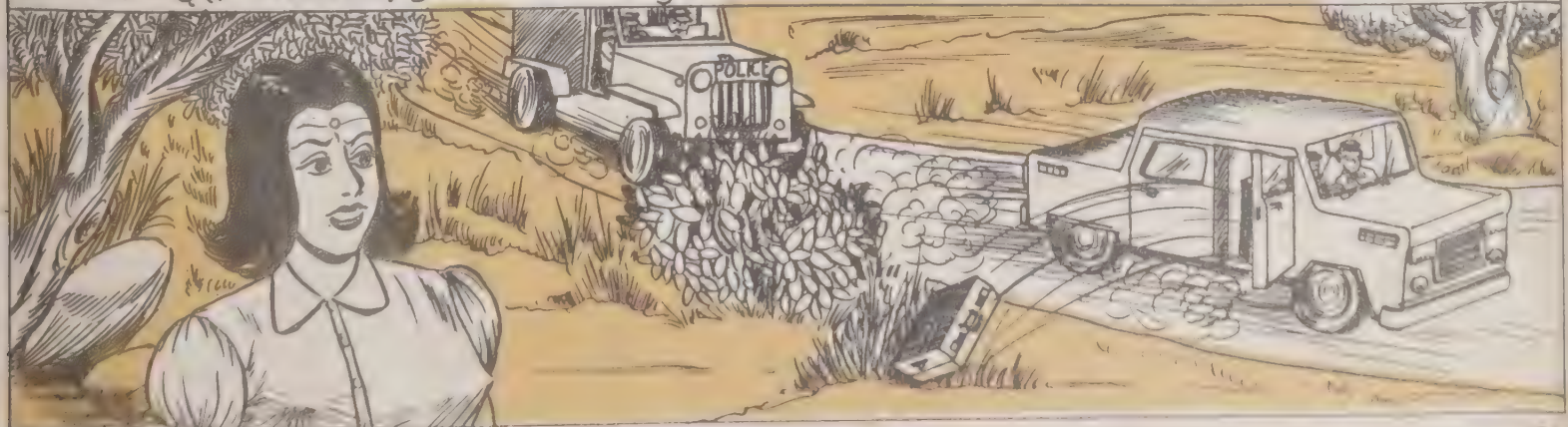
मिसकटर जैसे ही अटैची खोलती है ये देखकर हैरान हो जाती है कि अटैची में सोने के बिस्कुट भरे हुए हैं। वह अटैची लेकर सीधी घर आती है और कहती है -
रूहानी बाबा जी की जय हो। ओ मेरे बाँसो। मेरी तो मुराद पूरी हो गई, ये देखो सोने के बिस्कुट!
ले उसे तो सोने के बिस्कुट मिल गये। ओ पीचू, तोरी की औलाद, मूर्ख.., भिखमंगे तूने ही रूहानी बाबा जी से शांति माँगी थी।
तो शांत रहो, फिर कभी रूहानी बाबा जी से कुछ माँग लेंगे।
नासपीटा दो दिन दो रात से नजर नहीं आ रहा, कहीं भूतों ने उसका बोलोराम तो नहीं कर दिया।
चलो उसे ढूँढते हैं। कब्रिस्तान में होगा।
नहीं उसे बाद में ढूँढेंगे। आज रात तुम सब मेरे साथ फाईव स्टार होटल में गुजारो। मेरे पास बहुत माल है।
पर नासपीटे का कहीं पता नहीं, उसे ढूँढना चाहिये।
गोली मारो नासपीटे को, उसकी वजह से हम अपने प्रोग्राम का नास नहीं पीट सकते, उसे फिर ढूँढ लेंगे। आज रात हम सब से महंगे होटल में मजे करेंगे।
रात पड़ते ही सारे होटल में खाते-पीते हैं।
दूसरी ओर नासपीटा अपने मंत्र से एक भूत को दोस्त बना लेता है। नासपीटा अपने दोस्त भूत से कहता है -
भूत महाराज बताओ मेरे दोस्त इस समय कहाँ हैं?
दोस्त, वह इस समय फाईव स्टार होटल में मिस कटर की दी हुई पार्टी के मजे ले रहे हैं और मिसकटर ने आपको गाली भी दी है। उसे सोने के बिस्कुट मिल गये हैं।
तो यह बात, मिसकटर को सोने के बिस्कुट मिल गये हैं।
हाँ हजूर, आप आज्ञा दें तो मैं उसके सोने के बिस्कुट गायब कर दूँ!
हाँ सोने के सारे बिस्कुट और जो रकम उसके पास कैश है, उसको भी गायब कर दो।

दूसरी ओर होटल में मिस कटर कहती है-
खाओ बॉसो और खाओ, दिल खोल कर खाओ, कहो तो मैं ये होटल खरीद लूँ। मेरे पास बहुत पैसा है।
अब पेट में तो कोई चीज़ जाती नहीं कहो तो मुर्गों को पेट पर बाँध लें?

उनकी बात सुनकर बैरा कहता है-
हजूर पेट के ऊपर मुर्गे बाद में बाँधना, पहले जो, अब तक खाया है उसके पैसे दे दीजिए।
अबे बिल के बच्चे हम बिल की रकम के अलावा हर एक बैरे को टिप में एक-एक सोने का बिस्कुट देंगे।

अबे उल्लू के पर्खे, हमें बिल देने के लिये कह रहे हो कहो तो हम ये सारा होटल इसी वक्त खरीद लें, ये लो हमारा पर्स, जितनी रकम चाहो निकाल लो।

बैरा पर्स में हाथ डालता है तो उसे उसमें से कुछ नहीं मिलता क्योंकि सारी रकम भूत गायब कर चुका होता है। पर्स खाली देखकर बैरा कहता है-
मेम साहब इसमें तो कुछ भी नहीं है और पार्टी आपने अपनी ओर से आधे होटल को दे दी है।

बैरे की बात सुन कर बोलेराम कहता है-
अबे कंगले, अक्ल के अँधे तो थे ही अब आँख के अंधे भी हो गये हो, गौर से देखो पर्स में तो माल ही माल भरा पड़ा है।
अबे ओ खरबूजे, अँधे तुम हो। इसमें माल तो नहीं है मुझे तो तुम्हारा कोई सुन-हरी जाल लगता है।

सभी बारी-बारी से पर्स को देखते हैं, पर्स खाली देखकर माधू कहता है-
अबे मूर्ख, तुमने हमारे पर्स में से माल निकाल लिया है और कहते हो कि पर्स खाली है।

अबे सीधी तरह हमारे बिस्कुट और कैश वापिस कर दो, नहीं तो हम तुम्हें रगड़ देंगे। जानते नहीं मेरा नाम रगड़ू है।

शोर सुनकर वहाँ लोग इकट्ठे हो जाते हैं तो बैरा उनसे कहता है, जिन लोगों ने तुम्हें पार्टी दी है ये कंगले हैं। तुम सब अपना-अपना बिल दो। ये सुनकर लोग तथा बैरे उन सब की पिटाई करते हैं।

इतनी देर में वहाँ होटल का मैनेजर आता है और कहता है -
मिस कटर तुम हमारे होटल में पोचा और झाड़ू लगाओ और ये यारों हमारे झूठे बर्तन साफ करेंगे।
हुजूर इस वक्त तो इतने जूते पड़े हैं और इतनी पिटाई हुई है कि हम चल भी नहीं सकते तो तुम्हारे होटल का काम कैसे करेंगे?
अब आप हमें जाने दें हम आप से वादा करते हैं कि ठीक होते ही एक महीने तक हम आपके होटल में बर्तन साफ करेंगे और मिस कटर झाड़ू लगायेगी।
अच्छा ठीक होने के बाद तुम सभी जरूर आ जाना।
दूसरी ओर नासपीटा कब्रिस्तान में बैठा अपने दोस्त से कहता है -
यार मजा आ गया। तुमने उनके पर्स से नगदी तथा सोने के बिस्कुट गायब कर दिये। उन्हें जरूर होटल में जूते पड़े होंगे। मैं सुबह जाकर उनका हाल देखूँगा।
हुजूर अब आप सुबह उनका हाल नहीं देख सकते क्यूँकि अब आप मेरे पक्के मित्र बन गये हो इसलिये मैं अपनी कब्र के साथ ही आपकी कब्र भी बना रहा हूँ।
ओ मेरे बाप मुझे बक्श! मुझे तेरी दोस्ती नहीं चाहिये।
नासपीटा इतना कहते ही वहाँ से भागता है।
रूहानी बाबा जी बचाओ--।
घर आकर नासपीटा देखता है सभी की पट्टियाँ बँधी हुई हैं और सभी, दर्दों की वजह से विभिन्न-विभिन्न राग अलाप रहे हैं।
?
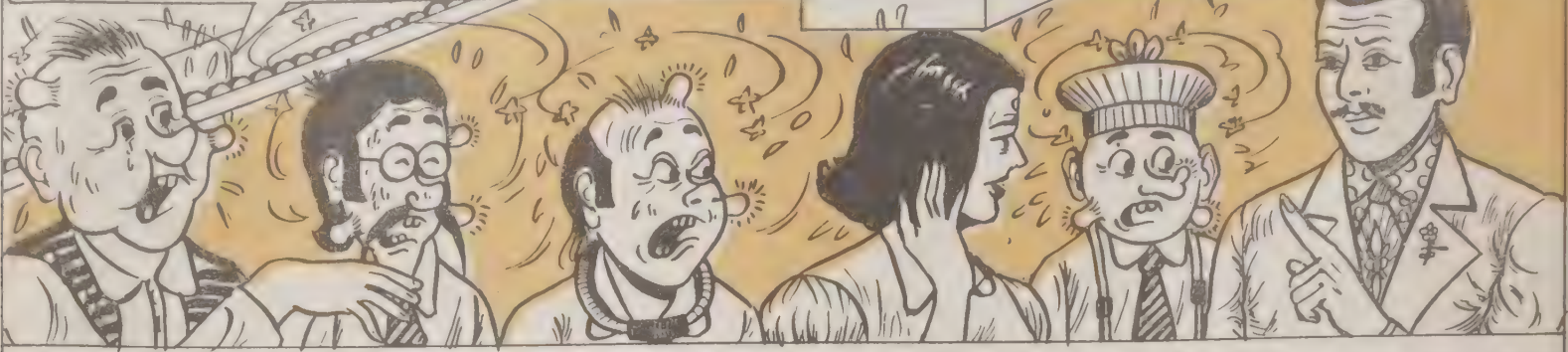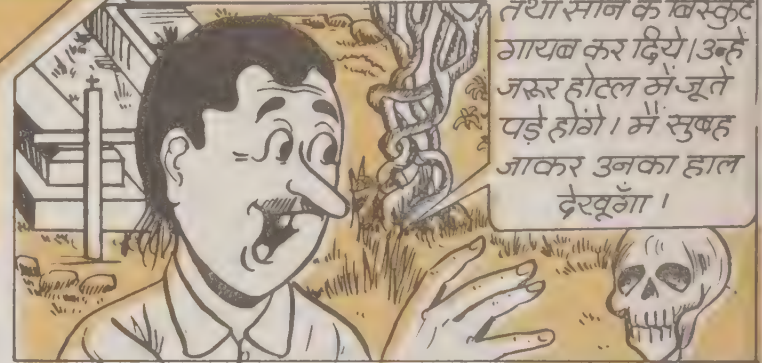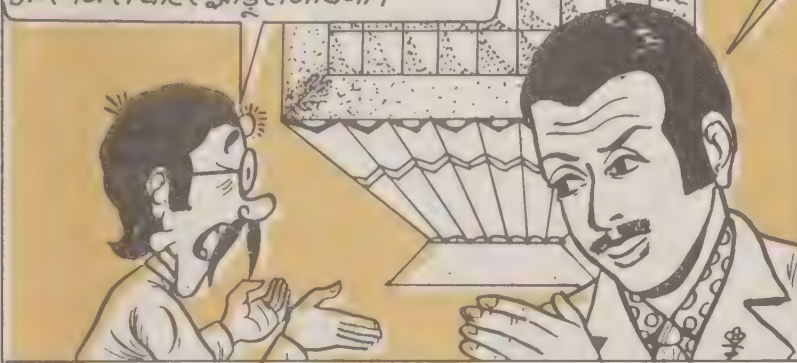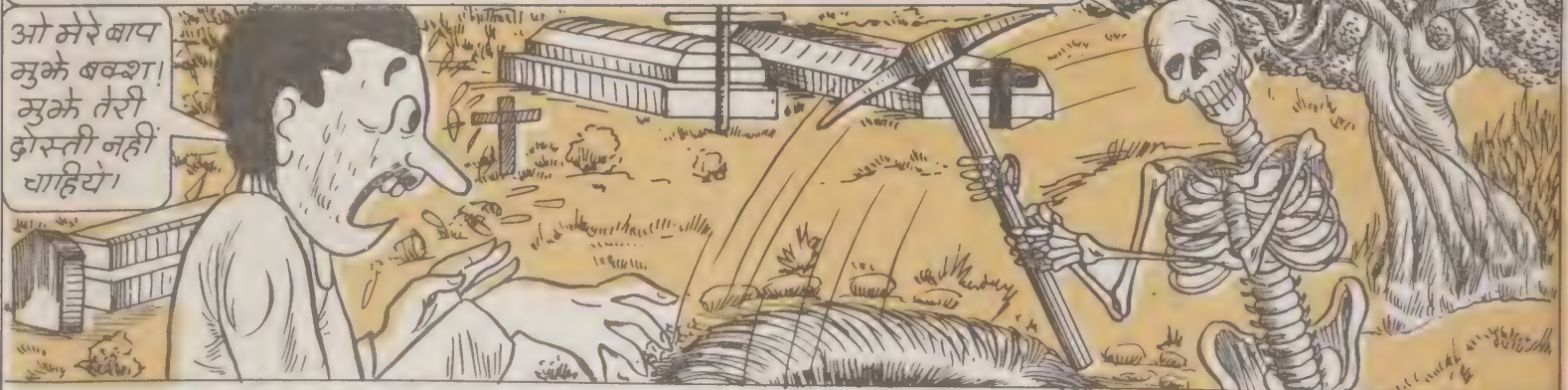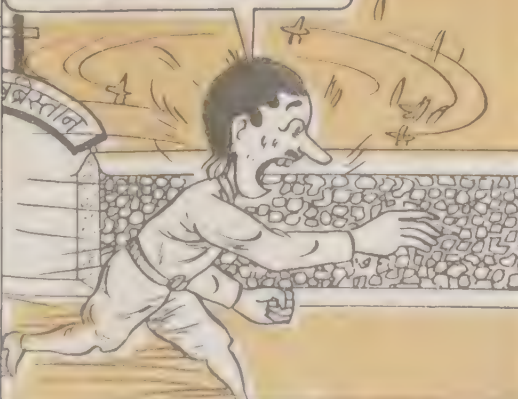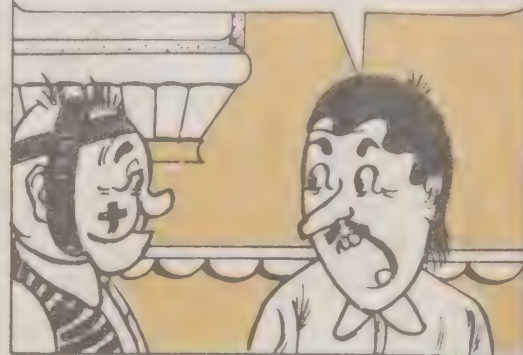
डा० बोलोराम जी, रूहानी बाबा जी व.. जो मंत्र आपने मेरी पत्नी को पानी में घोलकर पिलाया था, उसके कारण मेरी पत्नी के दो जुड़वाँ लड़के हुए हैं।
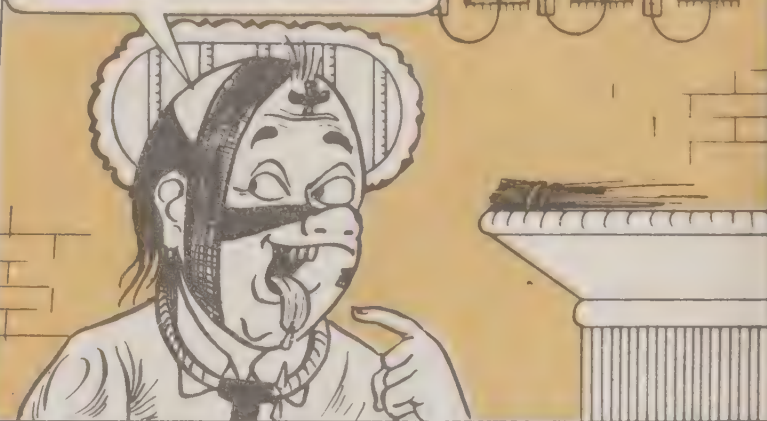
यह कौन-सी बड़ी बात है यह लीजिये एक हज़ार दो रूपये आपके और पाँच सौ एक रूपये रूहानी बाबा जी को मेरी ओर से तुच्छ भेंट।
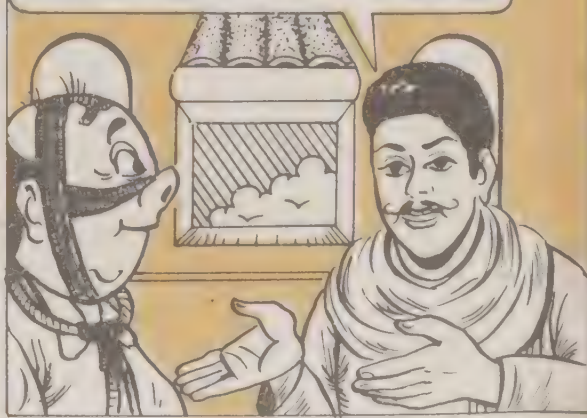
सभी चाय पीकर रूहानी बाबा जी के पास जाकर अपनी-अपनी आपबीती सुनाते हैं तो रूहानी बाबा जी कहते हैं -
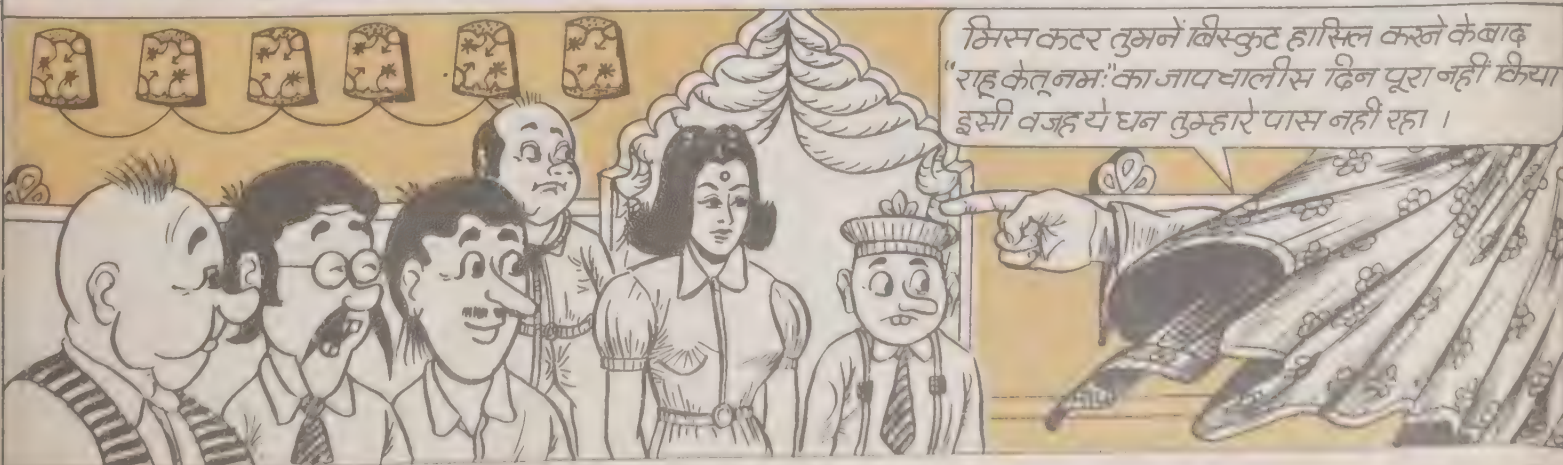
रूहानी बाबाजी भूत से मेरी रक्षा करें।
नासपीटे, हमने तुम्हें पहले भी कहा था भूत-प्रेतों से दोस्ती अच्छी नहीं।
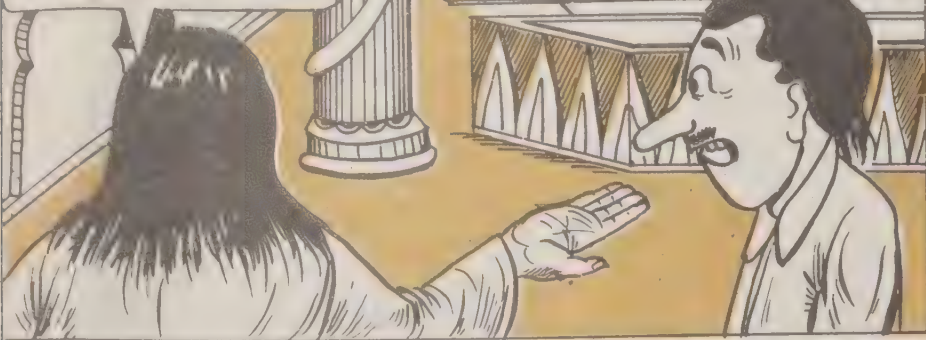
बाबा जी आप के मंत्र के चमत्कार से मेरे एक ग्राहक के जुड़वाँ लड़के हुए हैं, ये इक्यावन रुपये उन्होंने आप के लिये दिये हैं। बाबा जी आप ऐसा ही कोई चमत्कारी मंत्र मुझे और दें आपकी बहुत कृपा होगी।
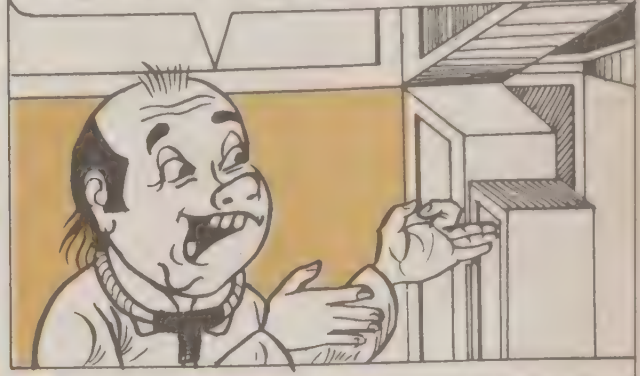
डा० बोलोराम, मैं तुम्हें, और मंत्र नहीं दे सकता क्यूँकि तुम पाँच सौ एक रू० की बजाय मुझे इक्यावन रूपये दे रहे हो।

रूहानी बाबा जी की जय।

बाबाजी हमें फिर से वरदान दें और हम सब को जूते बहुत पड़ते हैं हमें उनसे बचायें।
जैसा बीज बोओगे वैसा ही काटोगे। कोई नेक काम धंधा करो, दीन दुखी लोगों की सेवा करो, वरदान हर बार नहीं मिलते।

बाबा जी मेरा दोस्त भूत से बहुत दुखी है कृपया उसे भूत से बचायें।
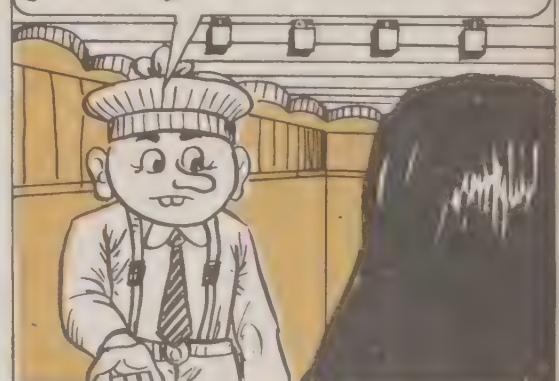
मैं एक यंत्र देता हूँ इसे जेब में रखने से भूत नासपीटे का कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा और न ही कभी तंग करेगा।
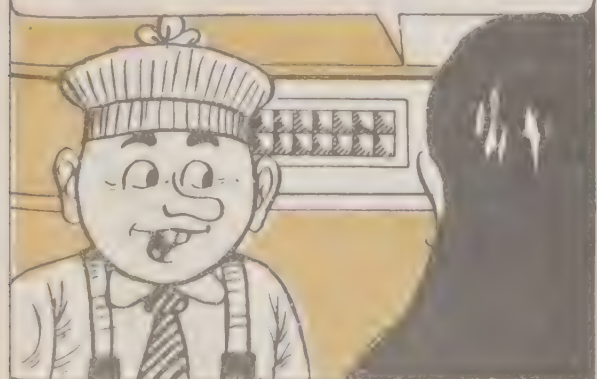
बच्चों आगे से तुम में से मेरे पास कोई न आये जो कुछ पूछना हो, पत्रों द्वारा पूछ लिया करो। अब तुम सब जाओ हमारे भजन का समय हो रहा है।
समाप्त

सड़क पर एक पत्थर

सुबह होते ही उत्सुक्ता के साथ राजा महल की खिड़की पर आया, जिसके नीचे से वह सड़क गुज़रती थी। एक अजीब दृश्य था। सड़क पर एक बड़ा पत्थर था! पत्थर के चारों ओर भीड़ थी। राजा थोड़ा मुस्कराया और सोचने लगा-"अब मुझे पता लग जायेगा कि कौन वफादार है!"

दिनभर बैलगाड़ियाँ और घुड़सवार और महान वीर और विद्वान पण्डित पत्थर के पास से गुज़रते रहे। कई उसे गाली देने या लात मारने के लिए रुके लेकिन फिर भी किसी ने उस पत्थर को नहीं हटाया। किसी ने उस पत्थर के बारे में कुछ नहीं किया क्योंकि सब बहुत मतलबी थे। किसी ने यह नहीं सोचा कि वह उसका काम है।

दिन धीरे धीरे गुज़रा। हरेक घंटे के बाद राजा खिड़की पर जाकर देखता कि पत्थर हटा दिया गया है कि नहीं. लेकिन पत्थर हर बार वहीं का वहीं था। आखिर सूरज डूबने लगा। दुखी राजा एक बार फिर खिड़की पर गया। पत्थर अभी भी वहीं था। केवल एक बूढ़ा चरवाहा अपने भेड़ बकरियों को सड़क पर लाते हुए दिखाई दे रहा था।

"यह इनाम उस आदमी के लिए है, जो दूसरों का इतना ध्यान रखता है कि इस पत्थर को हटा दिया।"

प्यार के साथ
राजा

"ज्यादा तर जितने संत मैं जानता हूँ सब छोटे लोग थे। बिना कोई उन्हें जाने या उनके बारे में सुनें, खुद अपने आप जो जरूरी काम दिखे, वे करते रहते थे। लेकिन ईश्वर के पास एक बहुत बड़ी किताब है, और वे सब कुछ देख रहे हैं, और हर चीज़ लिख रहें हैं, और वे सबको उनके कार्य अनुसार इनाम देंगे।"

साभार - टू कामिन्स्का

खेल खेल में

आल इंगलैंड बैडमिंटन में चीनी खिलाड़ियों का प्रभुत्व

नवीन चन्द गोयल

यह हकीकत अब और अधिक स्पष्ट हो गई है कि बैडमिंटन में चीनी खिलाड़ियों ने बहुत तीव्रता से प्रगति की है। केवल दो वर्ष पूर्व चीन अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन मंच पर उतरा था, तब उसके स्तर के बारे में विश्व अन्जान था। इन दो वर्षों के अल्प समय में खेली गई लगभग सभी प्रतियोगिताओं में उसके खिलाड़ियों का प्रदर्शन प्रशंसनीय रहा है। यूरोप एवं एशिया के नामी—गरामी खिलाड़ी चीनी खिलाड़ियों के कला—कौशल व दमखम के सामने नतमस्तक हो गए हैं।

पिछले दिनों वेम्बले (इंगलैंड) में पांच दिवसीय (23 से 27 मार्च) आल इंगलैंड बैडमिंटन चैंम्पियनशिप में पिछले वर्ष के रनर्स अप लुआन जिन (चीन) ने विश्व—चैंम्पियन डेनमार्क के मार्टन फ्रास्ट को 15—2, 12—15 15—4 से पराजित कर पिछले वर्ष की हार का बदला ले लिया। उल्लेखनीय है कि 1982 के फाइनल में फ्रास्ट ने जिन को 11—15, 15—2 व 15—7 से पराजित किया था।

यह प्रतियोगिता 1899 में आरम्भ हुई थी और इसे अनधिकृत तौर पर विश्व प्रतियोगिता का दर्जा प्राप्त है। इसके विजेता का ठीक वही मान-सम्मान, स्थान होता है जो इंगलैंड में ही खेली जाने वाली टैनिस की प्रतियोगिता—विम्बलडन के विजेता का होता है।

आरम्भ में इस प्रतियोगिता पर यूरोपियन देशों के खिलाड़ियों का बोलबाला था पर पिछले कई वर्षों से एशियाई देशों का प्रभाव बढ़ा है। इंडोनेशिया, मलेशिया, भारत और अब चीन के खिलाड़ियों ने यूरोप के प्रभाव को लगभग समाप्त कर दिया है।

इस वर्ष की प्रतियोगिता को काफी हद तक प्रभावित करने वाली घटना थी—दूसरी वरीयता प्राप्त इंडोनेशियाई खिलाड़ी लीम स्विकिंग द्वारा बीमारी के फलस्वरूप अन्तिम क्षणों में प्रतियोगिता से हटना। किंग 1976, 77 व 80 में रनर्स-अप तथा 1978, 79 व 81 में टाइटल— विजेता रहा था।

किंग के हटने से कई दावों का रूप ही बदल गया। सर्वाधिक लाभ भारत के प्रकाश पादुकोने को हुआ जिसे वरीयता आधार पर किंग से क्वाटर फाइनल में भिड़ना पड़ता। किंग की अनुपस्थिति में वह सेमी-फाइनल तक पहुंच गया।

जिन बनाम प्रकाश पादुकोने :—

फाइनल में प्रवेश करने के पूर्व जिन ने सेमी-फाइनल चक्र में भारत की एकमात्र आशा किरण एवं 1980 के विजेता प्रकाश पादुकोने को 15-6 व 15-7 से सरलता से पराजित किया। प्रकाश के बैक-हैंड पर जिन ने ओवर-हैड-स्मैशों की बौछार कर उसे विचलित कर दिया।
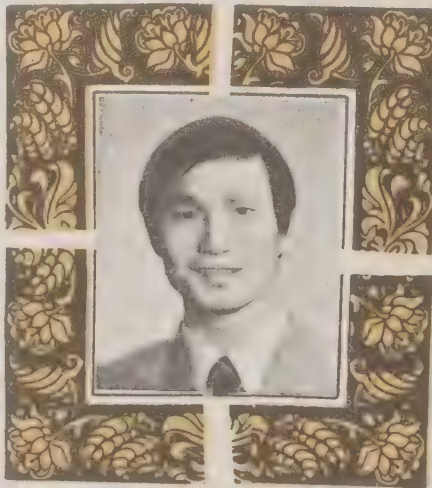
इसके अतिरिक्त 'जिन' ने हाफ-स्मैश का भी सुंदर उपयोग किया। किसी समय हाफ-स्मैश प्रकाश का अचूक-शाट हुआ करता था पर जिन के सामने उसे अपने ही तुरुप का निशाना बनने को वाध्य होना पड़ा।

उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष भी जिन—प्रकाश का मैंच सेमी-फाइनल चक्र में हुआ था पर तब प्रकाश संघर्षपूर्ण मैच में 5-15, 12-15 से पराजित हुआ था। पिछले एक वर्ष में जहां जिन के खेल में आशातीत सुधार हुआ वहां प्रकाश के खेल में धीमापन व गिरावट आयी।

आखिर प्रश्न उठता है कि भारत कब तक प्रकाश पर ही सारी उम्मीदें लगाए रहेगा? प्रकाश के बाद बैडमिंटन में भारत को प्रकाशमान करने के लिए संबंधित अधिकारियों की क्या योजना है? क्या सैयद मोदी व अन्य उदीयमान खिलाड़ियों को उच्च-स्तरीय प्रशिक्षण देकर उनके स्तर को अंतर्राष्ट्रीय-स्तर [illegible] पहुंचाने का प्रयास करना उनका द[illegible] नहीं है।

प्रकाश के अतिरिक्त जिन भा[illegible] खिलाड़ियों ने इस प्रतियोगिता में भाग [illegible] वे सब के सब प्रथम चक्र में ही प्रतियो[illegible] से बाहर हो गए।

विमल कुमार इंडोनेशिया के भूतपूर्व [illegible] खिलाड़ी इकुक सुगियार्तो से एकतरफा मै[illegible] 3-15, 4-15 से पराजित हुए जबकि उदीय[illegible] पार्थो गांगुली को थाइलैंड के कुकासेमकिज[illegible] 7-15, 11-15 से हराया।

भारत के वर्तमान नेशनल-चैम्पियन [illegible] नम्बर दो खिलाड़ी सैयद-मोदी भी कोई [illegible] खेल प्रदर्शन दिखाने में असफल रहे। इं[illegible] के नम्बर दो के खिलाड़ी निक येट्स ने [illegible] 15-10, 15-5 से पराजित कर उस परा[illegible] का बदला ले लिया जो मोदी ने उसे [illegible] वर्ष राष्ट्रकुल खेलों (ब्रिस्बेन) के फाइनल [illegible] की थी। उस प्रतियोगिता में येट्स को दू[illegible] वरीयता तथा मोदी को छठी वरीयता प्र[illegible] की गयी थी।

महिला वर्ग :—

पुरुषों की भांति महिला वर्ग में भी भा[illegible] का प्रतिनिधित्व असफल रहा। भूतपूर्व नेशन[illegible] चैम्पियन अमीधिया चीन की शु रोंग से 7-[illegible] व 2-11 से पिट गयी जबकि उदीयम[illegible] राधिका बोस पहला सैट जीतने के बावज[illegible] इंगलैंड की फियोना इलियट से 11-8, 1-1[illegible] 1-11 से हार गयी।

भारतीय खिलाड़िनें भले ही कुछ न क[illegible] पायी हों, पड़ोसी राष्ट्र चीन की खिलाड़ि[illegible] ने महिला एकल स्पर्धा में अपना पूर्ण वर्च[illegible] कायम कर दिखाया।

सेमी फाइनल में प्रवेश पाने वाली चा[illegible] खिलाड़िनें चीन की ही थीं। पिछले वर्ष [illegible] चीनी खिलाड़ियों ने ऐसा ही चमत्कार दिखा[illegible] था जबकि क्वाटर फाइनल के आठ स्थानों [illegible] से सात स्थानों पर तथा सेमी फाइनल में ती[illegible] स्थानों पर चीनी खिलाड़ी थे।

पिछली विजेता एवं प्रथम वरीयता प्राप्[illegible] झांग एलिंग ने सेमी फाइनल में शु रोंग तथ[illegible] फइनल में वू जियान्कू को परास्त कर प्रथ[illegible] स्थान प्राप्त किया।

द्वितीय जवाहरलाल नेहरू स्वर्ण कप फुटबाल प्रतियोगिता

इस वर्ष कोचीन में आयोजित द्वितीय नेहरू स्वर्ण-कप प्रतियोगिता के आरम्भ होने के पूर्व ही फुटबाल—जानकारों ने अन्दाज लगा लिया था कि भारतीय उप-महाद्वीप में पहली बार खेलने वाली हंगरी की टीम विजयी रहेगी। और हुआ भी ऐसा ही। फाइनल में चीन को 1—2 से पराजित कर हंगरी ने सुनहरा कप जीत लिया। कप भले ही यूरोप गया, पर फुटबाल—प्रेमी दर्शकों की वाहवाही चीन के पक्ष में रही।

हंगरी की विजय के पीछे कई कारण थे उसके 18 सदस्यीय दल में केवल चार विद्यार्थी थे। बाकी 14 खिलाड़ी पेशेवर एवं अंतर्राष्ट्रीय मैचों का काफी अनुभव रखते थे। कई खिलाड़ी 80 से भी अधिक अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलने का अनुभव प्राप्त कर चुके थे। विपरीत परिस्थियों में इन दिग्गज खिलाड़ियों का मार्ग-दर्शन ही हंगरी को विजयी बना गया। ज्ञातव्य है कि हंगरी एक बार (1938 में) विश्व कप उप-विजेता तथा दो बार (1952 व 1968 में) ओलम्पिक चैम्पियन रहा।

अपने पहले ही मैच में चीन के विरुद्ध ०-2 से पराजित होकर भी हंगरी की टीम निराश नहीं हुई बल्कि बदली हुई पस्थितियों का सही मूल्यांकन कर अपनी रणनीति में कई परिवर्तन कर लिए। अगले मैचों में विश्व-चैम्पियन इटली की युवा टीम को 3-1 से तथा स्थानीय भारत को 2—1 से हराकर सैमी-फाइनल में प्रवेश पाया जहां उसका मुकाबला यूरोप की ही अन्य टीम रुमानिया से हुआ। रुमानिया को 3—1 से पराजित कर हंगरी फाइनल में पहुंचा।

इसके विपरीत की टीम अपेक्षाकृत युवा एवं अनुभवहीन खिलाड़ियों से युवत थी जिनकी औसत आयु 20 वर्ष से भी कम थी। चीनी टीम में पिछले वर्ष रनर्स-अप रही अथवा नवम् एशियाड में खेली टीम का एक सदस्य नहीं था दरअसल इस टीम को आगामी जून में मैक्सिको में सम्पन्न होने वाले 'विश्व युवा फुटबाल चैम्पियनशिप' की तैयारी पूर्वाभ्यास हेतु भेजा गया था। फिर भी यह टीम बिना कोई मैच हारे फाइनल तक अपेक्षाकृत सरलता से पहुंची।

सेमी-फाइनल के संघर्षपूर्ण मैच में चीन ने अफ्रीका की सशक्त टीम कैमरून को जिस कुशलता व निपुणता के साथ पराजित किया, वह उसके खिलाड़ियों के संकल्प, समर्पण एवं कड़े परिश्रम का द्योतक था।

कैमरुन की टीम की सशक्ता का अंदाज इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि उसकी यह टीम गतवर्ष विश्वकप में एक भी मैच नहीं हारी थी और केवल गोल औसत आधार पर सुपर-लीग में पहुंचने से वंचित हो गयी थी। इस बार उससे आशा लगायी गई थी कि फुटबाल में यूरोपियन श्रेष्ठता को वह कड़ी चुनौती प्रदान करेगी पर वह व्यक्तिगत प्रवीणता से आगे बढ़ न सकी। उसके गोलकीपर सांगू के बचाव लाजवाब रहे।

चीन की इस आश्चर्यजनक सफलता के कारणों का विवेचन करना भी आवश्यक है। सर्वप्रथम, उसने फुटबाल की यूरोपियन या दक्षिण अमरीकन शैली का अनुसरण करने की अपेक्षा अपनी ही विशिष्ट शैली विकसित की जो उनकी आवश्यकता व उपलब्ध खिलाड़ियों के गुण दोषों को मद्देनजर रखकर सूझ-बूझ से बनाई गई है।

चीन की रक्षा-पंक्ति काफी तेज व मजबूत है। उनका गोलकीपर झिगाव सम्भवतः एशिया का सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर है। कैमरुन के आक्रमण को उसने जिस खूबी से निष्फल किया, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। घायल होने के कारण वह फाइनल में नहीं खेल सका अन्यथा इसकी कहानी भी उल्टी हो सकती थी।

चीन के फारवर्ड-खिलाड़ियों में 20 वर्षीय छात्र ली हुआजुन के विशेष रूप से प्रभावित किया। उसने कई बार अकेले दम पर विपक्षी रक्षा-पंक्ति को छिन्न भिन्न कर गोल करने के अवसर बनाए। उसकी ट्रेनिंग, गति व प्रहार शक्ति ने कई रक्षकों को बौखलाकर मानसिक-संतुलन खो देने को बाध्य कर दिया।

जहां तक भारतीय टीम के प्रदर्शन का प्रश्न है, वह न तो उत्साहवर्धक था और न निराशाजक। स्थानीय दर्शकों का पुरजोर समर्थन मिलने के बावजूद भारतीय टीम एक भी अंक प्राप्त न कर सकी और सात देशों की प्रतियोगिता में अंतिम स्थान पर रही।

भारत के पक्ष में यह तर्क दिया जा सकता है कि उसके वर्ग में स्पर्धा बहुत कड़ी थी। भारत के वर्ग में से दो टीमें अन्तः विजेता व उपविजेता बनीं तथा तीसरी—इटली वर्तमान विश्व-चैम्पियन है। इतनी कड़ी चुनौती के बावजूद भारतीम कोई भी मैच एक गोल से अधिक के अन्तर से नहीं हारी जो कम गौरव की बात नहीं। इसका श्रेय रक्षक मनोरंजन भट्टाचार्य एवं आलोक मुखर्जी के उत्तम रक्षण को जाता है।

भारत की एक उपलब्धि यह भी रही कि उसने विजेता एवं उपविजेता (हंगरी एवं चीन) पर एक-एक गोल दागने में सफलता पायी।

पिछले अंक में

आपने पढ़ा कि सिलबिल पिलपिल को विश्वास नहीं होता कि सरकार ने फूलन देवी को पकड़ लिया है । उनका ख्याल है पुलिस ने नकली फूलन को पकड़कर लोगों को मूर्ख बनाने की कोशिश की है । वे फूलन की मदद करने का फैसला करते हैं । उनका ख्याल है कि फूलन चंडी का अवतार है और एक दिन प्रधान मंत्री बन जायेगी। हो सकता है खुश होकर उन्हें मंत्री बनाये । वे रात को दीवारों पर पोस्टर ल... देते हैं असली फूलन के नाम से ।
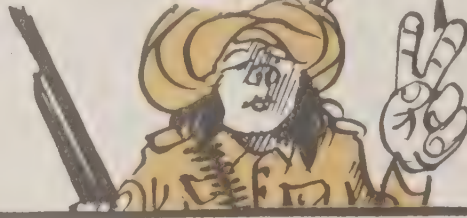
सारे शहर में तहलका मच गया है । सब यस... पोस्टरों की ही बात कर रहे हैं । पुलिस को प... ही नहीं लगा कि पोस्टर किसने चिपकाए हैं

देखो कऊन है । मैं क्या कह रिया था ?

ऐह । यह कैसे हो सकता है । जिन्दगी में पहली बार इनकी बात सच निकली । यह तो सचमुच ही फूलन देवी है । कल रात को ही पोस्टर लगे थे और आज ही यह यहां कैसे पहुंच गई । इसको कैसे पता लगा कि पोस्टर किसने चिपकाए हैं ? मुझे यह भी विश्वास नहीं था कि असली फूलन नहीं पकड़ी गई । इनकी हां में हां केवल इसलिए मिलाता रहा कि कहीं यह बुरा न मान जायें लेकिन···लेकिन···

मैं तुम दोनों के काम से बहुत खुश हूं। तुमने देश की जनता को गुमराह होने से बचा लिया । तुम्हें इसका फल जरूर मिलेगा । आई एम वेरी हैप्पी ।

साखछात चंडी देवी आकर म्हारे सामने खड़ी है । मैं मूर्ख खल कामी कैसे इनका स्वागत करूं । मुझे तो कोई प्रार्थना या अर्चना भी नहीं आती । अर्चना के नाम पर सिर्फ अर्चना सिनेमा हाल का पता आता है। मेरी जबान को जैसे ताला लग गया है ।

कल बुलु फ्लैगम का पन्त लाल मिली मिली यू गिरिधारा गिरिधारा गिरिधारा माकू कुसा छू··· मैं फूलन जी के अचानक प्रकट होने पर इतना हड़बड़ा गया हूं कि शब्द बगैर तरकीब के दिमाग में आ रहे हैं इन्हें ठीक क्रम में रखने से पता लगेगा कि मैं क्या सोच रहा हूं ।

हम फूलन को जान से खत्म कर देंगे । इस कांटे को हमेशा के लिए रास्ते से हटा देंगे फिर हिन्दुस्तान में अपना एकछत्र राज्य होगा—राजनीति मे न कोई अपना दोस्त होता है न दुश्मन ।
याडिओं थम दोनों को क्या हो गया है । बड़े भाग है तो फूलन देवी जी म्हारे घर में आई हैं और थम दोनों इनका स्वागत करना भूल कर आपस में कुछ गिटपिट किए जा रहे हो । क्या कहीं सपनों की दुनिया में खो गए हो ? होश में आओ इनका स्वागत करो, आवभगत करो, इनकी बातें सुनो, बैठने के लिए कहो, चाय पानी का इन्तजाम करो ।
क्या कहा, फूलन देवी जी खुद म्हारे घर में आई हैं ? प्रधान मंत्री म्हारे घर ?
हम फूलन को खत्म करना चाहते हैं और यह चूहा इसकी तरफदारी कर रहा है ।
यह म्हारे खिलाफ है ।
यह चूहा हमेशा पीठ पीछे प्रधान मंत्री से म्हारी चुगली करता रहता होगा और जरूर प्रधान मंत्री ने इसे गृहमंत्री या रक्षा मंत्री बनाने का वादा किया होगा।…भाई जी क्या समझे मौका अच्छा है…
दोनों दुश्मन खुद हमारे घर में मौजूद हैं । हमारे पिंजरे में मौजूद हैं-यह अवसर फिर बार-बार नहीं आएगा ।
हम चूक गए तो इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा । ऐक्शन लेने के लिए तैयार हो जाओ।
1 2 3
कैमरा
लाइट
ACTION
यह क्या ?
आज तुझे मैं जिन्दा नहीं छोड़ूंगा । मुझे गृहमंत्री पद से हटाना चाहती थी न तू ? मैं तुझे इस दुनिया से ही हटा दूंगा ।
ऐहेह ! चूहे तेरी अंतिम घड़ी आ गयी है । अपनी आखिरी इच्छा बता दे।अगर कानूनी अड़चन न आयी तो हम पूरी कर देंगे—मैंने एक बार घर में देखा था कि बिल्ली किस तरह चूहे को खेल-खेल कर मारती है,मैं भी तुझे वैसे ही मारुंगा ।
यह सब क्या है ?
ठहरो मुझे मत मारो । बेशक पुलिस के हवाले करो —मैं जालसाज जरूर हूं लेकिन हिंसा से दूर रहता हूं। मैं तुम्हें सारी बात बता देता हूं कि यह सब क्या चक्कर है । मैंने फूलन का भेष किस तरह धरा—और क्यों धरा ?
जल्दी बता वर्ना तेरा कचूमर निकाल दूंगा ।
भाई जी अगर यह फूलन नहीं है तो मैं भी इस चूहे को छोड़ देता हूं। गलतफहमी में हम इसे मारने लगे थे । बेचारा दिल का बुरा नहीं है ।
पुलिस डिपार्टमैंट की तरफ से गृहमंत्रालय से अपने याड़ियों को सर्टिफिकेट मिला है जिसमें पुलिस के मशहूर जालसाज सम्पतलाल को गिरफ्तार करवाने में मदद करने के लिए शाबाशी व धन्यवाद दिया गया है । इसी को कहते हैं ।'
बिल्ली के भागों छींका टूटा या अंधे के हाथ बटेर लगा ।
सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

फैण्टम - जंगल शहर

फ़ैन्टम का चिन्ह ।
जहां उसे उसने मारा था, वह सचमुच यहां था, चलता फिरता भूत ।
FALK & BARRY 2/2

'चलता फिरता भूत' इसका क्या मतलब है मि० वौंग ?
इसका मतलब है 'नहीं,' ताला अगर कोई बड़ा आदमी बहुत बड़े कुत्ते के साथ

कभी भी आए··· तो प्रेम से उसे दूध तुरन्त दे देना ।

'गुरु' से मिलने से पहले, मैं यह सोने का हार छुपा देता हूं ।
शू···जाकाल ।

मुझे किसने पुकारा ?

मैने ।
!
FALK & BARRY 2/3

!
FALK & BARRY 2/4

'फ़ैन्टम बुरों के साथ बुरा है' पुरानी जंगली कहावत ।
CLUNK
जैसे ही तुम्हारा दिमाग ठिकाने आ जाए जॉकाल, हम थोड़ी बात करेंगे ।

अब···बोलना शुरू करो जॉकाल ललोनी कहां है ?
ऊह···कौन ?
जैसे ही जॉकाल चाकू उठाता है···
इ इ

अगर तुम्हें अपना हाथ प्यारा है, तो दुबारा कोशिश न करना । समझे ?
उह··· हां ।

मैं···मैं ललोनी को नहीं जानता, वह कौन है ?
मै तुम्हें याद दिलाता हूं, जॉकाल ।

तुम दोनों नेजंगल में ग्रोबांगी के मोतियों के व्यापारी को लूटा था···।

फिर तुमने तेज के सोने के व्यापारी को लूटा···
तुम्हें याद ग्रा रहा है जॉकाल ?

मैंने··किसी को··नहीं लूटा ।
'किसी को' तत् तत्, बुरी याददाश्त । तुम ग्रौर ललोनी गुरु के लिए काम करते हो, जो जंगल की ठगी का प्लैन बनाता है ।

गु··कौन ?
हूं···यह छोटी सी क्या वस्तु है तुम्हारी जेब में । ठोस सोना ?
तुमने ग्रपने साथी ललोनी की इसके लिए हत्या कर दी । लूट का माल है न ? ठीक ।
नहीं··वो··मरा नहीं··उह··· सच ।

तुम मानते हो, तुम ललोनी को जानते हो ?
मैं कुछ नहीं मानता, तुम कौन हो ? ग्रन्धेरे में छिपे कोई ठग ?
जकाल, रोशनी में ग्राग्रो ग्रौर देखो !

फैन्टम ! चलता फिरता भूत ।
ग्रौर समय बरबा न करो, ललोनी कहां है ?

ललोनी··वहां है सपनों की दुनिया में !
ग्रफीम का ग्रड्डा ग्रौर गुरु ?

वहां है··· मेहरवान मैंने लूटा नहीं था···
जकॅाल मुझ से झूठ न बोलो— मैं तुम्हारा जज नहीं हूं ।

तुम्हारा फैसला जंगल में होगा, जहां तुमने जुर्म किया था !
यहां मेरी इन्तजार करो ।
ऊ···
पक्का कर दिया कि वह प्रतीक्षा करे ।

प्र० : आंखें बूढ़ी कैसे होती हैं ?

उ० : क्या आप यह पंक्ति पढ़ सकते हैं ? यदि आपकी आयु चालीस और पचास के बीच की है तो सम्भवतः आप तुरन्त पढ़ने वाले चश्मे की ओर हाथ बढ़ायेंगे। यदि ऐसा है तो निश्चय ही आप प्रेसवायोपिया कहलाने वाले बूढ़े करने वाली प्रक्रिया से गुजर रहे हैं।

अलग-अलग स्थानों पर रखी वस्तुओं को देख पाने के लिए, आप की आंख के भीतर के लेंस को अपना आकार बदलना पड़ता है, इसे अकोमोडेशन कहते हैं। एक नियन्त्रण करने वाली मांसपेशी दूर की वस्तु देखने के लिए लेंस को सपाट कर देती है साथ ही पास की चीज को देख पाने के लिए लेंस को अधिक गोल बना देती है।

जैसे-जैसे आयु बढ़ती है लेंस के ऊपर सैल की तहें चढ़ती जातो हैं जिससे सबसे पुराने सैल सबसे भीतरी तह में पहुंच जाते हैं साथ ही यह सैल आंख के लेंस या पुतली के बाहरी घेरे से उतनी ही अधिक दूर भी हो जाते हैं, आंख की पुतली पर किसी भी किस्म की रक्त नाड़ियां नहीं होतीं क्योंकि इनसे दिखाई देने में बाधा उत्पन्न होती है।

समय के साथ-साथ भीतरी सैल मर कर नष्ट हो जाते हैं और अपना लचीलापन खो देते हैं, जिससे पुतली उतनी ही सख्त हो जाती है और आंख की मांसपेशियों के लिए अकोमोडेशन उतना ही अधिक हो जाता है। इस अपवाद को सुधारने के लिए हम अपनी किताब को दूर-दूर किये जाते हैं जब तक की दूरी बेतुकी न हो जाये, और तब हमें अपने चश्मे का ध्यान आता है। चश्मा बाईफोकल भी हो सकता है जिसमें का दूसरा लेंस दूर की वस्तु को न देख पाने की आंख की कमी को पूरा करता है।

जीभ एक ऐसा यन्त्र है जो हाईड्रोजन इओनस का पता लगा लेती है। किसी तत्व में यह जितने अधिक होते हैं उसका स्वाद उतना ही खट्टा होना है। इसका यह मतलब भी है वह उतना ही ऐमाडिक भी होता है।

प्र० : क्या प्लास्टिक के जग में रखा दूध खराब हो जाता है तथा ट्यूब लाईट के प्रकाश का भी दूध पर कुछ प्रभाव होता है ?

उ० : प्लास्टिक जगों में ट्यूब लाईट के तेज प्रकाश में रखा जैसे सुपर मार्किट इत्यादि में रखा जाता है—दूध बहुमूल्य विटामिन खो देता है। साथ-साथ इसमें पेपर के जैसा स्वाद आने लगता है। यही कारण है कि दूध की खपत कम होती जा रही है। यह अनुमान दक्षिण केरोलीना क्लेमसन विश्वविद्यालय में खोज से पता चलाया गया है।

दुकानों पर बेचे जाने वाले दूध के सेम्पल लिये जाने से पता चला कि प्लास्टिक के डिब्बे इत्यादियों में स्टोर किए हुए 75 प्रतिशत दूध का स्वाद बदल चुका था जबकि कागज के डिब्बों में स्टोर किये हुए दूध के केवल 2 प्रतिशत का ही स्वाद तबदील हुआ था।

इसके अतिरिक्त यह भी खोज हुई है कि तेज प्रकाश में प्लास्टिक में रखे दूध को 24 घंटे के भीतर-भीतर सारी विटामिन 'सी' नष्ट हो चुकी थी। साथ ही रीबोफ्लेविन भी घट गई थी। इसके विपरीत गत्ते के डिब्बों में स्टोर किये हुए दूध में नष्ट तत्व 'न' के बराबर ही थे।

जानजेन का विचार है कि दूध का स्वाद बदलने का कारण प्रकाश के कारण दूध के प्रोटीन पर प्रभाव हो सकता है।

प्र० : क्या कोई ऐसी धातु मोटर कार बनाने में प्रयुक्त होगी जिसमें डेन्ट या गड्डे न पड़ें ?

उ० : अगले चार या पांच वर्ष में ही यह संभव होगा कि फैक्ट्री से निकलने वाली मोटर कारों की बाडी ऐसी धातु की हो जिनमें बिलकुल जंग नहीं लगेगा, साथ ही गर्मी से भी इन्हें कुछ हानि नहीं पहुंचेगी—इसके अतिरिक्त छोटी मोटी टक्कर से भी इसकी बाडी में डेन्ट नहीं पड़ें। यह कारें लोहे की कारों के समान मजबूत होंगी पर होंगी एक दम हल्की जिसके कारण इन की कार्य क्षमता बहुत बढ़ जायेगी।

यह चमत्कारी धातु या तत्व कारबन फाईबर तथा मैटरिक्स प्लासटिक के मिश्रण से तैयार किया जाता है। इसकी मजबूती का श्रेय फाईबर के अद्भुत गुणों, लो डेनसिटी, अधिक तनन शक्ति और कुछ लाभदायक मेलों, को मिलना है।

फाईबर के भीतर कारबन के मोलीक्यूल ऐसे सजे होते हैं। सबसे शक्तिशाली रसायनिक बन्धन इनकी धुरी के साथ एकत्रित होते हैं। फाईबर स्वयं ही प्लास्टिक में ऐसे दब जाते हैं कि यह मैटरिक्स की शक्ति को और बल प्रदान करेंगे। यदि फाईबरस का पोइंट एक ही दिशा में हो तो इनकी अलाईनमैंट के साथ-साथ अधिकतम शक्ति प्राप्त होती है।

कारबन फाईबर मिश्रित धातुओं का अभी से बहुत प्रचलन हो रहा है विशेषकर, वायुयान के पुर्जों, लगभग न टूटने वाली 'स्कीज' और टैनिस रैकेट बनाने में इसका प्रयोग किया जा रहा है। कम ईंधन से कार्यकुशल मोटर कारों के डिजाइनों की बनाने के लिए मोटर इन्डस्ट्री भी हल्की व मजबूत मोटर कार बनाने के कारबन फाईबर का प्रयोग आरम्भ कर रही है। सन् 1979 में फोर्ड मोटर कम्पनी ने ऐक्सपेरीमैंट के तौर पर एक माडल निकाला था जिसकी बाडी और चैसी के भाग कारबन फाईबर से बने थे। और इस हल्की कार में सफर उतना ही आरामदेह था जितना कि उसकी जैसी दूसरी भारी कारों में था।

फिर भी—एक बिशेष कमी 'कीमत' के कारण, कारबन फाईबर का भविष्य अधिक सुरक्षित नहीं समझा जाता क्योंकि यह फाईबर ऊंची कीमत के पैट्रोलियम प्रोडक्ट रेयन या पिच से उत्पन्न किया जाता है। मेटिरियल की कीमत लगभग 20डालर एक पाऊंड है जो स्टील से लगभग चार गुनी अधिक है।

शायद दक्षिणी केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ते—फू—चेन स्थिति बदलने में सफल हो जायें, वे कारबन फाईबर बनाने के अन्य साधनों की खोज कर रहे हैं। आरम्भिक खोज से कोयले को इसके लिए प्रयुक्त कर पाने की सम्भावना दिखाई दी है। मिश्रण एसफालटीन से बनाया जा सकेगा, यह एक ठोस काला बेकार तत्व है जो कोयले का तरल ईंधन बनाने में बचता है। 'चेन' ने पता लगाया है कि ऐसफालटीन से मैटरीक्स ही नहीं वरन् गर्म करने पर ग्रेफाईट का भी निर्माण किया जा सकता है जिससे मजबूत करने वाले फाईबर बनाये जा सकते हैं।

'चेन' का कहना है प्रयोगशाला में परिक्षण से कहा जा सकता है' ऐसफालटीन बढ़िया काम करता है। यदि अन्य परीक्षण भी सफल हो गये, तो शीघ्र ही कारबन फाईबर मिश्रण की कीमत स्टील के बराबर लाई जा सकेगी।

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

GET THEM RIGHT AWAY FIGHTING-T-SHIRTS FROM SUN

They're here now, a great new line in T-Shirts from SUN, the magazine that has always given you action. This is our Martial Arts T-Shirts series and each design is a breath-taking, super-charged affair.
You can order these mind-stopping T-Shirts by post or collect them personally from the SUN office in New Delhi. Each T-Shirt is Rs. 25/- only and those who would like them by mail should add Rs. 5/- for postage (i.e. send us Rs. 30/-).
We have following combinations to offer in 34" and 36" size, round neck

Design	Description	Code
1 DRAGON	Black on Red	D/BR
	Black on Yellow	D/BY
2 KUNG FU	Red on Yellow	KFU/RY
	Black on Yellow	KFU/BY
	Black on Blue	KFU/BB
	Black on Red	KFU/BR
3 TIGER CLAWS	Red on Yellow	TC/RY
	Black on Red	TC/BR
	Black on Blue	TC/BB
	Black on Yellow	TC/BY
4 SIDE KICK	Black on Red	KAR/BR
	Black on Yellow	KAR/BY
5 KARATE	White on Dark Blue	K/WB

5 KARATE

Write with your remittance to:

SUN MAIL ORDER DEPARTMENT
8-B BAHADURSHAH ZAFAR MARG NEW DELHI 110002.

NO VPP PLEASE!

Postal Orders/Demand Drafts to be drawn in favour of SUN PUBLICATIONS, and mailed to above address. Please indicate code number of the T-Shirt and the size you want when you order.

दीवाना कार्ड मोड़कर देखिये

दोनों तीरों को आपस में मिलाइये
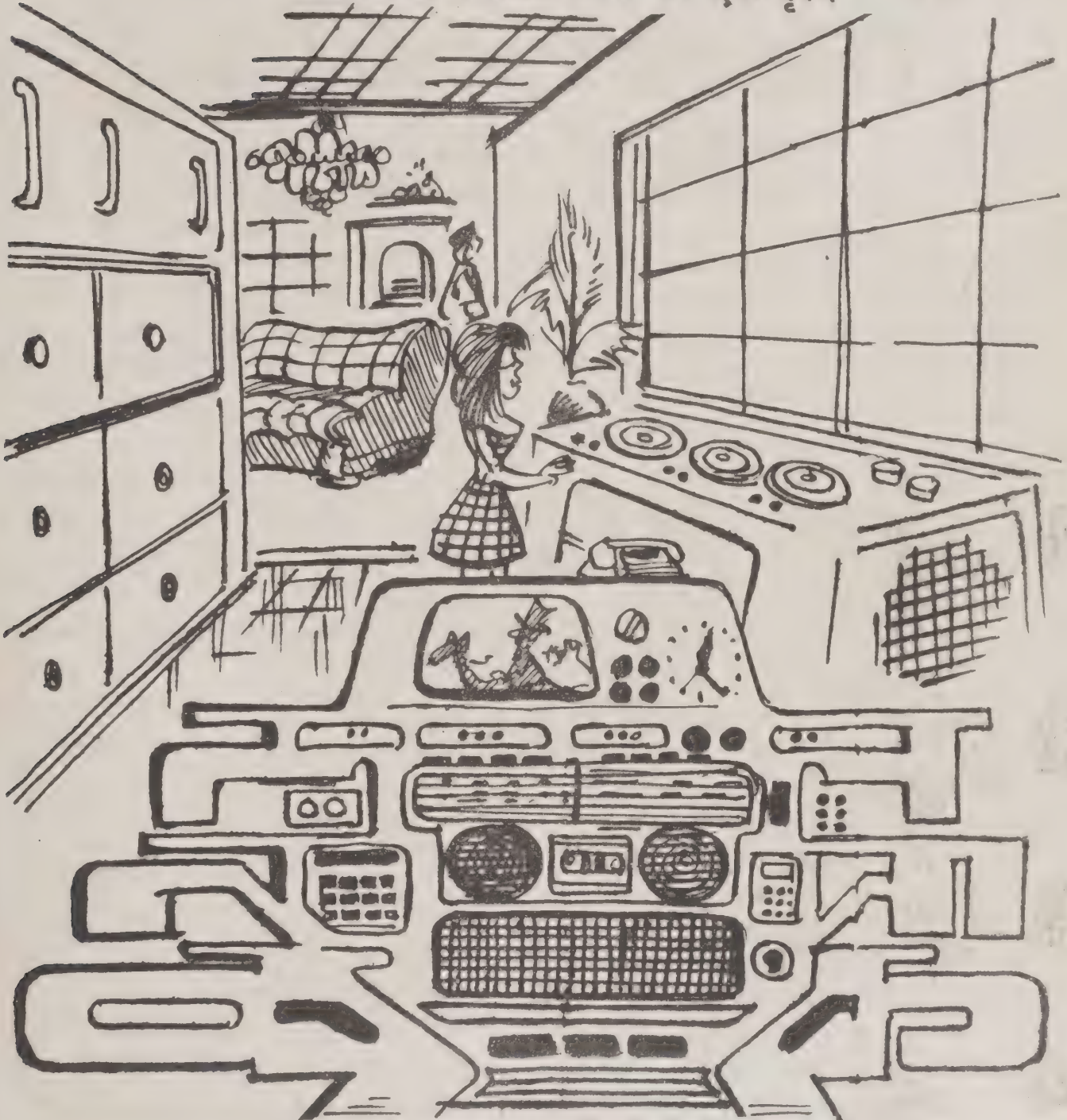
पश्चिम में, विशेषकर अमरीका में नारियों की सुविधा के लिए अब इतने उपकरण बन गए हैं कि गृहिणी का काम केवल बटन भर दबाना रह गया है। टी. वी., टेलिफोन व म्यूजिक के उपकरण तक उपलब्ध हैं। काटने, पकाने व धोने की मशीनों के इलावा। यह सब बाजार में आसानी से किश्तों पर उपलब्ध हैं। इन सबसे भी संतोष न हो तो एक और चीज आसानी से गृहिणी को मिलती हैं जो गृहिणी की सारी समस्यायें समाप्त कर देती है। वह क्या है? पृष्ठ मोड़कर देखें—
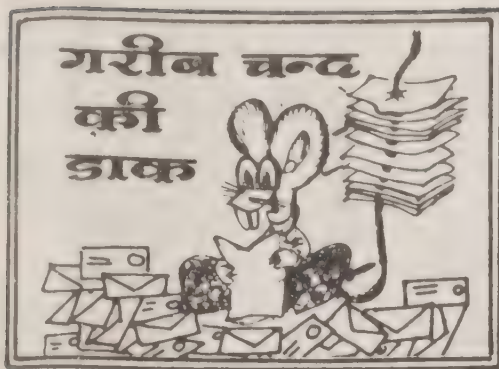
अरविन्द केवलानी 'आकाश', कटनी, (म. प्र.): आप बता सकते हैं कि क्या 'स्त्री' पुरुष को प्रकृति द्वारा प्राप्त वरदान है ?

उ० : दोनों एक दूसरे के लिए वरदान हैं और साथ ही साथ एक दूसरे के लिए सिरदर्द और मुसीबतों की जड़ भी हैं।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया, मण्डला : गरीबचन्द जी अगर गरीबी नाम की कोई चीज न होती तो—

उ० : तो फिर अमीरी भी न होती और गरीबी अमीरी न होती तो हिन्दी फिल्में यतीम होकर फेड आऊट हो जाती

प्र०:गरीब चन्द जी,क्या जीने के लिए अमीर होना जरूरी है ?

उ० : महज जीने के लिए तो नहीं, हां, ठाट से जीना हो तो अमीर होना पड़ता है।

प्र० : गरीबचन्द जी पति पत्नी से कब ऊब जाता है ?

उ० : जब पति को पता लग जाता है कि पत्नी फिल्मी हीरोइनों की तरह हर फ्रेम में नया भेष बदल कर नहीं आती है।

मनवनी चुघ आशु, फिरोजपुर कालोनी : गरीब चंद जी, अगर आपके पास दौलत आ जाये तो फिर भी आप हमारे प्रश्नों का उत्तर दिया करेंगे ?

उ०: आपके प्रश्न ही तो मेरी दौलत हैं—उनके उत्तर नहीं दूंगा तो गरीब नहीं रह जाऊंगा।

भगवान दास आहूजा : प्यार और दौलत में क्या अन्तर है ?

उ०: दोनों में एक ही अन्तर है प्यार का दीवाना प्रेमिका के घर चक्कर लगाता है और दौलत के दीवाने के घर चक्कर इन्कम टैक्स वाले लगाते हैं।

मनोहर मेवानी, अकोला : गरीब चंद जी भारत में खेलों में राजनीति की वजह से जो पक्षपाती चयन होता है, आपके ख्याल में यह कहां तक उचित है ?

उ०: यह उचित तभी माना जा सकता है जब हम खुले आम मान लें कि भारत में खेलों का भट्टा बिठाना हमारी पंचवर्षीय योजना का अंग है।

नवनीत तलवार, जयपुर : मेहनती आलसी कब बन जाता है ?

उ०: जब मेहनत इतना फल देती है कि उन फलों को खाने के लिए आराम से टांगें पसार कर बैठना पड़े।

सुखराम सिंह तोमर,उज्जैन, (म. प्र.) : सिलबिल पिलपिल के साथ इतने दिनों रहकर आपने क्या सीखा ?

उ० : सब कुछ सीखा जिन्होंने और न सीखी होशियारी, सच है दुनिया वालो, वह हैं अनाड़ी।

प्र०: आदमी अपने आप से कब नफरत करने लगता है ?

उ०: जब अपने बारे में भी वही सोचने लगता है जो दूसरे उसके बारे में सोचते हैं।
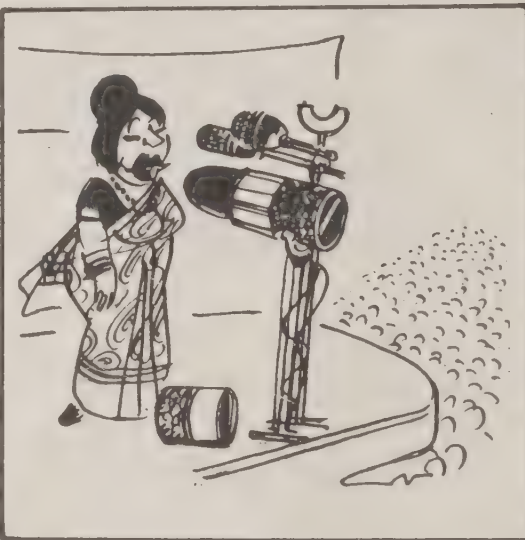
तजेन्द्र भाटिया, विजय नगर, दिल्ली : गरीब चन्द जी, आपकी नजर में पैसा बड़ा है या इज्जत ?

उ०: जब लोग देख रहे हों तो इज्जत बड़ी है और कोई न देख रहा हो तो पैसा बड़ा है, इज्जत जाए भाड़ में।

श्याम ममनानी, अकोला : गरीब चंद जी, कहते हैं कि दुनिया गोल है। मगर दिखाई तो गोल देती नहीं है ?

उ०: आप अपनी जगह से खड़े-खड़े देख रहे हैं न, अंतरिक्ष में जाकर वहां से देखेंगे तो गोल दिखाई देगी। आप शायद बहुत सीधे-साधे हैं। कभी-कभी अपने दिमाग के सातवें आसमान पर भी चढ़कर देखिए।

प्र० आजकल दिन-ब-दिन घासलेट के भाव में वृद्धि का 'क्या कारण' है। घासलेट 'हर' वर्ग के लिए जरूरी है ?

उ०: हमारे देश में आजकल हर व्यक्ति की अक्ल घास चर रही है इसीलिए घासलेट के भाव डुप्लीकेट, ट्रिप्लीकेट और क्वाड्रप्लीकेट हो रहे हैं।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर : समय का इंतजार कब तक करना चाहिए ?

उ०: मरते दम तक अच्छे समय का इंतजार करना नहीं छोड़ना चाहिए। जो मजा इंतजार में देखा वह न वस्लेयार में—

रंजना, मीना निगम, हापुड़ : गरीब चन्द जी, हमारे घर की एक चुहिया आपका पता पूछ रही थी। क्या मैं आपका पता बता दूं ?

उ०:पहले आप अपनी फोटो के साथ चुहिया का फोटो भी भेजें, देखूं, हुलिया पता पूछने वाली का और बताने वालों का।

गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली-49 : लोग घर की आरती छोड़कर महफिल की शमां जलाना क्यों पसन्द करते हैं ?

उ०: घर की आरती और महफिल की शमां में फर्क है। घर वाली ब्लैक एण्ड व्हाईट स्क्रीन है और महफिल की शमां 70 एम. एम. सिनेमा स्कोप टैक्नीकलर स्क्रीन प्ले है।

योगराज अग्रवाल, डीमापुर, नागालैंड : आप बड़े 'वो' हैं।

उ०: बड़े तो आप हैं मैं तो आपका छोटा भाई हूं। मेरा साईज भी तो आपका 1/200 होगा

प्र०: आपने 'चाचा बातूनी' को आखिर कहां खदेड़ दिया ?

उ०: चाचा बातूनी को बुढ़ापे में इश्क का रोग चर्राया है। वह आज कल चाची के सवालों और जिरह का जवाब देने से ही फुरसत नहीं पाते।

प्र०: हमको तुमसे हो गया प्यार क्या करें बोलो तो जियें, बोलो तो मर जायें।

उ०: हम क्या बोलें ? जिओ कहेंगे तो उसी बहाने पैसे उधार मांगोगे और मरो कहें तो मर्डर का चार्ज लगेगा।

गरीब चन्द की डाक

दीवाना पाक्षिक
८ बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

सैयद जाफरी की खोसला से भेंट—

शतरंज के खिलाड़ी में दिलखुश कर देने वाला अभिनय करने वाले जाफरी साहब को कौन भुला सकता है।

सैयद जाफरी के पिता इन्डियन मेडिकल सर्विस में थे। इस कारण इनका बचपन एक शहर से दूसरे शहर तबादलों पर जाते ही बीता, स्कूली तालीम इन्होंने तरह-तरह के स्कूलों में पाई जैसे ब्रिटिश स्कूल, एक उर्दू मदरसा, एक सरकारी स्कूल जहां पढ़ाई हिन्दी में होती थी तथा अन्त में सेंट जार्ज कालिज जहां क्रिसचन पादरी शिक्षा देते थे। और उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की इलाहबाद युनिवर्सिटी में जिसे भारत का केम्ब्रिज समझा जाता है—यहां से उन्होंने इतिहास में एम. ए. की डिग्री हासिल की।

यहां तक तो चलता रहा। पिता शिक्षा का खर्च बर्दाशत कर ही रहे थे। उन्होंने सोचा था वे पढ़ लिख कर या तो इंडियन सिविल सर्विस में या डिप्लोमैटिक कोर में काम कर लेगा। परन्तु सैयद के विचार कुछ और ही थे वे अभिनेता बनना चाहते थे जिसे जानकर उनके माता पिता को खासा धक्का लगा था।

तो इस विचार को लेकर उन्होंने दिल्ली के थियेटर की स्थापना आरम्भ की, उसके लिए उन्होंने उसके जैसे विचार के व्यक्तियों को एकत्रित करना आरम्भ किया जिनमें एकLAMDA में ट्रेनिंग प्राप्त किए हुए थे तो एक दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र थे और सैन्ट्रल स्कूल आफ स्पीच और ड्रामा में भी शिक्षित थे।

सैयद अपने लिए कुछ स्कैच लिखते थे और उसे 36 अलग-अलग आवाजों में प्रैक्टिस किया करते थे जल्दी ही वे जान गये कि दिल्ली में इसकी सीमा थी। ज्यादा समय तक यही कार्य कर नहीं चल सकता था क्योंकि सात दिन के अन्दर ही यहां की अंग्रेजी बोलने वाली जनता थियेटर देख चुकती थी इस कारण उन्होंने आगे बढ़ने का विचार कर रायल अकेडमी आफ ड्रेमेटिक आर्ट आफ लंदन में दाखिला ले लिया। वहां से वे फुलब्राईट स्कोलर शिप पर वाशिंगटन पहुंच गए। फिर उन्होंने अमरीका में 32 शहरों का दौरा किया।

फिर उन्होंने विवाह कर लिया, उन्होंने अपना हनीमून एक आर्टिस्ट के घर की मियानी को कमरा बना कर बिताया। कुछ समय तक इन्होंने जीविका के लिये एक टिकट बेचने वाली फर्म में काम किया—किस्मत ने पलटा खाया और उन्हें एक्टरस स्टूडियो में दाखिला मिला—क्योंकि इस रोल का अभिनय करने वाला कलाकार अचानक बीमार हो गया। कहना न होगा यह सैयद के लिए बड़ा चैलेन्ज था—वह वहां काम नहीं करते थे उन्हें रोल के विषय में भी कुछ मालूम नहीं था, उन्हें सब समझने के लिए कुछ ही घंटे का समय मिला था—पर वे हिट रहे।'

इसके बाद ब्रोडवे की 'पासेंज टू इंडिया' बनी जिसमें एरिक पोर्टर और ग्लेडीज कपूर भी थे। फिर ब्रिटेन का एक ट्रिप एक हिन्दू बने अमरीकन द्वारा एक प्ले में भगवान ब्रह्मा का रोल अदा करने गए, वहां उन्होंने दो दिन तक फेल हुए ड्रामे में खेले।

फिर जीविका चलाने का प्रश्न उठा—उन्होंने कुछ दिन सोड़ा बेचने का काम किया अपनी थोड़ी सी आमदनी को बढ़ाने के लिए वे अमरीका के डाउनटाउन क्षेत्रों में मोलियर के नाटकों का अभिनय सड़कों पर किया करते थे।

क्रिशना शाह की वेस्ट एन्ड प्रोडक्शन में रोल की आफर मिलने पर ये लन्दन आ गए यहाँ आकर उन्होंने म्यूजिक की ओर ध्यान लगाया—और 'कामसूत्र' के सब गाने रिकार्ड करवाये—गानों की एलबम सबको बहुत पसंद आई। 'टाईम' मेगजीन ने इसे सबसे बढ़िया वर्ड रिकार्ड्स कहकर प्रशंसा की। लन्दन में ही इन्होंने बी. बी. सी. की वर्ल्ड सर्विस के लिए उर्दू और हिन्दी के नाटक लिखे। निर्देशित किये और खेले। 'दी पम्प' नामक नाटक में इन्होंने सर माईकल रेडग्रेट के साथ सात मित्र किरदार
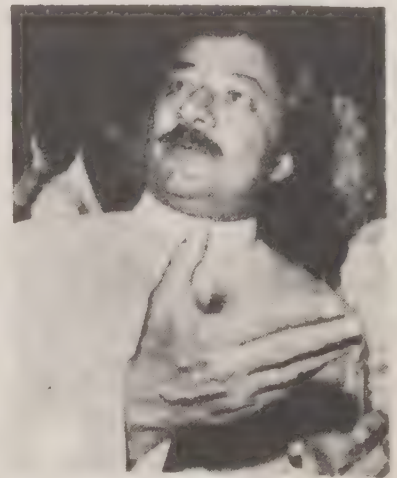
एक ही नाटक में खेल कर 1972 में माना हुआ 'इटालिया प्राईज' जीता, जो सबसे उत्तम रेडियो नाटक को प्रदान किया जाता है।

फिर इन्हें जोन ह्यूस्टन के द मैन हू वुड बी ए किंग में एक गुरखे बिलीफिश की रोल के लिए मान्यता प्राप्त की और तब बिल बी कान्सपीरेसी में मुखर्जी बने। शायद सैयद पहले एशियन हैं जिन्हें माईकल केम सीन कोनरीज, सर रिचर्ड ऐहनब्रो, सर जान गोलगुड लेजली ऐन डाऊन, ट्रेवर हार्वड और सीलिया जानसन के साथ-साथ अभिनय करने का श्रेय प्राप्त है—

सैयद जाफरी की हिन्दी फिल्मों में दाखिला शतरज के खिलाड़ी में अभिनय से हुआ इस फिल्म में ही उन्हें फिल्म फेयर और फिल्म वर्ल्ड अवार्ड प्राप्त हुए।

एक बार अचानक सत्यजीत रे इन्हें सन 1972 के अक्तूबर में बेरूट एयर पोर्ट पर मिल गए, जैसे ही इन्होंने सत्यजीतरे को देखा ये उनके निकट पहुंचे और अपना परिचय देकर बोले 'वे उनकी फिल्म में काम करने के लिए अपनी दायीं बाँह तक दे सकते हैं। बात पुरानी हो गई—फिर जनवरी 1976 में, उन्हें सत्यजीत रे की फिल्म में काम करने का बुलावा आया तो हैरान हो गए। 8 जनवरी 1976—जो इनका जन्म दिवस भी था वह दिन था।

फिर आये चश्मे बद्दूर—ऐहनब्रो का गांधी बिट्टू का 'स्टार' और शेखर का 'मासूम' और लो यह हमारे पिछवाड़े का नेता जिसने संसार की बड़ी से बड़ी हस्ती के साथ काम किया है हिन्दी फिल्मों में जम गए—और शायद खुश भी हैं अपने ही देश वापिस पहुंचकर—

और उनका भारतीय संस्कृति के बारे में क्या विचार है अति सुन्दर है विशेषकर भारतीय

स्त्रियां।सैयद जाफरी की सदा ही से आदमियों की बनिस्बत औरतों से अधिक पटती है,कहते हैं मैंने पहला प्यार चार वर्ष की आयु में तीन साल की रसीदा से किया था। फिर 12 साल का होकर 'फरहत' नाम की लड़की से किया था आज की सलमा आगा जैसी लगती थी।

मुझे डर सिर्फ अपनी बीवी जेनिफर का है जिसे हमारे भारत में सैटल होने का विचार नहीं आ रहा—और मैं भी दूसरा तलाक नहीं चाहता।

देव के परिवार का नया सितारा—

एक समय था जब नफीसा अली जरनलिस्टों द्वारा फोटो खिचवाकर स्वयं को फिल्मी सीन में दाखिल होने के प्रयास में थी—परन्तु अब इस काम में जुटी है, देवीना आनन्द देवानन्द की बेटी। उसे कुछ काम मिल भी गया है फोटो और लेख, फिल्मी मेगजीन्स में।

देवीना को बहुत सी फिल्मों में काम करने की आफर मिली है शायद कारण है उसका स्वयं का बना बनाया फिल्मी स्टेटस।

अमिताभ की जान बचाने वाला 786 'दीवार' फिल्म में अमिताभ ने 786 का बि[ल्ला] पहन रखा था।हर बार जब उस पर गो[ली] चली, गोली बिल्ले पर ही लगी थी-मनमो[हन] देसाई की कुली में भी हीरो ने 786 का बिल्ला पहना था। मुल्ला का कहना है इस[लाम] में 786 बड़ा ही पवित्र नम्बर है इसी का[रण] वास्तविक जीवन में भी कुली के हादसे के [समय] अमिताभ के जीवन की 786 ने रक्षा की है।

गरमा गरम गालियां-कहना न होगा बिगड़े शहजादे संजय को कोई उसके जोड़ का मिला। यह था 'मेरा फैसला' के दक्षिणी निर्देशक।

आदत के अनुसार संजय सैट पर सुबह की शिफ्ट के लिए दोपहर तीन बजे पधारे। अपनी खुले बटन की कमीज दिखाते अपने कुछ चमचों के साथ। निर्देशक ने तामिल में कुछ गरमागरम गालियां दीं और उस दिन की शूटिंग पैक करने का हुक्म दे दिया।

अगली सुबह युनिट के प्रोडक्शन कन्ट्रोलर ठीक 6 बजे अलार्म घड़ी लेकर संजय के बैडरूम में पहुंच गए और संजय को तैयार कर ठीक 9 बजे सैट पर घसीट लाये जहां पहुंच संजय ने बाथरूम में रोकर अपने दिल की भड़ास निकाली। उसके बाद बिगड़े दिल संजय कभी 'मेरा फैसला' के सैट पर देर से नहीं पहुंचे।

गुंजु पाठ राजेश को—कोई कुछ भी कहे राजेश खन्ना भाषायें सीखने मे माहिर हैं। पर शर्त है टीचर कोई हिरोईन या गर्लफ्रेन्ड होनी चाहिए, शर्मिला के करीबी के समय में राजेश ने कामचलाऊ बंगाली सीख ली थी, परन्तु आजकल तो उन्होंने बहुत बढ़िया गुजराती सीख ली है, टीना मुनीम से बातचीत जो करनी है।

याद आता है 'आनन्द' का वह सीन जिसमें राजेश ने हीरोईन से कहा था कि अगले जन्म में बात करने के लिए वह गुजराती सीख लेगा। पर लगता है, वह अपना वादा इसी जन्म में पूरा कर रहे है। गुंजु टीना मुनीम से बात करने के लिए गुजराती सीख रहे है।

कुछ दिन पहले उसने अपनी प्यारी ब[ेटी] 'ईशा के लिए कुछ कीमती खिलौने उ[...] खरीदे—पर दुकानदार को हेमा के साथ [...] तस्वीरों के सिवा कुछ नहीं मिला अभी त[क] उसे क्या हो गया है—सौतेले लड़के 'दि[...] के गुस्से के इजहार या पति धर्म का नि[...] बोतल का साथ या फिर ईशा के 'दि[...] सरनेम न मिलने का दुःख।

हेमा को क्या परेशानी है :—

हेमा को क्या हो गया है? आखिर वह उधार मंडी में अपनी बदनामी क्यों करवा रही है इस तरह? वह दिन दूर नहीं जब उसे स्वयं अपना दिवाला निकालना पड़ेगा। उसके अधिकतर चैक वापिस हो रहे हैं, उसकी बदनामी कर रहे हैं। उसकी अपनी फिल्म 'सहारा' का ही काम धीमा नहीं पड़ा वरन् उसके घर के नौकर चाकरों को भी वक्त पर तनख्वाह नहीं मिल रही।

दीवाने बैनिफिट मैच

आपने प्राय: देखा होगा कि भूतपूर्व क्रिकेटरों के लिए बैनिफिट मैच होते रहते हैं जिसमें विश्व के जाने माने क्रिकेटर भाग लेते हैं, फिल्म स्टार भी भाग लेते हैं। मैच से हुई आय खर्चा काट कर उसे दे दी जाती है जिसके लिए बैनिफिट मैच किया जा रहा हो। इससे उस भूतपूर्व खिलाड़ी को आर्थिक मदद मिलती है। जीवन के दूसरे व्यवसाइयों के लिये भी ऐसे बैनिफिट मैचों का आयोजन किया जाना चाहिए। कुछ ढीली-ढाली रूपरेखा हम पेश कर रहे हैं। आखिर बैनिफिट मैचों का ठेका क्या क्रिकेटरों ने ही ले रखा है। दूसरे लोगों की भी भलाई होनी चाहिये। हमारा आखिरी लक्ष्य तो समाजवादी समाज की रचना करना है जहां सबको बराबर अवसर और बराबर के लाभ मिलें—

भूतपूर्व चोर बैनिफिट मैच

यह मैच शहर की दो पुलिस चौकियों के बीच फुटबाल का होगा। गोल पोस्ट की जगह दीवार में सेंध मार कर गोल बनाया हुआ होगा।

भूतपूर्व सिनेमा टिकट ब्लैकिया बैनिफिट मैच

इस मैच में फिल्म स्टारों के बीच कुश्तियों के मुकाबले रखे जायें और टिकट ब्लैक के रेट के उल्टे हिसाब से बेचे जायें।

भूतपूर्व बेकार बैनिफिट मैच

यह मैच उस उद्यमी की सहायता के लिए होगा जिसे बैंकों से लोन न मिलने के कारण बेकार रह जाना पड़ा। राष्ट्रीयकृत बैंकों के लोन सैक्शन के दो अफसरों के बीच यह मैच होगा। दोनों को एक ही लोन ऐप्लीकेशन की दो प्रतियां दी जायेंगी। निर्धारित समय में जो लोन रिजेक्ट करने के लिए अधिक से अधिक कारण ढूंढ सके और एप्लीकेशन में गलतियां ढूंढ सके वही विजयी माना जाये।

भूतपूर्व वित्तमंत्री बैनिफिट मैच
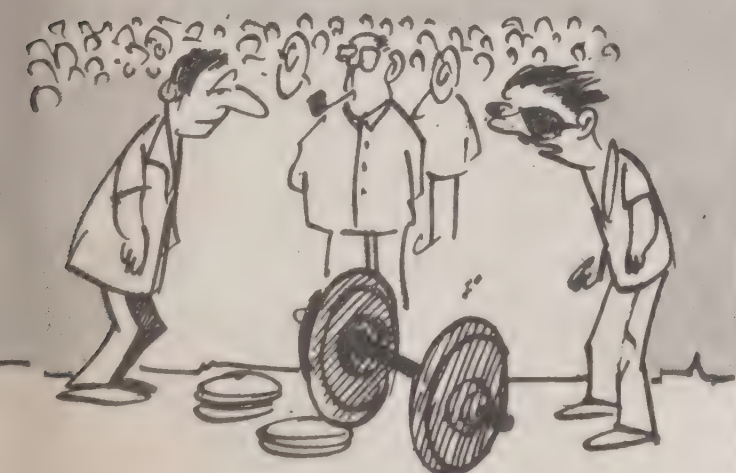
इस मैच में शहर के दो मशहूर जेबकतरों के बीच वेट लिफ्टिंग का मुकाबला कराया जाये।

भूतपूर्व नाकाम प्रेमी बैनिफिट मैच

यह मैच फुटवाल का होगा । दोनों टीमों के कप्तान नाकाम कप्तान सुनील गावस्कर और जफर इकबाल होंगे ।

भूतपूर्व बस ड्राइवर बैनिफिट मैच

यह मैच बस स्टाप पर दो दफ्तर में काम करने वाली महिलाओं के बीच स्वैटर बुनने का होगा । आखिर बस की इंतजारी करते उन्होंने यही तो किया था ।

यह मैच शहर के मशहूर सैलूनों के दो नाइयों के बीच होगा । मुकाबले में दो बराबर बाल वाले व्यक्तियों के सिर सफाचट मूंडना होगा ।

भूतपूर्व वेटर बैनिफिट मैच

इस मैच में दो घोंघों के बीच सौ मीटर लम्बी रेस होगी । शर्तों द्वारा जीते पैसे वेटर को मैच की आय के रूप में दिये जायेंगे ।

भूतपूर्व झगड़ालू पति-पत्नी बैनिफिट मैच

यह मैच दो प्रसिद्ध व्यक्तियों के कुत्ते और बिल्ली के बीच लड़ाई के रूप में होगा । मैच इन्डोर स्टेडियम में होगा ।

भूतपूर्व लाला बैनिफिट मैच

इस मैच में दो मशहूर कसाइयों में मरे हुए बकरों की खाल उतारने की प्रतियोगिता होगी । (लाला भी तो ग्राहकों की खाल उतारा करता था)।
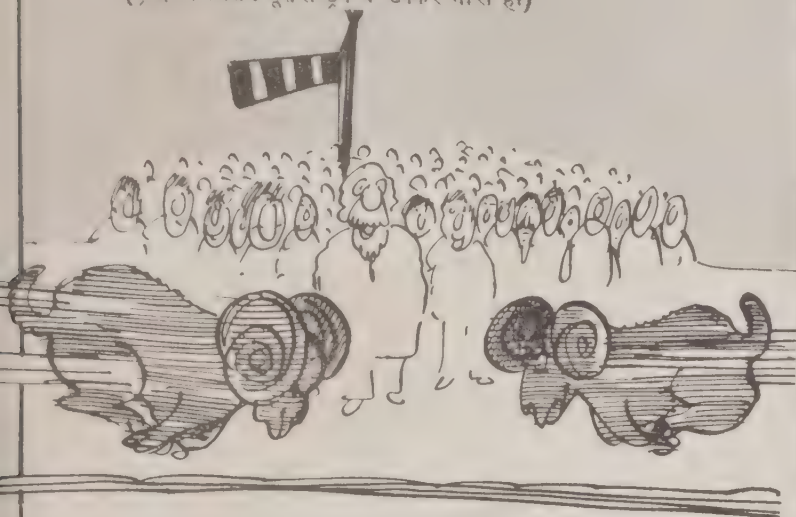
यह मैच दो मेढ़ों में लड़ाई का होगा (सिर टकराने का)।

भूतपूर्व इन्जीनियर बैनिफिट मैच
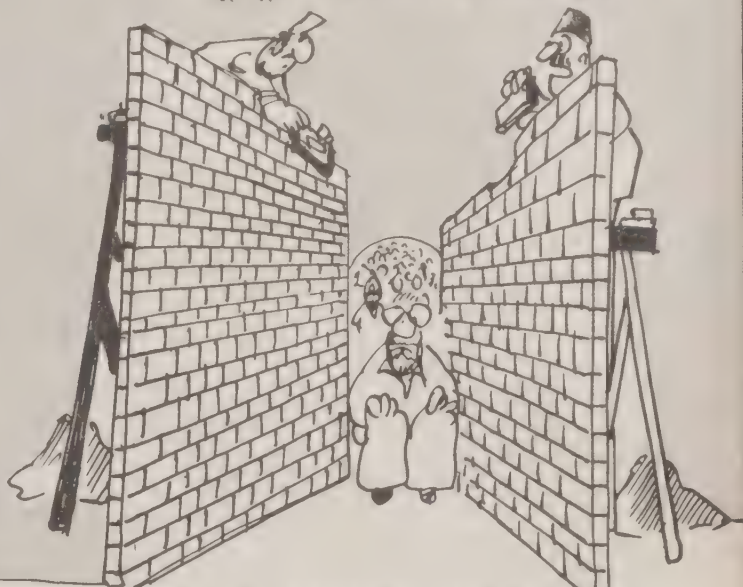
इस प्रतियोगिता में दो सरकारी ठेकेदार बगैर सीमेंट के सूखी रेत से दीवार की चिनाई करेंगे जो अधिक ऊंची सूखी चिनाई कर पायेगा वह विजेता माना जायेगा।

जाहिर है कि यह मैच दो मुर्गों के बीच लड़ाई का होगा।

इस मैच में वर्तमान कवियों की दो टीमें एक-दूसरे पर जूते, चप्पल, टमाटर, आलू और अंडे फेंकेंगी।
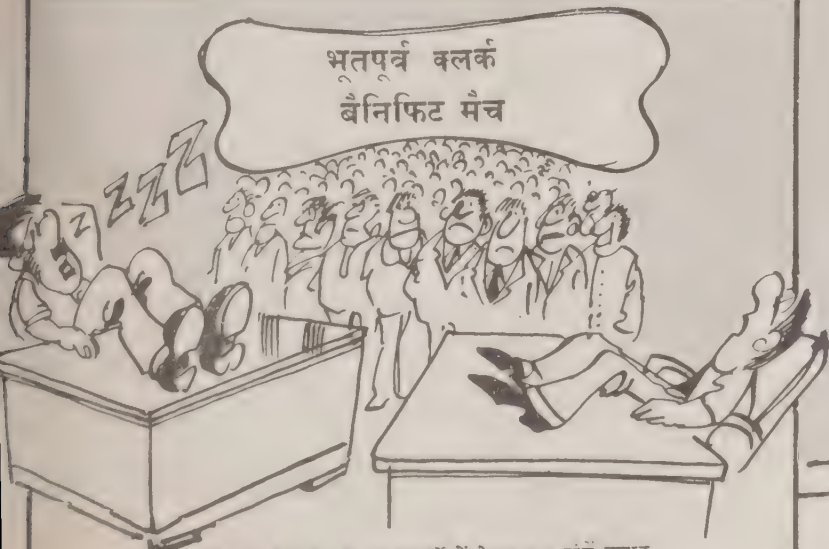
इस मैच में सैक्रेटेरियट के दो क्लर्कों में टेबल पर टांगें पसार कर सोने का कम्पीटिशन होगा।

इस मैच में सरकारी और विपक्ष में वर्तमान चोटी के नेता एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने का मुकाबला करेंगे।

इस मैच में दो कछुओं में १५० मीटर की रेस होगी। घोड़ों के रेसों की तरह बैटिंग करके अर्जित की आय पोस्टमैन को मिलेगी।

इस मैच में दो रद्दी वालों में रद्दी तोलते हुए डंडी मारने का मुकाबला होगा।

इस मैच में दो वर्तमान आशिकों में ठंडी आहें छोड़ने का मुकाबला होगा। देखा यह जायेगा कि कौन ज्यादा ठंडी और लम्बी आह छोड़ता है। माप-तौल वैज्ञानिक ढग से होगी।

इस मैच में दो टैक्सियों में निर्धारित लक्ष्य पर लम्बा रूट पकड़ पहुंचने की प्रतियोगिता होगी। जो सवारी लेकर अधिक लम्बे रूट से पहुंचेगा वही जीता।

इस मैच में राज्य विधान सभा के संतुष्ट और असंतुष्ट गुटों में पतंगबाजी की प्रतियोगिता होगी।

इस मैच में दो मशहूर फरार कैदी जेल की दीवार फांदने में एक-दूसरे का मुकाबला करेंगे।

ताएक्वोन्डो
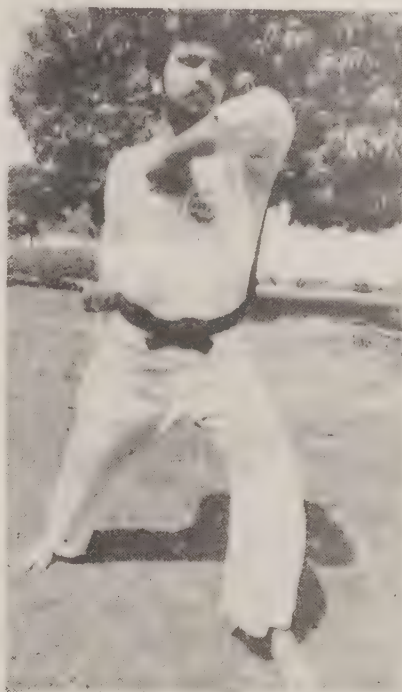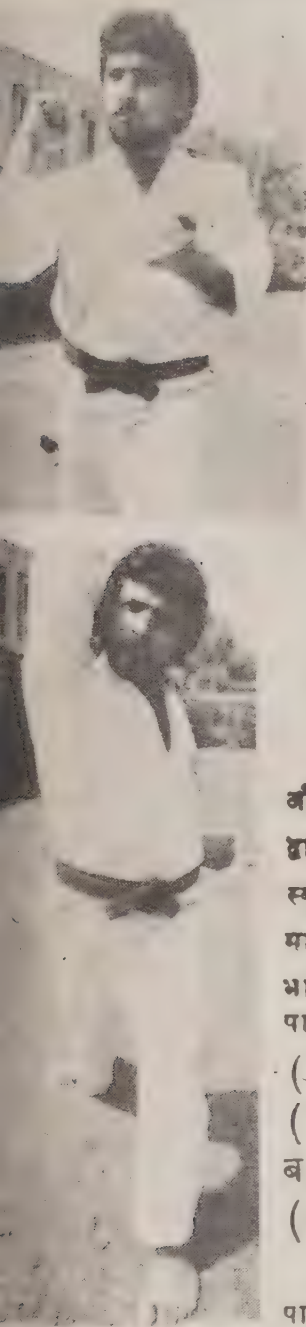
रोमांचक ताएक्वोन्डो पाठ का एक और भाग जो विख्यात जिमी जगतियानी द्वारा जिनके बहुत से मार्शल आर्टस के स्कूल देश भर में चल रहे हैं और जिन्हें मास्टर ब्रूस ली से इस आर्ट का कुछ भाग सीखने का सौभाग्य प्राप्त है।

पाठ 8

(१.) क्यू. पालकूप जिरुगी (कोहनी से प्रहार करना) चौंग बाई-सिओगी मुद्रा में खड़े हो (पाठ-१)

बायीं टांग को दायीं टांग के पास ले जाओ जैसे चौंग गुल सिओगी में किया जाता है (पाठ 3-4) साथ-साथ अपने बांयें हाथ को छाती के बायीं तरफ भीतर को मोड़ लो। कोहनी से अपने सामने वाले निशान पर प्रहार करो और पीछे हटो साथ ही दायें हाथ को कमर पर रखो। इस क्रिया के साथ शरीर को थोड़ा सा घुमा लो।

(2) इसी क्रिया को बायें हाथ को कमर पर रख कर दोहराओ, कंधे को ऊपर करके प्रहार करो। यह क्रिया दोनों बांयें और दाँयें हाथ से करो।

पायकूप जिरुगी करीब खड़े विद्रोही पर प्रहार करने के लिये अत्यन्त उपयोगी है।
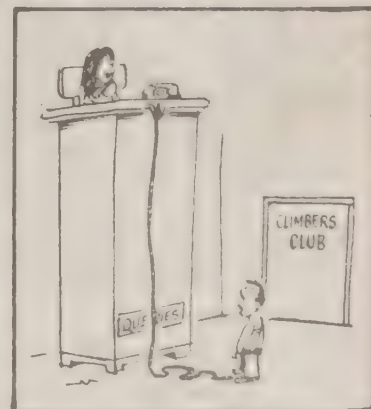
चलते-चलते

योगेन्द्र कुमार

'तुम्हारी तनखा कितनी है···?'

'···लगभग हजार-बारह सो बैठ जाती ··।'

'···अरे यार, हजार-सवा हजार तनखा ते हो और चेहरे पर चार बज रहे हैं···अरे आदमी हजार रूपए में से पाँच-छः सौ ने-पीने में खर्च किया करो तो कुछ सूरत निकल कर आएगी,···एकदम हीरो माफिक···'

'खर्च करता तो हूं यार···मगर कुछ नहीं होता···'

'ऐं !···काये में खर्च करते हो···?'

'···पीने में···!'

●

'हें···क्या कह रहे हो···तबियत ठीक नहीं हुई अभी तक ?···क्यों कल रात दवाई नहीं खाई थी क्या···?

'खायी थी डाक साब···'

'अरे भाई, दवाई के बाद जैसा मैंने कहा कि कुछ खा—पी लेना—कुछ खाया—पिया या नहीं—?'

'—डाक साब, वो परसों की तीन छटाँक बची रखी थी—दवाई खाने के बाद थोड़ी दाल मोठ के साथ मैंने पी ली—कडकी चल रही है डाक साब नहीं तो पीता तो मैं कम से कम एक अद्धा ही—!

●
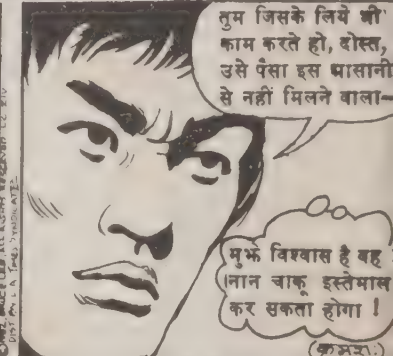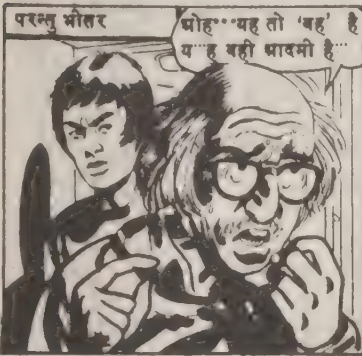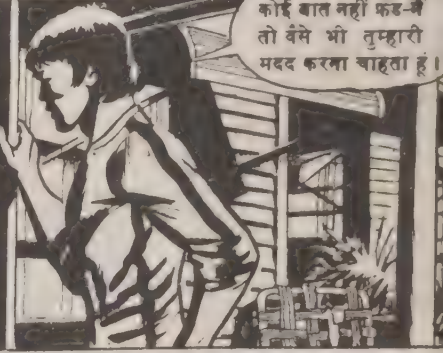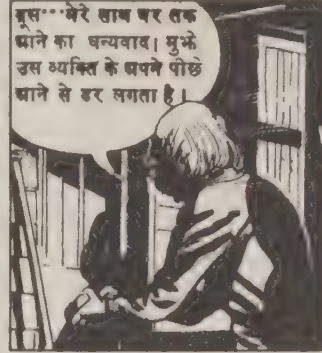
दीवाना वर्ग पहेली

20 रु. इनाम जीतिये

संकेत
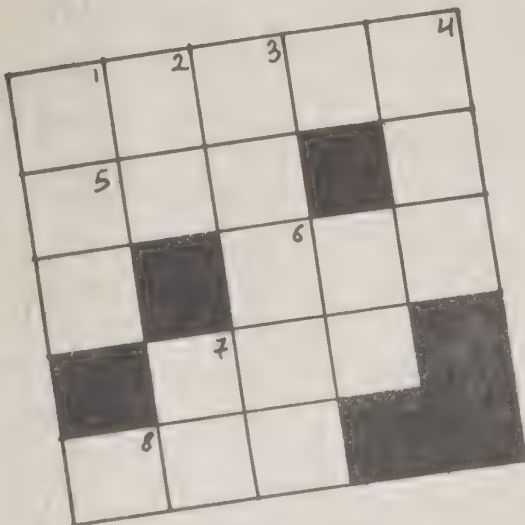
बायें से दायें

१. जाला का बार में आपको आम दुकानों पर न मिलने वाली चीज मिलेगी (५)

५. हरजाई से सर्दियों में काम आने वाली चीज़ मांग लो. (३)

६. दूध उत्पादक. (३)

७. एक द्वीप. (३)

८. शुरू व आखिर में चाबुक मारे जाने पर कोठी में रोना ? (३)

ऊपर से नीचे

१. लड़ाई में गाड़ी ले जाने की वजह ? (३)

२. मकड़ी की उल्टी बुनाई ? (२)

३. सिनेमा जिसे दो कम दो दर्जन बार देखने के बाद गुस्सा आता है ? (५)

४. सट्टा लगवाने वाला बहुमूल्य पत्थर ? (३)

७. रगड़ दिया उल्टे लड़ाई पर भेज ? (२)

अन्तिम तिथि—७-५-८३

नाम ——————————————

——————————————

पता ——————————————
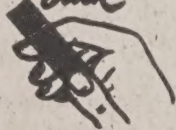
दीवाना के अंक ५ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का सही हल

चटकदार, हरामखोर, नौशेरवान-ए-आदिल मालेदार—आमलेट

विजेता : (निर्णय लाटरी द्वारा)—
रामनिवास शर्मा द्वारा—'हिमोदयोग' ई सी टी वी शो रूम माल रोड,
सोलन (हि० प्र०)

पृष्ठ ६८ से आगे

"परिणाम!" कमल ने एक ठंडी लम्बी सांस ली और मुस्कराकर बोला, "जिस दिन मैं अनुभव कर लूंगा कि अब उस लड़की से तेरी शादी हो जानी चाहिए उस दिन तुझे कहने की आवश्यकता नहीं रहेगी . . .मैं स्वयं ही उसके घर जाकर अपने दोस्त के लिए उसका हाथ मांग लूंगा।"

"लेकिन कितने दिन लगेंगे इस काम में?"

"यह तुझ पर निर्भर है, कितने दिनों में तू अपने को बदल पाएगा . . .लेकिन यह भी याद रख . . .मैं तेरी इस एक्टिंग में नहीं आऊंगा . . .मैं जब तक स्वयं सन्तुष्ट नहीं हो जाऊंगा, कोई कदम नहीं उठाऊंगा।"

"अच्छा, चल-चलें।" हरीश ने मोटर साइकिल स्टार्ट करते हुए कहा, "बैठ सीट पर।"

थोड़ी देर बाद मोटर साइकिल सड़क पर दौड़ रही थी . . .हरीश दांत भींचे हुए झुका बैठा था—और कमल पिछली सीट पर बैठा था . . .मोटर साइकिल हवा की तरह उड़ी चली जा रही थी

घर में कमल की मां पारो, बहन सरिता और पिता जगमोहन दास सभी मौजूद थे . . .कमल के साथ आज सुनीता उसका घर देखने आई थी। कमल सुनीता को तीनों से परिचित कराके अपने कमरे में कपड़े बदलने आ गया था। कपड़े बदलने और कुछ काम करने में लगभग आधा घंटा लग गया—फिर जब वह वापस मां के कमरे में पहुंचा तो सुनीता चाय पी चुकी थी . . .पिताजी अपने कमरे में चले गए थे . . .कमरे में सुनीता के पास अब केवल मां और सरिता थीं।

कमल को देखकर सुनीता ने चाय की प्याली खाली करके रख दी और रूमाल से होंठ पोंछती हुई बोली, "अच्छा कमल बाबू, अब मैं चलूंगी।"

"ओहो—इतनी जल्दी मिल लीं . . .क्षमा कीजिए मैं कपड़े ही बदलता रह गया।"

"कोई बात नहीं . . .अब घर तो देख ही लिया है . . .चाय पीने जरूर आया करूंगी . . .सरिता बहुत अच्छी चाय बनाती है और मांजी की बातें चाय से भी मीठी होती हैं।"

फिर वह उठी तो पारो और सरिता ने भी जल्दी से उठते हुए बार-बार सुनीता को फिर जरूर आने को कहा।

"चलिए . . ." कमल ने कहा, "मैं आपको गली के नुक्कड़ तक पहुंचा दूं।"

"अरे नहीं . . .क्यों कष्ट करते हैं?"

"बात यह है कि गली में एक कटखना कुत्ता रहता है जो भौंकता कम है और काटता अधिक है।"

"उई मां . . .!" सुनीता का रंग सफेद पड़ गया।

सरिता हंस पड़ी और पारो बोली, "क्यों डराता है बच्ची को? नहीं बेटी, यह झूठा है . . .गली में कोई कुत्ता नहीं है।"

सुनीता कमल की ओर देखकर मुस्कराई जो बड़े भोलेपन से एक आज्ञाकारी लड़के के समान खड़ा था। फिर जब वह चलने लगी तो पारो ने उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरा और सरिता ने उसका हाथ दबाकर फिर आने की प्रार्थना की—दोनों दरवाजे तक आई तो कमल ने सरिता से कहा, "तू हंडिया देख . . .दाल उबल जाएगी।"

"अरे बेटी . . .देख जल्दी से।" पारो ने कहा।

"मां तुम भी झट बन जाती हो . . .अभी दाल चढ़ाई तक तो है नहीं।"

पारो ने गुस्से में कमल को मारने को हाथ उठाया मगर कमल झट उछलकर उनकी पहुंच से परे हो गया . . .उसके चेहरे पर अब भी गहरी गम्भीरता थी। वह दोनों गली में कुछ दूर चले तो सुनीता ने हंसकर कहा, "आप तो छुपे रुस्तम निकले।"

"वह कैसे?"

"आप जितने जमीन से ऊपर हैं . . .उतने ही जमीन के अन्दर भी . . .।"

"यह स्वयं मेरे लिए एक नई खोज है . . .आपकी सूचना के लिए धन्यवाद।"

सुनीता धीरे से हंस पड़ी और बोली, "फिर आप कल आ रहे हैं ना?"

"आ नहीं रहा, कल आपके साथ चल रहा हूं . . .अभी तक चल रहा हूं . . .अभी तक मैं ने आपका घर नहीं देखा।"

"ओ—हां, मैं तो भूल ही गई थी।"

कमल ने सुनीता को गली के सिरे पर एक रिक्शा में बिठा दिया और जब तक रिक्शा नजर से ओझल नहीं हो गई वह कमल की ओर देखकर हाथ हिलाती रही . . .फिर कमल घर लौट आया। सरिता और मां अभी तक दहलीज पर खड़ी थीं . . .मां ने बड़े ललचाए हुए स्वर में कहा, "बड़ी सुन्दर और सुशील लड़की है।"

"हां भैया . . .मुझे तो बहुत अच्छी लगी।" सरिता जल्दी से बोली।

"अभी तो मैंने उससे प्रेम आरम्भ भी नहीं किया इसलिए इस घर में डोली आने का समय अभी काले कोसों दूर है।"

"क्या बक रहा है तू?" पारो ने गुस्से से कहा।

"और क्या कहूं? भगवान ने जाने क्या नियम बना रखा है कि इधर बेटा या भाई पांच फुट से ऊपर निकला उधर मां और बहन हर लड़की को ललचाई हुई नजरों से देखने लगीं जैसे बस वह इसी प्रतीक्षा में होगी कि झट डोली में सवार हो और पट घर में झाड़ू बरतन करती नजर आए।"

"हां-हां . . .जैसे तू तो उम्र भर शादी ही नहीं करेगा?"

"अरे मैं ने कब कहा कि ब्रह्मचारी रहने की सौगन्ध खाकर आकाश से उतरा हूं? मगर यह तो सोचा करो कि मेरे साथ नजर आने वाली हर लड़की तो तुम्हारी बहू और सरिता की भाभी नहीं बन सकती। वह बेचारी सीधी-सादी स्टूडेंट है—प्रोफेसर चावला ने मुझे एक शरीफ और जिम्मेदार आदमी समझकर उसे मेरे सुपुर्द किया है—अभी तक तो यह भी नहीं मालूम कि वह अभी खाली है या 'रिजर्वेशन' का लेबल लग चुका है।"

इतने में जगमोहन दास खांसते हुए बाहर निकले और कमल ने दांतों में जुबान दबा ली—जगमोहन मुंह ही मुंह में मुस्कराते हुए बाहर चले गए और कमल ने सरिता का कान पकड़कर कहा, "देख . . .यह किया ना तूने फ्राड।"

"अरे . . .मरी . . .।" सरिता चिल्लाई।

"बताया क्यों नहीं कि पिताजी कमरे में हैं?"

"मां—!" सरिता फिर चिल्लाई।

पारो ने देखा तो जल्दी से उसे मारने दौड़ीं और कमल ने झपट कर कमरे में घुसकर दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया—सरिता गुस्से से चिल्लाती हुई कह रही थी, "अच्छा . . .अब की बार मिलने दो . . .सुनीता को कह दूंगी कि भैया तुम्हारे ऊपर मर मिटे हैं।"

कमल ने कोई नोटिस नहीं लिया . . .वह बड़े सन्तोष से एक पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ गया।

कमल आराम से बैठा हुआ सुनीता को पढ़ा रहा था . . .उसके चेहरे से गहरी गम्भीरता टपक रही थी . . .इतने में कल्लू आया और चाय की प्याली उसकी ओर बढ़ाकर खड़ा हो गया। कमल के हाथों में पुस्तक थी। उसने कल्लू की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा, "किस बात की सजा मिली है तुम्हें भाई?"

"जी—!" कल्लू ने आश्चर्य से कहा।

"अरे भई, चाय मेज पर रख दो . . .खड़े-खड़े स्वयं भी थक जाओगे और हाथ भी।"

कल्लू झेंपी हुई हंसी के साथ जल्दी से प्याली रखकर बाहर निकल गया—सुनीता अनायास हंस पड़ी थी किन्तु कमल बिल्कुल गम्भीर था। अचानक सुनीता की हंसी को जैसे ब्रेक लग गए . . .कमल ने उसी गम्भीर मुद्रा में कहा, "गम्भीरता . . .मिस सुनीता . . .हंसने से पढ़ाई में मन नहीं लगता।"

सुनीता पढ़ने लगी थी . . .दूसरी ओर दूसरे कमरे में सुनीता की मां कृष्णा झांककर देख रही थीं . . .उनके होंठों पर एक ललचाई हुई-सी मुस्कराहट थी . . .होंठ खुले हुए थे . . .फिर वह सुनीता के पिता मेहरा साहब के कमरे में आईं जो एक फाइल पर झुके हुए थे। कदमों की आहट सुनकर उन्होंने फाइल पर से नजरें हटाए बिना ही कहा, "हरकिशन . . .फाइल पूरी हो गई?"

"ठीक कहते हैं आप . . .अब मैं आपकी अरदली जो बन गई।"

"आं . . ." मेहरा साहब ने चौंककर कहा, "ओहो . . .मैं समझा था . . .।"

"कि अपने ऑफिस में बैठा हूं। कृष्णा ने वाक्य पूरा कर दिया।

"डोंट डिस्टर्ब कृष्णा . . .मुझे अभी यह फाइल पूरी करनी है।"

"दफ्तरों की फाइलों में ही सिर खपाते रहोगे या घर की फाइल पर भी नजर डालोगे।"

"घर की फाइल . . .क्या मतलब?" (क्रमशः

आगामी अंक में पढ़िये

फिल्म पैरोडी
ये इश्क नहीं आसन
●
एडी चोटी का जोर
●
सिलबिल पिलपिल —रेडियम भूत
●
और हास्य व्यंग का विशेष आकर्षण
ऐरियल नामा
●
साथ में सभी स्थाई स्तम्भ

बोलते अक्षर

लघु व्यंग्य कथा

यथार्थवादी फिल्म

पूरन सरमा

फिल्मी हीरो अकेला बाग में गाना गा रहा था। स्वाभाविक था—हीरोइन आती और गाने लगती, लेकिन हुआ उल्टा। हीरो गाना गाता रहा और हीरोइन नहीं आ पाई। आखिर हीरो झुंझलाया और उसने दूसरा गाना प्रारम्भ कर दिया। इस गाने में नायिका को बेवफा व अन्य कई लांछनों से विभूषित किया गया था। अकस्मात इस गाने के समय हीरोइन आ गई और अपने को उस गीत में पाकर उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने हीरो की ओर त्यौरी चढ़ाकर देखा। तो हीरो गाना गाना भूल गया और प्रेमालाप के लिए नायिका की ओर बढ़ा। नायिका पीछे हटकर बोली—'तो यह गाना गाना था तुम्हें। तुमने तो कहा था कि मेरे प्यार में डूबे हुए ही तुम कोई मीत गाओगे।

हीरो सहमता हुआ बोला—'वह तो मैं गा चुका। यह गीत तो मुझे तुम्हारे यथासमय नहीं आने के कारण गाना पड़ा है। तुम्हें पता भी है यह फिल्म एकदम यथार्थवादी है।

हीरोइन के नथुने फूल गये, सांसें उखड़ने लगीं और वह चिल्लाई—'लेकिन यह कौन-सा यथार्थ है कि तुम इतनी जल्दी परेशान होकर गाली-गलौच भी करने लगो।'

चीख सुनकर हीरो, हीरोइन के पैरों में लोट गया। हीरोइन फिर चीखीं—'क्या बक रहे हो मीजी कर रहे हो, मैं कोई तुम्हारी मां ... बेवकूफ बालम उठो यथार्थवादी फिल्म में ... नहीं होता है।

अबकी बार हीरो रोने लगा। हीरो... माथा पीट कर बोली—'भाई, तुम मेरे ... भी नहीं हो। समझते क्यों नहीं तुम मेरे ... निक युग के चालबाज प्रेमी हो।'

'तो···तो मुझे करना क्या है?' हीरो... पूछा, नायिका बोली—'तुम्हें यथार्थवाद... निर्वाह के लिए अपनी प्रेमिका के साथ ... करना है। 'हीरो यथार्थवादी फिल्म की रिह... करने लगा।'

लक्ष्मण, बाम्बे फैन्सी स्टोर, मेन रोड बैरागढ़, 22 वर्ष, दीवाना पढ़ना, घूमना।
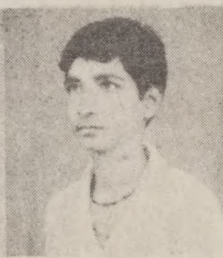
दिनेश प्र. जावरे, न्यू रेलवे कालोनी, सिवी, वर्धा, क्वा. नं० आर. बी. आई 78 एफ, 16 वर्ष

शर्मा मुनील, डी-1/10, दिग्जाम स्टाफ क्वार्टर एरोड्रम रोड, जामनगर, 15 वर्ष, पढ़ना।

गुमानसिंह राजपूत, बाजार नं. 3, म. नं. 80, फिरोजपुर कैंट, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।
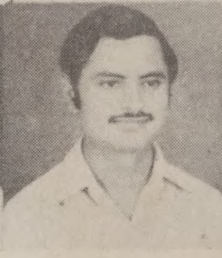
मनोहर नेमनानी, वाईन शाप, स्टेशन चौक, मुर्तिजापुर, 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।
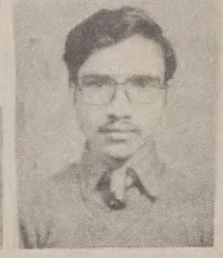
गिरीश बवाड़ी, 1797, लक्ष्मी बाई नगर, नई दिल्ली, 20 वर्ष, संगीत, मित्रता करना।

बी. अनिल कुमार, ... सेक्टर-8, राऊरकेला, उ... 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना

राजेन्द्र डंगोल, 8/245, मदनन, होल काठमांडो, नेपाल, 20 वर्ष, डिस्को डांस।

महावीर पारीक डागों का चौक बोकानेर, 18 वर्ष, दोस्ती करना, दीवाना पढ़ना।

गणेश कृष्ण स्वामी, गणेश वाड़ी गोवण्डी रोड, बम्बई-88, 15 वर्ष, क्रिकेट खेलना।
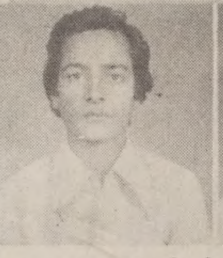
अकरम, म. नं. 89, रानी गार्डन शास्त्री नगर, दिल्ली, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।
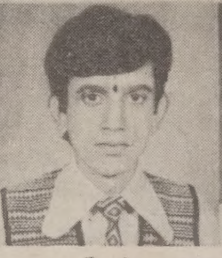
मुखराम सिंह तोमर, आनन्द गंज, झिरी, उज्जैन-456001, 22 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

टी. एस. बग्गा, 309, सबनीस प्लाट, अमरावती (महाराष्ट्र), 28 वर्ष, कहानी लिखना।

श्याम काजी रंजित, 2/2... टेकू नया मन्मार, काठम... नेपाल, 19 वर्ष, पत्र-मित्रता...

राजेन्द्र सिंह, 152, अग्रवाल, करहल रोड, मैनपुरी, 21 वर्ष, पत्रिकायें पढ़ना।
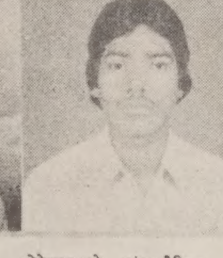
छोटेलाल खूटे, गांव कोड़िया, पो. फरसवानी, बिलासपुर, 16 वर्ष, फिल्म देखना।
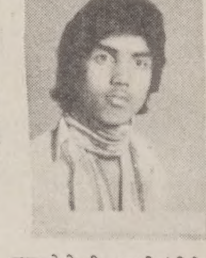
रामशक्षेत्री श्रीपुर पानी टंकी के पीछे वीरगंज नेपाल, 19 वर्ष, पत्र मित्रता करना।

जलील हवारी निराला, मिलन चौक, गहवा वीरगंज, नेपाल, 22 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

रजनीश जैन, द्वारा आर. के. जैन, जैन गली, टोहाना हिसार 11 वर्ष, टिकट संग्रह करना।
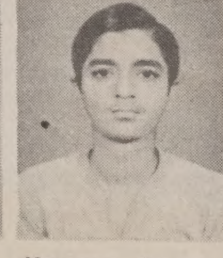
सोमेश अग्रवाल, गीता भवन, ऐशबाग, बाग लखनऊ, 14 वर्ष, फोटोग्राफी करना।

पंकज सैनी 'नास्तिक', 1... तम्बोली, बाखल, इन्दौर... वर्ष, कार्टून बनाना।

मुनील कुमार जोशी, नेपाल स्टेशन रक्सौल, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

दिलशाद अली, म. नं. 182, पुर्वा अब्दुल वाली शाहपीर गेट, मेरठ शहर, 18 वर्ष।

राहुल गोदीका, ए-24, तिलक नगर, विद्यालय मार्ग, जयपुर, 15 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।
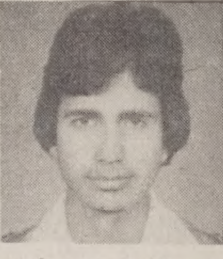
राजेन्द्र कुमार 'राजू' सेक्टर 8 म. नं. 1228 आर. के. पुरम, दिल्ली, 23 वर्ष, दीवाना।

रवीन्द्र सिंह, म. नं. 9/4262, अजीत नगर, दिल्ली, 13 वर्ष, टिकट संग्रह, पत्र-मित्रता।

तेज प्रेस, नई दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता